

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178392

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—68—11-1-68—2,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H 891.431**
9275

Accession No. **H3543**

Author **गवासी .**

Title **सैफुल मुलूक व बदीउल जमात . संश्ले.
राजकिशोर पाण्डेय एवं अकबरुद्दीन सिद्दीकी.**

This book should be returned on or before the date **1955**
last marked below.

ग़वासी

सैफुल मुत्तूक व बदीउल जमाल

सम्पादक :

गजकिशोर पागडेय

प्रबन्धरुद्दीन सिद्दीक्की

दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद

प्रकाशक :

विमला वाघे एम्. ए.

मन्त्री दक्खिनी प्रकाशन समिति
वशीरबाग रोड, हैदराबाद (दक्षिण.)

प्रथम संस्करण १००० जनवरी १९५५

मूल्य ५-०-० रुपया

मुद्रक : हिन्दी प्रेस

हिन्दी प्रचार सभा, हिन्दी भवन, नामपल्ली रोड, हैदराबाद (दक्षिण)

विवरण

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदवियाते उर्दू, हैदराबाद के संयुक्त प्रयत्नों से दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति की स्थापना ६ अक्टूबर १९५३ को हुई। समिति के पदाधिकारी तथा सदस्य निम्न प्रकार हैं :—

- | | | |
|---|---|-------|
| (१) डाक्टर बी. रामकृष्णगव | (मुख्य मन्त्री हैदराबाद राज्य) अध्यक्ष | |
| (२) श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त आई. ए. एस. | (शिक्षा सचिव, हैदराबाद राज्य) उपाध्यक्ष | |
| (३) डा० एस. एम. क़ादरी ज़ोर एम ए. पी. एच. डी. | (मन्त्री इदारे अदवियाते उर्दू) उपाध्यक्ष | |
| (४) श्रीमती विमल वाघे एम-ए. मन्त्री | | |
| (५) श्री श्रीगम शर्मा (मन्त्री हिन्दी प्रचार सभा) | (लेक्चरर गवर्नमेण्ट कॉलेज गुलबर्गा) | सदस्य |
| (६) श्री गोपालराव अपसिगीकर | (लेक्चरर लॉ कॉलेज, हैदराबाद) | ” |
| (७) श्री वंशीधर जी विद्यालङ्कार | (अध्यक्ष हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) | ” |
| (८) श्री राजकिशोर पाण्डेय एम-ए. | (लेक्चरर निज़ाम कॉलेज, हैदराबाद) | ” |
| (९) श्री जितेन्द्रनाथ वाघे बी-ए. एल-एल. बी. | (एडवोकेट, हाईकोर्ट, हैदराबाद) | ” |
| (१०) श्री श्रीनिवास लाहोटी | | ” |
| (११) प्रोफेसर अब्दुल क़ादर सरवरी एम ए. एल-एल. बी. | (अध्यक्ष उर्दू विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय) | ” |
| (१२) प्रोफेसर मजीद सिद्दीक्की एम-ए. एल एल. बी. | (प्रो. इतिहास और राजनीति, उस्मानिया विश्वविद्यालय) | ” |
| (१३) प्रोफेसर हुसेन अली ख़ाँ | (भूतपूर्व डीन, आर्ट्स कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय) | ” |
| (१४) श्री हमीदुद्दीन शाहद एम-ए. | (लेक्चरर चादरघाट कॉलेज) | ” |
| (१५) फज़लुर्रहमान एम ए. | (भूतपूर्व शिक्षा संचालक, हैदराबाद) | ” |

इस समिति ने निश्चय किया है : —

(१) प्रति वर्ष दक्खिनी की पाँच उत्कृष्ट रचनाएँ आवश्यक टिप्पणियों और सम्पादन के साथ नागरी लिपि में प्रकाशित की जाएँ ।

(२) दक्खिनी की जो उत्तम पुस्तकें अब तक फ़ारसी लिपि में नहीं छपीं उन्हें नागरी के साथ साथ फ़ारसी लिपि में भी छपाया जायेगा ।

(३) दक्खिनी के सम्बन्ध में जो लोग शोध-कार्य करना चाहते हैं उन्हें आवश्यक सहायता दी जायगी ।

समिति की प्रार्थना पर केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने साहित्य प्रकाशन के लिए ७५०० रु० की एक कालिक सहायता दी है । हैदराबाद राज्य ने समिति को ३५०० रु० वार्षिक की सहायता प्रदान की है । केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार की सहायता प्राप्त करने में राज्य के मुख्य मन्त्री डा० बी. रामकृष्णराव ने सहायता की ।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ने समिति को सहायता के रूप में ३००० रु० दिए हैं और इदारे अदवियाते उर्दू ने ७५० रु० । श्री लक्ष्मीनारायण जी गुप्त ने समिति की बैठकों का संचालन तथा समय समय पर समिति के कार्यों का उचित रूप से निर्देशन किया ।

समिति की पुस्तकें हिन्दी प्रेस, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद से प्रकाशित हो रही हैं । प्रेस के कार्यकर्ताओं ने पुस्तकों को समय पर प्रस्तुत करने में पूर्ण योग दिया है ।

इन पुस्तकों का सम्पादन कर के तथा आवश्यक सुझाव दे कर जिन लोगों ने सहायता पहुँचाई है—और जिन लोगों ने जिस रूप में भी सहयोग दिया उन सब के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।

बशीरबाग़ रोड
हैदराबाद (दक्षिण)

}

विमला वाघ्ने, मन्त्री
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति
मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११
१४-११-५४

दो शब्द

भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास में हिन्दी और उर्दू का विकास एक उल्लेखनीय अध्याय है। यह बात इसलिए नहीं कही गई है कि हिन्दी तथा उर्दू एक दूसरे के अत्यन्त निकट हैं—सच बात तो यह है कि व्याकरण के नियमों और दूसरी बहुत सी बातों में दोनों अभिन्न हैं—इन दोनों भाषाओं ने अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली तथा विन्यास से बहुत कुछ ग्रहण किया है। हिन्दी तथा उर्दू की एक मिली जुली पुरानी शैली दक्खिनी का निर्माण करती है। इसमें दक्षिणी भाषाओं ने भी अपना योग दिया है, हालांकि इन भाषाओं को एक दूसरे ही कुल की भाषा माना जाता है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के बाद यह जरूरी हो गया है कि भाषा-विज्ञान के विशेषज्ञ तथा विद्यार्थी हिन्दी भाषा और उसके विकास में योग देने वाले उन अन्य साधनों का वैज्ञानिक अध्ययन करें जिन के कारण हिन्दी का वर्तमान रूप प्राप्त हुआ है। १४ वीं शती से अब तक दक्खिनी शैली में जो साहित्य निर्मित हुआ वह इस अध्ययन में बहुत सहायक तथा मूल्यवान सिद्ध होगा।

वर्तमान हिन्दी तथा उर्दू के अध्ययन के लिए दक्खिनी साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है। इस तथ्य को हिन्दी और उर्दू के चिन्तक और विशेषज्ञ उत्तरोत्तर स्वीकार करते जा रहे हैं। हैदराबाद में दक्खिनी पुस्तकें बड़ी मात्रा में उपलब्ध हैं। विशेष कर आसफिया पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, इदारे अदवियाते उर्दू, सालारजंग पुस्तक संग्रहालय तथा बहुत से निजी संग्रहालयों में दक्खिनी साहित्य की अनेक हस्तलिखित पुस्तकें हैं। कुछ समय पूर्व स्वर्गीय नवाब सालारजंग बहादुर के संरक्षण में प्रसिद्ध साहित्य सेवियों की एक समिति ने हैदराबाद में प्राप्त दक्खिनी के महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थों को फ़ारसी लिपि में प्रकाशित करने का यत्न किया था। इस समिति की ओर से कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए जो इस समय सालारजंग सम्पत्ति की ट्रस्ट के पास भण्डार में हैं।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि “दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति” नाम से हैदराबाद में एक व्यवस्थित संगठन बना है जो इस काम को आगे बढ़ाएगा। इस संगठन का उद्देश्य है—भारत तथा भारत के बाहर अन्य देशों में उपलब्ध दक्खिनी पुस्तकों और हस्तलिखित ग्रन्थों का सर्वांगीण पर्यवेक्षण करना, दक्खिनी के सभी उपलब्ध मुद्रित तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह करते हुए एक अच्छे पुस्तकालय का निर्माण, दक्खिनी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का नागरी तथा फ़ारसी में प्रकाशन तथा यथा सम्भव दक्खिनी साहित्य का अनुसन्धान।

इस समिति को केन्द्रीय सरकार और हैदराबाद राज्य की सहायता प्राप्त है।

इस समय समिति ने हैदराबाद में उपलब्ध दक्खिनी की १५ अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तकों को नागरी लिपि में प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ किया है। इस कार्य में हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदवियाते उर्दू का सहयोग उपलब्ध है। दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति का निर्माण इन दोनों संस्थाओं के प्रतिनिधियों से हुआ है। जो साहित्य ग्रन्थ अब तक फ़ारसी लिपि में प्रकाशित नहीं हुए हैं उन्हें इस लिपि में भी प्रकाशित किया जाएगा।

इन हस्तलिखित पुस्तकों के प्रकाशन से हिन्दी तथा उर्दू गद्य के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ेगा तथा दोनों भाषाओं की शब्दावली में भी वृद्धि होगी। दक्खिनी साहित्य भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु उस की कुछ रचनाएँ साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यधिक उत्कृष्ट कोटि की हैं, अतः मुझे आशा है जहाँ समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकें अनुसन्धान करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुमूल्य सिद्ध होंगी, वहाँ उन से विशेषज्ञों और साहित्य प्रेमियों का मनोरंजन भी होगा।

मार्गशीर्ष कृ. ४० २०१४

१४-११-१५४

डाक्टर बी० रामकृष्णराव

अध्यक्ष

दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति

भूमिका

कुतुबशाही वंश :

सन् १५१८ में सुल्तान कुली ने गोलकुण्डा में कुतुबशाही राज्य की नींव डाली। सुल्तान कुली फ़ारस में हमदान का निवासी था और बहमनी बादशाहों के समय में भारतवर्ष आया था। सुल्तान मुहम्मदशाह चतुर्थ ने इसे अपना अंग-रक्षक नियुक्त किया। यह अपनी प्रतिभा और योग्यता के कारण उन्नति करता गया और कुछ दिनों में तेलंगाना प्रान्त का गवर्नर नियुक्त हुआ। यह सुल्तान मुहम्मदशाह का बड़ा विश्वासपात्र सरदार था। बहुत से प्रान्तीय गवर्नरों के स्वतन्त्र हो जाने पर भी इसने बहमनी साम्राज्य से सम्बन्ध विच्छेद नहीं किया किन्तु सन् १५१८ में बादशाह के व्यवहारों से तंग आकर स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और इस प्रकार गोलकुण्डा में कुतुबशाही राज्य की स्थापना हुई।

करीब १६६ वर्षों तक इस वंश के निम्नांकित सात बादशाहों ने गोलकुण्डा में शासन किया :—

- १ सुल्तान कुली (सन् १५१८ से १५४३ तक)
- २ जमशेद कुली कुतुबशाह (१५४३ से १५५० तक)
- ३ इब्राहीम कुली कुतुबशाह (१५५० से १५८० तक)
- ४ मुहम्मद कुली कुतुबशाह (१५८० से १६१२ तक)
- ५ मुहम्मद कुतुबशाह (१६१२ से १६२५ तक)
- ६ अब्दुल्ला कुतुबशाह (१६२५ से १६७२ तक)
- ७ अबुल हसन तानाशाह (१६७२ से १६८७ तक)

बीजापुर पर विजय प्राप्त करने के बाद सन् १६८७ में औरंगज़ेब ने गोलकुण्डा पर आक्रमण किया और आठ मास क़िले को घेरे पड़ा रहा। अन्त में तानाशाह बन्दी बना कर दौलताबाद भेज दिया गया और गोलकुण्डा साम्राज्य का अन्त हुआ।

बादशाहों का साहित्य-प्रेम :

गोलकुण्डा के बादशाहों के शासन काल में कला एवं साहित्य-विशेषतः दक्खिनी साहित्य की बड़ी उन्नति हुई। बहमनी बादशाहों की भाँति गोलकुण्डा के अधिकांश बादशाहों के शासन काल में दक्खिनी राज्य-भाषा के पद पर आसीन रही। कुतुबशाही वंश के शासकों में बहुत से बादशाह स्वयं बहुत अच्छे कवि थे एवं उन्होंने बहुत से कवियों एवं लेखकों को अपने राज्य में आश्रय दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि इस वंश के शासन काल के करीब पौने दो सौ वर्षों में साहित्य की बड़ी उन्नति हुई।

इस वंश का संस्थापक सुल्तान कुली यद्यपि फ़ारस का निवासी था और उसकी मातृभाषा फ़ारसी थी किन्तु भारतवर्ष में अधिक दिनों से रहने एवं बहमनी बादशाहों के समय में गवर्नर रहने के कारण उसे दक्खिनी का अच्छा ज्ञान था। फ़रिश्ता ने लिखा है कि इसने गोलकुण्डा में 'ऐशखाना' नाम का एक विशेष भवन बनवाया था; जिसमें कवि एकत्रित होकर अपनी कविताएँ सुनाते थे। बादशाह स्वयं उन मुशायरों में उपस्थित होता था।

इस वंश का चौथा बादशाह सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुबशाह दक्खिनी, तेलुगु और फ़ारसी का अच्छा विद्वान् एवं कवि था। उसकी रचनाओं का एक संग्रह कुलियात नाम से प्रसिद्ध है। यह पुस्तक १८०० पृष्ठों की एक भारी-भरकम पुस्तक है और कई दृष्टियों से इसका दक्खिनी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान है। कुलियात की अधिकांश रचनाएँ मौलिक हैं और उनमें नवीनता है। उसमें हिन्दी शब्दों का प्रयोग अधिक है और जिन फ़ारसी शब्दों का प्रयोग किया गया है; उन्हें भी हिन्दी के सौचे में ढाल कर। उसमें भारतीय रीति-रिवाजों; यहाँ के शूर-वीरों और ऋतुओं आदि का सुन्दर वर्णन है।

मुहम्मद कुली कुतुबशाह की रचनाओं से पता चलता है कि उसके समय में ही उसकी रचनाएँ पर्याप्त लोकप्रिय हो चुकी थीं। उसके शेरों को राजमहलों और मजलिसों में गाया जाता था। बहुत से शायर इसके तर्ज़ पर शेर लिखते और इसकी शायरी की प्रशंसा में गज़लें लिखते।

मुहम्मद कुली ने अपने चारों तरफ़ इस तरह का वातावरण पैदा कर दिया था कि न चाहने पर भी उसे शायरी करनी पड़ती। उसने अपने एक शेर में लिखा है कि :—

“कुतुबशाह रोज़ ऐसे ही शेर कहता है जैसे नदी में लहरें उठती हैं। किन्तु न तो नदी की गति में कोई अन्तर पड़ता है और न लहरों का वेग ही कम होता है।”

यही कारण है कि मुहम्मद कुली की कविता में सादगी; स्वाभाविकता और प्रवाह है।

इसने अपने समय की कविता को एक नई दिशा की ओर मोड़ा। उस समय तक अधिकांश कविताएँ धार्मिक विषयों पर लिखी जाती थीं। उसने अपनी कविता के लिए नये-नये विषयों को चुना। उसने हिन्दू मुसलमानों के रीति-रिवाजों; त्योहारों एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन बड़ी सुन्दरता के साथ किया है।

इस वंश का पाँचवाँ बादशाह सुल्तान मुहम्मद कुतुबशाह भी फ़ारसी और दक्खिनी का अच्छा कवि था। उसका एक दीवान फ़ारसी का और दूसरा दक्खिनी का उपलब्ध है। इन दीवानों में फ़ारसी और दक्खिनी काव्य के विविध रूप दिखलाई पड़ते हैं। ये; फ़ारसी की कविताएँ 'जिलुल्ला' और दक्खिनी की कविताएँ 'कुतुबशाह' उपनाम से करते थे।

गोलकुण्डा के कुतुबशाही शासकों के आश्रय में रहने वाले कवियों में—
वजही; गवासी; इब्न निशाती; गुलामअली; तानाशाह; तबई और सेवक मुख्य हैं।

गवासी का जीवन-वृत्त :

गवासी की रचनाओं को देखने से पता चलता है कि वह अपने समय का बहुत बड़ा कवि था किन्तु तत्कालीन इतिहासों और बाद के लिखे गए तज़किरों से उसके जीवन-वृत्त पर बहुत कम प्रकाश पड़ता है। स्थान स्थान पर उसकी रचनाओं में प्राप्त अन्तःसाक्ष्यों से ज्ञात होता है कि वह गोलकुण्डा का निवासी था और मुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह का समकालीन था।

गवासी ने अपनी रचनाओं में कहीं 'गवासी' और कहीं 'गवास' उपनाम का प्रयोग किया है। इसका असल नाम भी यही था या कुछ दूसरा था और इसके माता-पिता कौन थे; इसके सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। गवासी की जन्मतिथि ज्ञात नहीं है किन्तु यह अनुमान किया जाता है कि यह इब्राहीम कुली कुतुबशाह के शासन काल में पैदा हुआ और इसने मुल्तान मुहम्मद कुली कुतुबशाह के शासन काल में कविता करना आरंभ किया। इसने अपनी मसनवी 'सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल' को उम्र समय पूरा किया जब अब्दुल्ला कुतुबशाह गद्दी पर बैठ चुका था।

गवासी ने इस मसनवी का रचना काल पुस्तक के अन्त में दिया है :—

“बरस एक हज़ार पंजतीस में; किया खत्म यू नज़्म दिनतीस में”

इससे प्रतीत होता है कि गवासी ने अपनी इस मसनवी को १०३५ हिजरी (सन् १६२६) में पूरा किया।

“यूरोप में दक्खिनी मखतूत” के लेखक श्री नसीरुद्दीन दाशमी ने लिखा है कि यूरोप में प्राप्त कुछ हस्त लिखित प्रतियों में पाठ-भेद मिलता है। उन प्रतियों में उपर्युक्त शेर नीचे लिखे रूप में प्राप्त हैं :—

१ बरस एक हज़ार हौर पंजवीस में; किया खत्म यू नज़्म दिनतीस में

२ बरस एक हज़ार हौर सत्तावीस में; किया खत्म यू नज़्म दिनतीस में

इन शेरों के अनुसार “सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल” का रचना काल १०२५ हिजरी (सन् १६१७) और १०२७ हिजरी (सन् १६१८) निकलता है। किन्तु पुस्तक के प्रारंभ में जो बादशाह की तारीफ़ की गई है उससे एवं पुस्तक के अन्त के कुछ शेरों से पता चलता है कि पुस्तक अब्दुल्ला कुतुबशाह के शासन काल में लिखी गई। अब्दुल्ला कुतुबशाह १०३५ हिजरी (सन् १६२६) में गद्दी पर बैठ चुका था। अस्तु; इसी वर्ष पुस्तक लिखी गई; यह मानना उचित होगा।

उपर्युक्त मसनवी के लिखने के समय तक ग़वासी तत्कालीन कवियों में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुका था किन्तु दरबार में उसे कोई सम्मान प्राप्त न था। वह किसी मामूली नौकरी से अपनी जीविका निर्वाह करता था और अपने दिन ग़रीबी में बिता रहा था। ग़वासी ने उपर्युक्त मसनवी के अन्त में इसे स्वीकार किया है और उसने बादशाह का ध्यान अपनी ग़रीबी की ओर आकृष्ट किया है :—

जो सुल्तान अब्दुल्ला इन्साफ़ कर
मेरे जौहरों पोते दिल साफ़ कर
देवे दाद मेरा बहुत मान पाऊँ
उमस दूर थे ता गिरेवान पाऊँ
कि यू शाह मेरा खरीदार होय
तो ताज़ा मेरा तबये गुलज़ार होय
कि ग़मगीं हूँ मैं सख्त संसार ते
धरू दशदशे लाक इस आज़ार ते
परेशानगी में ज़म्याँ ख़याल मैं
ले आया हूँ ऐसे रतन ढाल मैं

किन्तु ग़रीबी में भी उसे अपनी काव्य शक्ति का गर्व था। वह हिन्दुस्तान के सभी शायरों में अपने को बड़ा समझता था :—

मेरा ज्ञान अजब शकरिस्तान है
जो इस थे मिठा सब हिन्दुस्तान है
जिते हैं जो तूती हिन्दुस्तान के
भिकारी हैं मुंज शक्करिस्तान के
शकर खा मेरे शक्करिस्तान थे
मिठे बोल उठे वो अपस ज्ञान थे
लताफ़त मन मैं सुखन संज हूँ
घर न हार लक ग़ैब के गंज हूँ
जो मैं मन सूँ तब आजमाई करूँ
तो सर्याँ उपर पेशवाई करूँ
हुनर की गवी का सो मैं बाग हूँ
बचन के उतम गंज का नाग हूँ
सके कौन मिलने मेरे तौर में
कि रुस्तम हूँ मैं आज के दौर में

ग़वासी ने अपनी इस मसनवी को सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह को समर्पित

किया है और वह लिखता है कि इसके लिए उसे अन्तः प्रेरणा मिली है :—

बहर हाल यू नज्म इलहाम सँ
किया मैं नवल शाह के नाम सँ

ऐसा प्रतीत होता है कि इस मसनवी के लिखने के बाद ग़वासी को दरबार में पर्याप्त सम्मान प्राप्त होने लगा और अन्त में बादशाह ने प्रसन्न होकर उसे 'मलिकुल्लुशुअरा' की उपाधि से विभूषित किया। यह उपाधि उसे कब और क्यों प्राप्त हुई; इसके सम्बन्ध में तत्कालीन इतिहासकार मौन हैं। किन्तु उस समय दरबार में 'वजही' जैसे प्रतिभा सम्पन्न लेखक और कवि के रहते 'मलिकुल्लुशुअरा' की उपाधि ग़वासी का पाना; इस बात को सूचित करता है कि वह बादशाह का विशेष कृपा-पात्र बन चुका था।

तत्कालीन इतिहासों से पता चलता है कि १०४५ हिजरी (सन् १६३६) में बीजापुर के बादशाह मुहम्मद आदिलशाह ने मलिक खुशनूद नाम के अपने दरबारी शायर को गोलकुण्डा दरबार में दूत बना कर भेजा। मलिक खुशनूद जब बीजापुर वापिस जाने लगा तो अब्दुल्ला कुतुबशाह ने अपने दरबार के प्रसिद्ध शायर ग़वासी को मलिक खुशनूद के साथ बीजापुर अपने दूत की हैसियत से भेजा। बीजापुर में ग़वासी की बड़ी आव-भगत हुई। इससे प्रतीत होता है कि गोलकुण्डा में ग़वासी की हैसियत केवल शायर की ही न थी बल्कि राज-काज में बादशाह उसके विचारों को महत्व देता था।

अपनी पहली मसनवी के ठीक चौदह वर्षों बाद १०४६ हिजरी (सन् १६४०) में उसने अपनी दूसरी मसनवी "तूतीनामा" की रचना की। उस समय तक उसे पर्याप्त सम्मान प्राप्त हो चुका था और उसे धन-दौलत किसी बात की कमी न थी। किन्तु 'तूतीनामा' के कुछ अंशों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उसकी रचना के समय वह अपनी सांसारिकता से दुःखी था और वह अपना ध्यान खुदा की ओर लगाना चाहता था :—

ग़वासी अगर तू है सचला ग़वास
लगा इश्क अपने खुदा सात खास
चलेगा किता नफ़्स के कये मने
किता होयगा नाँ के पये मने

×

×

×

हो बेदार एक बार इस ख़्वाब ते
निकल भार इस ग़म के गरदाब ते

जो है रहनुमा पीर हैदर तेरा
 हम अल्लाह वहे हम पैगम्बर तेरा
 ज कुच ख्वास्त तेरा है सब उस पू छोड़
 दुनिया के इलाके ते ले दिल कू तोड़
 न कर एतमाद इस गुज़र गाह का
 यू फौदा है दरवेश हौर शाह का
 सँभाल अपें ऐ यार इस दाम ते
 नको गाफिल अछ आपने काम ते

ऐसा प्रतीत होता है कि 'तूतीनामा' की रचना के बाद ग़वासी अपना अधिक समय 'इबादत' में लगाने लगा और दरबार में कम आने जाने लगा। संभवतः इसी से इतना बड़ा शायर होने पर भी तत्कालीन इतिहासों और फलतः बाद के तज़किरों में इसके जीवन पर बहुत कम प्रकाश डाला गया। ग़वासी की मृत्यु किस सन् में हुई; इसके सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है किन्तु इतना निश्चित है कि सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह के शासन काल में ही इसकी मृत्यु हो गई।

काव्य और शैली :

ग़वासी की दो रचनाएँ उपलब्ध हैं :—

१ सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल

२ तूतीनामा

दकन में उर्दू के लेखक ने ग़वासी की कुछ गज़लों और मर्सियों की भी चर्चा की है और उनके उदाहरण अपनी पुस्तक में दिए हैं।

उपर्युक्त दोनों पुस्तकें फ़ारसी-मसनवियों की प्रणाली पर लिखी गई हैं और उनमें प्रेम कथाओं का वर्णन है। फ़ारसी मसनवियों के अनुसार इन पुस्तकों में पहले खुदा की प्रार्थना; पैगम्बर की तारीफ़; खलीफ़ा की प्रशंसा और तत्कालीन बादशाह के संबंध में लिखा गया है और उसके बाद कहानी का प्रारंभ किया गया है। पहली पुस्तक की कहानी पर आगे के पृष्ठों में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। तूतीनामा की कहानी निम्नांकित है :—

भारतवर्ष में एक बड़ा धनी सौदागर रहता था। उसके जहाज सातों समुद्रों में जाते थे और उसके पास ऐसी कीमती चीज़ें थीं; जो बड़े-बड़े बादशाहों के पास भी न थीं। किन्तु वह सौदागर किसी पुत्र के न होने से बड़ा दुःखी था बहुत दिनों के बाद उसे एक लड़का पैदा हुआ। लड़का बड़ा ही सुन्दर और प्रतिभाशाली था। सौदागर ने उसकी शादी एक सुन्दरी युवती के साथ कर दी। लड़का धीरे-धीरे अपने बाप का सारा कारोबार देखने लगा। उसने एक मैना और एक तोता खरीदा;

जो आदमियों की बोली बोलते थे और जिन्हें कुरान का भी ज्ञान था। तोता भविष्य-दर्शी था। उसने समय-समय पर ऐसी सलाहें दीं कि उनसे उसे बड़ा लाभ हुआ। एक बार वह विदेश में व्यापार के लिए गया। उसकी युवा पत्नी घर में अकेली थी। एक दिन जब वह अपनी छत पर बैठी थी; उसकी निगाह एक सुन्दर नवजवान से मिली जो नीचे रास्ते से जा रहा था। नवजवान ने एक बूढ़े से उस सौदागरिनी के पास प्रेम का सन्देश भेजा। सौदागरिनी भी उस पर आसक्त हो चुकी थी। उसने मैना से इस सम्बन्ध में पूछा किन्तु मैना के मना करने पर उसे मरवा डाला। दूसरे दिन उसने तोता से पूछा। तोता मैना की मृत्यु देख चुका था। उसने मना करने में खतरा देखा और कहा कि ये सब बातें रहस्य की हैं; किसी से कहनी नहीं चाहिए; नहीं तो तुम्हारा और हमारा हाल वही होगा; जो एक रानी का हुआ। इसके बाद तोता ने रानी की कहानी सुनाई और रात बीत गई। दूसरे दिन फिर सौदागरिनी तोते से राय लेने पहुँची। तोते ने कहा कि अपने गहनों को साथ न रखो अन्यथा वह नवजवान धोका देकर तुम्हारे गहनों को ले सकता है, जैसा कि एक कहानी में हुआ है। इसके बाद उस तोते ने वह कहानी सुनाई और रात बीत गई। इस प्रकार तोता ३५ दिनों तक कहानियाँ सुनाता रहा और सौदागरिनी को डालता रहा। इसके बाद सौदागर आ गया और उस तोते के सारी बातें मालूम हो गई। उसने अपनी व्यभिचारिणी स्त्री को मार डाला और सारी धन संपत्ति गरीबों को दान देकर स्वयं फकीर हो गया।

तूतीनामा के कथानक का आधार कुछ विद्वान् फ़ारसी के एक गद्य की पुस्तक को मानते हैं। वस्तुतः इस कथा का मूल आधार 'शुक्र-समन्ति' की कथा है; जो फ़ारसी साहित्य एवं अन्य भाषाओं के साहित्यों में भी बहुत पहले ही पहुँच चुकी थी।

शवासी ने अपनी पहली मसनवी की रचना सन् १६२६ में की और तूतीनामा उसके ठीक १४ वर्षों के बाद सन् १६४० में लिखा गया। ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों मसनवियों की कहानियों के चुनाव में भी शवासी की तत्कालीन मानसिक स्थिति का बहुत बड़ा हाथ है। पहली मसनवी की रचना के समय शवासी में सांसारिक सुखों को प्राप्त करने की बड़ी अभिलाषा थी। अस्तु; उसने ऐसा कथानक लिया जिसमें प्रेम की सफलता और उसका सौन्दर्य प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया गया है। तूतीनामा के अनेक उद्धरणों से स्पष्ट है कि उसकी रचना के समय वह अपनी सांसारिकता से ऊब चुका था। अस्तु; उस समय वह एक ऐसी कहानी चुनता है जिसमें सांसारिक प्रेम का खोखलापन और उसकी निःस्मरता प्रदर्शित की गई है।

शवासी की जो दो मसनवियाँ उपलब्ध हैं; उन दोनों की कहानियाँ मौलिक नहीं हैं किन्तु उन दोनों में शवासी की प्रतिभा का पूर्ण चमत्कार दिखलाई पड़ता है। यही कारण है कि शवासी की केवल दो रचनाएँ उपलब्ध होने पर भी उसका

स्थान दक्खिनी के कवियों में बहुत ऊँचा है । उसने अपनी प्रतिभापूर्ण वर्णन शक्ति; सुन्दर शब्दों के चुनाव; नई उपमाओं और अपनी अद्भुत सूक्ष्म-बुद्धि से इन कथानकों को नया रूप प्रदान कर दिया है । अपनी पहली मसनवी में गवासी स्वयं लिखता है :—

मेरा दिल खज़ीना जो मामूर है
 बचन के जवाहिर सों भरपूर है
 लगा रोलने ताई मैं जौहरों
 चिपाया तजल्यों में नौ अंबराँ
 क्या शेर ताज़ा बड़े छन्द सों
 हर एक बन्द बसलाइया बन्द सों
 जो लफ़्ज मिलाया रंगेली निछल
 पुरोया जवाहिर की छेली निछल
 ख्यालों के फौजाँ को दौड़ाइया
 हज़ाराँ नवे तशबिहाँ लाइया
 जो कुछ तशबिहाँ खूब माकूल हैं
 मेरे ख्याल के बन के वो फूल हैं

गवासी की प्रतिभा का पता इससे चलता है कि उसने पहली मसनवी को केवल तीस दिनों में पूरा किया । गवासी की दोनों मसनवियों में स्थान स्थान पर प्रकृति का बड़ा संश्लिष्ट चित्रण मिलता है । तूतीनामा में एक स्थान पर गवासी ने प्रातःकाल का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है । 'सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल' में स्थान स्थान पर समुद्रों; नगरों और बागीचों का बड़ा सुन्दर वर्णन मिलता है । सिंहल द्वीप के बागीचे का वर्णन देखिए :—

कहूँ वाँके चमनाँ कूँ मैं क्यों चमन
 कि था हर चमन साफ़ एक एक गगन
 भर अमरत सँ चमनाँ के म्याने तमाम
 जड़त के अथे हौज़ खाने तमाम
 बने-बन बरक लहलहाते अथे
 कल्यों पर कल्यों बार आते अथे
 पवन भोले खा फूल की डाल हल
 सो पड़ते अथे फूल हर भाड़ तल
 मगर आ अंबर के चितारे तमाम
 चमन में बिछाये थे तारे तमाम

अथे बूँद शबनम के यूँ पात में
रतन खास खूबाँ के ज्यूँ हात में

ग़वासी ने अपनी पहली मसनवी के प्रारंभ में सखुन की तारीफ़ में जो 'बचन' या शब्द शक्ति का वर्णन किया है; वह दक्खिनी साहित्य में ही नहीं अन्य साहित्यों में भी बेजोड़ है।

ग़वासी की भाषा तीन सौ वर्ष पुरानी बोलचाल की दक्खिनी है। उसमें निम्नांकित विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं।

(१) उसमें फ़ारसी शब्दों की अपेक्षा हिन्दी शब्दों के प्रयोग की ओर अधिक झुकाव है। उसमें हिन्दी के बहुत से ऐसे शब्दों का भी व्यवहार हुआ है; जो संस्कृत से आये हैं और जिनका प्रयोग तत्सम रूप में होता है। उदाहरणार्थ नीचे लिखे शब्दों को लिया जा सकता है :—

अन्त, तल, भुजंग, पन्थ, पवन, निराधार, अंधर, नाद, मान, ज्ञान; तुरंग, अमृत, निरंजन, दुःख, गंभीर, आधार, नीर, आनन्द, हस्त, कामिनी, बल, बालक, निर्मल, मार्ग, अघर, गगन, निशि, ज्योति, चन्द्र, धीर, रोमावली, अन्धकार, द्रन्द, मोहिनी, ध्यान, मद।

इन तत्सम रूपों के अतिरिक्त ग़वासी ने बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है; जो हिन्दी में संस्कृत से आये हैं किन्तु उनका प्रयोग तद्भव रूप में होता है। जैसे :—

पन्त, तिर्जग (त्रिजग), दिपाना (दीप्त कर्णा), विंद (विरुद), जग, सगल (सकल), औतार, बचन, मुजान, सन्दूर (समुद्र), निदा (नाद, शब्द), भान (भानु), खर्ग (खड्ग), सामी (स्वामी), काम, जगपती, दीया बत्ती, बैन, रतन, फूल, पूत, दीस (दिवस), धरतरी, निछल, सातग (सत्र)।

(२) ग़वासी की रचनाओं में बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है; जो मराठी, तेलुगु या कन्नड़ से दक्खिनी में आकर मिल गये हैं। इनमें बहुत से शब्द अपने पूर्व रूप में प्रयुक्त हुए हैं और कुछ शब्दों का रूप विकृत हो गया है। जैसे :—

पाड़ना (डालना या निकालना), भंडोली (वर्तन), लई (बहुत), मुंडी (सिर), कंडालना (नफ़रत करना), खंडी (कोड़ी), सटना (खतम होना), दुराही (शासन), सामी (स्वामी), भाड़ (वृद्ध), नेट (दोस्त) इत्यादि।

(३) वाक्या, नामा, क़िला आदि बहुत से फ़ारसी शब्दों को शुद्ध रूप में न लिख कर उसी रूप में लिखा गया है, जैसा इनका उच्चारण होता है।

(४) ग़वासी ने दक्खिनी के अन्य कवियों की भाँति बहुत से नये शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया है। जैसे :—

फूल का बार आना (फूल खिलना); मजलिस भराना (दरबार में जाना); दड़ी मारना (जल्दी से चला जाना); मुख जातरा करना (मुख देखना); अन्द गन्द मिटाना (नामो निशान मिटाना); नाँव नंग होना (नेक नामी बदनामी होना) आदि बहुत से नये मुहावरे ग़वासी की रचनाओं में प्रयुक्त हुए हैं।

ग़वासी ने बहुत से ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया है जो या तो नये हैं या जिनका प्रयोग प्रचलित अर्थों से विभिन्न अर्थों में किया गया है। जैसे :—

बहा (भाव या क्रीमत अर्थ में)

“उनन का बहा कोई दे ना सके”

अपसता (अपने से अर्थ में)

“सदा राज करता अथा अपसता”

सूर (गुशी अर्थ में)

“सदा सूर मुझ कूँ तेरे सूर थे”

बदल (लिए अर्थ में)

“अंभू बहाता मोहिनी के बदल”

इसी प्रकार ‘खुश मान’ का प्रयोग ‘इज्ज़त’; ‘अभाल’ का प्रयोग ‘बादल’; ‘ताव’ का प्रयोग ‘क्रोध’; ‘बरास’ का प्रयोग ‘आशा पूर्ण होना’ आदि अर्थों में किया गया है।

(५) छन्दों में मात्रा की पूर्ति के लिए बहुत से शब्दों का रूप विकृत किया गया है। जैसे :—

(१) हती तेरे दरवार के फाड़ सब
छड़ीदार तुज दार के भाड़ सब

(२) कि ऐ बादशाह; भोगुनी वस्तवर
तूँ फ़रज़न्द के कारन अब ग़म न कर

(३) कहा मैं ‘इसी का’ दिवाना हूँ भोत
अगर चे अपन ठार दाना हूँ भोत

(४) एकाएक बड़े गुल सिती हाँक मार
निकल जंगिया आए एक घर ते भार

उपर्युक्त उद्धरणों में ‘पहाड़’ के स्थान पर ‘फाड़’; ‘बहुगुनी’ के स्थान पर

‘भोगुनी’; ‘बहुत’ के स्थान पर ‘भोत’; और ‘बाहर’ के स्थान पर ‘भार’ शब्द का प्रयोग हुआ है।

(६) ग़वासी की भाषा में कहीं कहीं लिंग का भी व्यतिक्रम दिखलाई पड़ता है। बहुत से शब्द जिनका आज कल स्त्रीलिंग प्रयोग होता है; पुल्लिंग रूप में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे :—

- (१) “मुनाजात ग़वास का कर क़बूल”
- (२) “हतेज़ी तेरा लोह अंगुली क़लम”
- (३) “तेरा याद दायम है चारा उसे”
- (४) “मेरा रूह परवाने के सारका”

उपर्युक्त उदाहरणों में ‘मुनाजात’; ‘हतेज़ी’; ‘याद’; और ‘रूह’ शब्दों का प्रयोग पुल्लिंग हुआ है किन्तु आज कल इन शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिंग होता है।

कहानी का संक्षेप :

किसी समय मिस्र में आसिम नवल नाम का बादशाह रहता था। बादशाह को किसी बात की कमी न थी किन्तु वह एक सन्तान के न होने से बहुत दुःखी था। इस दुःख के कारण वह राज-काज से उदासीन रहने लगा। ज्योतिषी लोगों ने उसकी जन्म-पत्री देख कर कहा कि, यदि वह यवन देश के राजा की लड़की से शादी कर ले तो उसे उस रानी से पुत्र की उत्पत्ति होगी। यह बात सुन कर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने अपने एक दूत को बहुमूल्य उपहारों के साथ ‘यवन’ के राजा के पास भेजा। ‘यवन’ के बादशाह ने आसिम नवल की प्रार्थना स्वीकार कर ली और बड़ी धूम-धाम से विवाह सम्पन्न हुआ।

जैसी ज्योतिषियों ने भावष्यवाणी की थी; बादशाह को उसी वर्ष एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसका नाम सैफुल मुलूक रखा गया। संयोगवश उसी दिन मिस्र के वज़ीर को जिसका नाम सालेह था; उसे भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वज़ीर ने अपने पुत्र का नाम ‘साअद’ रखा।

सैफुल मुलूक और ‘साअद’ दोनों में बड़ी मित्रता थी। दोनों का पालन-पोषण साथ साथ हुआ और दोनों की शिक्षा-दीक्षा भी साथ साथ ही हुई। कुछ ही दिनों में दोनों बहुत सी विद्याओं में पारंगत हो गए।

एक दिन बादशाह आसिम नवल ने सैफुल मुलूक और साअद दोनों को बुलाया। बादशाह ने खजाने से एक सुनहला बक्स मँगाया और उसमें से एक ज़रीदार कपड़ा और एक अँगूठी निकाल कर सैफुल मुलूक को दी। साथ ही एक सुन्दर घोड़ा भी दिया और कहा कि “ये चीज़ें मुझे हज़रत सुलेमान से प्राप्त हुई थीं। तुम्हीं मेरे उत्तराधिकारी हो। अस्तु; इन चीज़ों को मैं तुम्हें देता हूँ।”

सैफुल मुलूक इन उपहारों को प्राप्त कर बड़ा प्रसन्न हुआ। रात को संयोगवश उसकी दृष्टि उस वस्त्र पर पड़ी हुई एक तस्वीर पर पड़ी; जो भेंट में उसे पिता से प्राप्त हुआ था। वह तस्वीर में बनी स्त्री के सौन्दर्य को देख कर अपनी सुधि-बुधि खो चुका था।

बादशाह को जब यह खबर मालूम हुई तो उसने साअद को बुलाया और तस्वीर वाले वस्त्र की प्राप्ति का पूरा वृत्तान्त सुनाया। उसने कहा कि “एक दिन मैं दरबार में बैठा हुआ था कि बड़े जोरों की आँधी आई। कुछ ही देर में कुछ परियों ये चीजें लेकर मेरे सामने आईं। उन्होंने बतलाया कि इन वस्तुओं को हज़रत सुलेमान ने भेंट में भेजा है।”

बादशाह ने यह भी बतलाया कि वस्त्र पर बनी हुई तस्वीर बदीउल जमाल की है; जो ‘गुलिस्ताने-एरम’ के बादशाह की बेटी है, उसे प्राप्त करना बड़ा कठिन है।

सैफुल मुलूक की दशा दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी। बादशाह ने बहुत से अनुभवी वैद्यों को बुला कर उसकी दवा करने को कहा। किन्तु उसकी अद्भुत बीमारी का निदान करना वैद्यों के लिए कठिन था। बादशाह ने बहुत से लोगों को गुलिस्ताने-एरम की खोज में भेजा; वे लोग एक साल तक इधर उधर भटकने के बाद वापिस आए किन्तु गुलिस्तान-एरम का कहीं पता न चला।

अन्त में सैफुल मुलूक बादशाह की आज्ञा लेकर स्वयं साअद एवं अन्य साथियों के साथ गुलिस्ताने-एरम की खोज में चल पड़ा।

बहुत से समुद्रों को पार करता हुआ सैफुल मुलूक और उसके साथियों का दल चीन पहुँचा। वहाँ के बादशाह ने सक्का बड़ा स्वागत किया और गुलिस्ताने-एरम का पता लगाने का प्रयत्न किया। वहाँ एक एक सौ सत्तर वर्ष के बूढ़े ने बतलाया कि वह बहुत से देशों का भ्रमण कर चुका है किन्तु उसने इस नाम का शहर न देखा है न सुना है। उसने यह भी बतलाया कि, कुस्तुनियों बहुत बड़ा व्यापारिक नगर है; जहाँ संसार के विभिन्न देशों से लोग आते हैं। संभव है वहाँ गुलिस्ताने-एरम का पता चल जाए।

सैफुल मुलूक बूढ़े की इस बात को सुन कर चीन के बादशाह से बिदा लेकर कुस्तुनियों की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक बड़ा तूफ़ान आया। सारी नौकाएँ डूब गईं। साअद एवं सैफुल मुलूक के अन्य साथी कुछ डूब गए और कुछ तख्तों पर बहते हुए दूर जा पड़े। राजकुमार अकेला एक तख्ते पर बहता हुआ हबिशियों के एक द्वीप में पहुँचा। हबिशियों ने पकड़ कर राजकुमार को अपने बादशाह के सामने उपस्थित किया। बादशाह ने सैफुल मुलूक को अपनी शाहज़ादी के पास भेजा कि वह उसे भूँ कर खा जाए किन्तु शाहज़ादी सैफुल मुलूक के सौन्दर्य पर मुग्ध थी। उसने प्रेम प्रकट किया किन्तु राजकुमार के वृणा प्रकट करने पर उसे बन्दीगृह में डाल दिया।

राजकुमार किसी प्रकार हथियों के बन्दीग्रह से भाग निकला एवं कई द्वीपों में होता तथा अनेक प्रकार के कष्ट उठाता कैसरिया नाम के नगर में पहुँचा। इस नगर में बन्दरों का निवास था। वहाँ केवल एक ही मनुष्य था जो उनका बादशाह था। कैसरिया के राजा ने राजकुमार का बड़ा स्वागत किया। राजकुमार कई दिनों तक कैसरिया के बादशाह का आतिथ्य ग्रहण करता रहा किन्तु वहाँ भी गुलिस्ताने-एरम का पता न पाकर बादशाह से विदा लेकर आगे बढ़ा।

राजकुमार फिर एक द्वीप में पहुँचा। वहाँ हाथी के बराबर मकोड़ देख कर वह बड़ा भयभीत हुआ और एक वृक्ष पर जा चढ़ा। इतने में उसकी दृष्टि समुद्र किनारे खड़े शतुर मुर्गी पर पड़ी। सैफुल मुलूक वृक्ष से उतरा और शतुर मुर्गी के साथ दूर तक निकल जाने की इच्छा में वह उसके पैरों को पकड़ कर लटक गया। शतुर मुर्गी सैफुल मुलूक को लेकर उड़ा और अपने वृक्षों के पास पहुँचा। शतुर मुर्गी के वृक्ष सैफुल मुलूक को खाना ही चाहते थे कि एक बड़ा अजगर उन्हें निगल गया। वह जान बचा कर भागा और पानी के एक झोत के किनारे पहुँचा। वहाँ उसे पड़ा हुआ एक सुन्दर अनार का फल मिला; जिसे खाकर उसने अपनी ज़ुबान शान्त की।

इसके बाद सैफुल मुलूक इसफ़न्द नाम के द्वीप में पहुँचा। उस द्वीप में उसे एक बड़ा राजमहल दिखाई दिया। वह महल में पहुँचा। सभी कमरे वेशक्रीमती कालीनों से सजे हुए थे। चारों ओर के बागीचों में सुन्दर फूल खिले हुए थे। किन्तु उस महल में किसी मनुष्य का पता न था। राजकुमार कई कमरों में घूमता हुआ महल के मध्य भाग में पहुँचा। उसने देखा कि कमरे के मध्य भाग में एक सुन्दर चौकी रखी हुई है और उस पर कोई स्त्री मुँह ढाँप कर सोई हुई है। राजकुमार और नज़दीक पहुँचा। उसने कई बार उसके पास बैठ कर जगने की प्रतीक्षा की किन्तु बेकार। राजकुमार डरा और वह लौटना ही चाहता था कि उसकी दृष्टि चौकी पर पड़ी हुई पट्टी पर पड़ी। उसने पट्टी को पढ़ कर देखा तो उसे मालूम हुआ कि उस पट्टी पर कोई मन्त्र लिखा हुआ है, जिससे सोई हुई स्त्री की नींद जागी गई है। राजकुमार ने पट्टी ज़मीन पर पटक कर तोड़ दी। सोई हुई स्त्री जाग उठी। उसके सौन्दर्य से कमरा प्रकाशित हो उठा। राजकुमार उसे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ।

किन्तु स्त्री बड़े आश्चर्य में थी। उसने राजकुमार से पूछा तुम कौन हो ? राजकुमार ने अपनी पूरी कहानी कह सुनाई। सैफुल मुलूक के पूछने पर उस कुमारी ने जो अपने सम्बन्ध में बतलाया उसका सारांश यह है :—

“मैं सिंहल द्वीप की राजकुमारी हूँ। मेरी आर दो बहनें हैं। मेरी बहनों में मेरी छोटी बहिन बहुत ही सुन्दर है। एक दिन हम तीनों बहनें पिता-माता की आज्ञा लेकर बागीचे में घूमने गईं और वहाँ हौज़ में स्नान करने लगीं। इतने में बड़े ज़ोरों का बरफ़ उठा। आसमान धूल से भर उठा। इतने में न जाने कितने से एक जानवर आ गया।

वह अपने पंखों से को तेज़ी से चलाता हुआ मुझे लेकर आसमान में उड़ गया और मुझे लाकर यहाँ रखा। उसने मुझे झुक कर सलाम किया और कहा कि वह परियों के बादशाह का छोटा भाई है। उसका बड़ा भाई दरियाये कुलजुम (लाल समुद्र के आस-पास का प्रदेश) का शासक है। उसने यह भी कहा कि वह राजकुमारी के सौन्दर्य पर आकृष्ट है; इसीलिए वह उसे उठा लाया है। मैं किसी प्रकार उसके प्रेम को स्वीकार न कर सकी। अस्तु; उसने उस पट्टी पर कोई मन्त्र लिख कर मेरी नाँद बाँध दी थी। वह वर्ष में एक दो बार आ जाता है और मुझ से प्रेम की बातें करता है। मुझे यहाँ आये हुए बारह वर्ष बीत गये और मेरे जीवन के इतने वर्ष व्यर्थ में गए।”

राजकुमारी ने यह भी बतलाया कि वह गुलिस्ताने-एरम की राजकुमारी बदी-उल-जमाल को जानती है। वह उसकी सखी है। राजकुमार को वह उससे मिलाने का प्रयत्न करेगी।

राजकुमार बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने बतलाया कि उसके पास हज़रत सुलेमान की अँगूठी है। वह उसकी सहायता से दैत्य को मार सकेगा। दोनों शीघ्रता से उस दरिया की ओर चले जहाँ वह दैत्य रहता था। सैफुल मुलूक ने ज्यों ही हज़रत सुलेमान की अँगूठी दिखलाई; दरिया से एक सुन्दर सन्दूक निकल आया। दोनों सन्दूक को उठा कर बाहर लाये। उस सन्दूक के भीतर जानवर के रूप में वह दैत्य था। सैफुल मुलूक ने सन्दूक को तोड़-फोड़ कर जानवर का सर मरोड़ दिया। चारों ओर ज़ोर-ज़ोर का बवंडर उठा। खून की वर्षा होने लगी। आकाश से एक बड़ा शिर गिरा; जिससे पृथ्वी हिल गई। दैत्य अपनी जीवन-लीला समाप्त कर चुका था।

दैत्य की मृत्यु से प्रसन्न राजकुमार और राजकुमारी एक नाव पर सवार होकर सिंहल द्वीप की ओर चल पड़े। एक द्वीप में पहुँचने पर दोनों की भेंट शिकार खेलने को आये हुए कुछ आदिमियों से हुई। वे आदिमी राजकुमारी के चचा की प्रजा थे। राजकुमारी का चचा ताजुल मुलूक, वासित नाम के नगर का राजा था।

सैफुल मुलूक, राजकुमारी और उन लोगों के साथ वासित नगर पहुँचा। ताजुल मुलूक अपनी खोई हुई भतीजी को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

राजकुमारी के आने का समाचार सिंहल द्वीप भेजा गया। राजकुमारी के माता-पिता राजकुमारी को पाकर अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने सैफुल मुलूक के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

सिंहल द्वीप में सैफुल मुलूक ने कितने दिन आनन्द से बिताए। एक दिन वह घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलने जा रहा था। उसने रास्ते में एक दुबले पतले व्यक्ति को देखा। उसकी सूत शकल साअद से मिलती थी। सैफुल मुलूक ने अपने साथ के आदिमियों से उस व्यक्ति को राजभवन में ले जाने का आदेश दिया। वह बड़ी जल्दी शिकार से लौट आया। उसने उस नौजवान को बुलाया और उसके

सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने लगा। नौजवान की बातों से सैफुल मुलूक को मालूम हुआ कि वह उसके मंत्री का लड़का—उसका परम-मित्र सान्नाद है; जिससे वह समुद्र में नाव डूब जाने के कारण बिलुप्त हुआ था। दोनों मित्र एक दूसरे से गले मिले।

उन्हीं दिनों बदीउल जमाल सिंहल द्वीप आई। राजकुमारी से मिल कर वह बड़ी प्रसन्न हुई। बदीउल जमाल ने राजकुमारी से पूछा दैत्य के हाथ से कैसे उसका उद्धार हुआ। राजकुमारी ने कहा—बातें बड़ी लम्बी और रहस्य की हैं; चलो बागीचे में चल कर बातें करेंगे।

राजकुमारी अपनी माँ और बदीउल जमाल के साथ उस बागीचे में आई; जहाँ सैफुल मुलूक नित्य घूमने जाया करता था। दोनों सखियाँ आपस में बातें कर रही थीं और सैफुल मुलूक थोड़ी दूर पर बैठा हुआ कुछ गा रहा था। बदीउल जमाल सैफुल मुलूक के स्वर को सुन कर मुग्ध थी। राजकुमारी ने बतलाया कि वही उसे दैत्य के हाथ से उद्धार करने वाला है। राजकुमारी, बदीउल जमाल के साथ सैफुल मुलूक के पास आई। सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल दोनों एक दूसरे के सौन्दर्य को देख कर अपनी सुधि-बुधि खो चुके थे।

बदीउल जमाल के लिए माता-पिता की आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक था। उसने एक पत्र अपनी दादी के नाम लिखा; जो सीमीपटन में रहती थी। उसने वह पत्र सैफुल मुलूक को दिया और एक जिन्न के साथ उसे सीमीपटन भेजा। सैफुल मुलूक जिन्न की पीठ पर सवार होकर क्षण मात्र में सीमीपटन पहुँचा। सीमीपटन की सीमा पर आग की ऊँची लपटें उठ रही थीं। सैफुल मुलूक को सीमीपटन का सौन्दर्य अद्भुत लगा। सीमीपटन की भूमि ईश्वरीय ज्योति से जगमगा रही थी। ज़मीन पर कंकड़ और पत्थर के रूप में हीरे-मोती बिखरे हुए थे। नगर में एक से एक आलीशान महल बने हुए थे और उन पर जड़ाऊ कलश रखे हुए थे। महलों के चारों ओर मोने की ऊँची दीवारें थीं जिनके भीतर सुन्दर बाग थे। उन बाग़ों में अमृत के समान मीठे जल से भरी हुई सुन्दर नहरें बह रही थीं।

एक महल में अखण्ड नीलम के तख्त पर बदीउल जमाल की दादी बैठी हुई थी। उसके चेहरे से शांति और पवित्रता की ज्योति प्रकाशित हो रही थी। सैफुल मुलूक ने उसे झुक कर सलाम किया और बदीउल जमाल का पत्र उसे दिया। दादी सैफुल मुलूक के सौन्दर्य और उसकी नम्रता से बड़ी प्रसन्न हुई और उसने विश्वास दिलाया कि वह बदीउल जमाल के साथ विवाह कराने में सैफुल मुलूक की मदद करेगी।

उसने तमाम देवों को एकत्र होने का आदेश दिया और देवों की एक बड़ी सेना एवं सैफुल मुलूक को साथ लेकर गुलिस्ताने-एरम में अपने पुत्र शहबाल से मिलने के लिए चली। गुलिस्ताने-एरम के पास आकर उसने शाहजादे को एक

बागीचे में बिठला दिया और स्वयं साथ के देवों के साथ नगर में गई ।

दरियाये कुलजुम का बादशाह अपने भाई के सैफुल मुलूक के द्वारा मारे जाने से बड़ा दुःखी था । उसने अपनी सेना के सिपाहियों को आदेश दे रखा था कि उसके भाई को मारने वाला व्यक्ति जहाँ भी पाया जाय ज़िन्दा पकड़ कर उसके सामने उपस्थित किया जाय ।

सैफुल मुलूक उस बागीचे में घूम रहा था और खिले हुए रंगविरंग फूलों को देख कर मन ही मन प्रसन्न हो रहा था । इतने में दरियाये कुलजुम के बादशाह के दूत उस बागीचे में पहुँचे । सैफुल मुलूक से बातों ही बातों में उन्हें ज्ञात हो गया कि उनके बादशाह के भाई को मारनेवाला व्यक्ति वही है । वे ज़बरदस्ती सैफुल मुलूक को पकड़ कर अपने बादशाह के पास ले गये और वहाँ वह बन्दी बना लिया गया ।

बदीउल जमाल गुलिस्ताने-एरम आ गई थी । वह सैफुल मुलूक के एका-एक ला पता हो जाने से बड़ी दुःखी थी । उसने अपनी दादी शहरबानू को उसकी लापरवाही पर बड़ा बुरा भला कहा और यह भी बतलाया कि सैफुल मुलूक के बिना उसका जीवित रहना बड़ा कठिन है । शहरबानू ने अपने पुत्र शहबाल से कहा—कि यह उसके लिए बड़े अपमान की बात है कि कोई उसके राज्य से किसी व्यक्ति को बिना उसके आदेश के पकड़ मँगवावे ।

शहबाल ने एक बड़ी सेना लेकर दरियाये कुलजुम पर आक्रमण की तैयारी की । दोनों बादशाहों की फौजों में बड़ी भयंकर लड़ाई हुई और अन्त में दरियाये कुलजुम का बादशाह पकड़ा गया । शहबाल ने उससे इस शर्त पर संधि की कि वह सैफुल मुलूक को बन्दी-गृह से मुक्त कर दे ।

इस प्रकार बदीउल जमाल और सैफुल मुलूक की शादी धूम-धाम से संपन्न हुई । सिंहल द्वीप के बादशाह के प्रार्थना करने पर वहाँ की राजकुमारी का विवाह साअद के साथ हुआ । कुछ दिनों तक गुलिस्ताने-एरम में रहने के बाद सैफुल मुलूक और साअद दोनों राजकुमारियों और देहज में प्राप्त अनगिनत अमूल्य पदार्थों एवं दास-दासियों के साथ अपने देश में पहुँचे ।

प्रेम गाथा की परंपरा :

उपर्युक्त कहानी को पढ़ने में स्पष्ट है कि प्रेम-गाथा की जो धारा हिन्दी के प्रेम-मार्गी शाखा के कवियों—कुतुबन, मझन और जायसी के द्वारा प्रवाहित हुई; उसका बहुत बड़ा प्रभाव दक्खिनी-साहित्य पर पड़ा । उत्तरी भारत के हिन्दी-साहित्य में यह धारा थोड़े ही समय के बाद लुप्त होती दिखाई पड़ती है किन्तु दक्खिनी में बहुत बाद तक अविच्छिन्न रूप से प्रभावित होती रही । हिन्दी के प्रेम-मार्गी शाखा के कवियों ने जिस प्रकार प्रसिद्ध प्रेम कथाओं को लेकर काव्य-रचना की उसी प्रकार दक्खिनी के बहुत से कवियों ने लोक-प्रसिद्ध कथाओं को अपनी कविता

का विषय बनाया। जायसी आदि की भाँति इन कवियों ने जो कथानक लिए; उनका सारांश इतना ही है कि कोई राजकुमार किसी राजकुमारी के सौन्दर्य की चर्चा सुन कर या उसे चित्र में देख कर उस पर आसक्त होता है और उसे पाने का प्रयत्न करता है और बड़ी कठिनाइयों के बाद उसे प्राप्त करता है। जायसी आदि सन्तों ने अपनी रचनाएं मत प्रचार की दृष्टि से की थीं। उनकी रचनाओं में परोक्ष सत्ता के प्रति कहीं कहीं संकेत इतना स्पष्ट है कि कथा की शृंखला टूटती हुई सी प्रतीत होती है। दक्खिनी के कवियों की रचनाओं में इस प्रकार का कोई संकेत नहीं है। अस्तु; उनमें स्वाभाविकता अधिक है।

कहानी की मौलिकता :

गवासी ने स्वयं इस बात की चर्चा नहीं की है कि उसे यह कहानी कहाँ से प्राप्त हुई। पुस्तक के प्रारंभ में कुछ अपने बारे में लिखते हुए गवासी ने लिखा है कि एक दिन वह प्रातःकाल के समय बाग़ में घूमने गया था। हरे भरे वृक्षों पर सुन्दर फूल खिले हुए थे। ठंडी हवा बह रही थी। उस प्राकृतिक सौन्दर्य को देख कर अचानक उसके मनमें आया कि उसे कोई ऐसा काम करना चाहिए; जिससे उसका नाम अमर हो जाए। अचानक उसे अन्तःकरण में यह प्रेरणा हुई :—

“कि सैफुल मुलूक हौर बदीउल जमाल
यू दोनों हैं आलम मने बेमिसाल
उनन दुइ का दास्ताँ खोल तूँ
सो दफ्तर उनन इश्क का खोल तूँ
कि कई दास्ताँ जग में हो गए अहें
वले कोई ऐसा नहीं कए अहें”

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि गवासी ने इस बात को स्वीकार किया है कि सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल की कहानी एक प्रसिद्ध कहानी है और कहानी का कथानक उसकी मूल कल्पना नहीं है।

वस्तुतः सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल की प्रेम कहानी अलिफ लैला की एक प्रसिद्ध कहानी है। पंचतंत्र; हितोपदेश एवं कथासरित्सागर की कहानियों की भाँति अलिफ लैला की कहानियाँ विभिन्न देशों में लोक कथाओं के रूप में प्रचलित हैं। इन कथाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है या उन कथाओं के आधार पर कहानियाँ लिखी गई हैं। विलियम हार्ट ने अलिफ लैला के विभिन्न भाषाओं में अनुवादों की चर्चा करते हुए लिखा है कि गवासी ने अपनी इस मसनवी की कथा “सैफुल मुलूक” नाम की एक फ़ारसी गद्य की पुस्तक से लिया है। यह पुस्तक

इंडिया आफ्रिस और ब्रिटिश म्यूजियम के पुस्तकालयों में उपलब्ध है। इस पुस्तक के लेखक का पता नहीं है। पुस्तक के प्रारंभ में जो भूमिका दी गई है; उसका सारांश निम्नांकित है :—

सुल्तान महमूद गज़नवी को कहानियों के सुनने का बड़ा शौक था। जो कोई एक दिलचस्प कहानी पेश करता; वह इनाम पता। सुल्तान का वज़ीर इस प्रकार धन लुटाए जाने से बड़ा परेशान था; उसने स्वयं एक दिलचस्प कहानी उपस्थित करने का निश्चय किया।

वज़ीर एक वर्ष का अवकाश लेकर घूमने के लिए निकला और दमिश्क के बादशाह के दरबार में पहुँचा। वहाँ उसे पता चला कि बादशाह के पास एक कहानियों की पुस्तक है; जिसमें बहुत सी दिलचस्प कहानियाँ संग्रहीत हैं। उसने बड़ी कठिनाई से उस पुस्तक को प्राप्त किया और उन कहानियों को सुल्तान महमूद के सामने उपस्थित किया। उस पुस्तक में तीन कहानियाँ थीं :—(१) बोस्तान एरम; (२) सैफुल मुलूक और (३) शाहपाल बिनशाह रुख की कहानी।

उपर्युक्त कहानी का कोई ऐतिहासिक महत्व हो या न हो उससे इतना पता अवश्य चलता है कि जिस लेखक ने फ़ारसी गद्य में सैफुल मुलूक की कहानी लिखी; उसे भी यह कहानी किसी अन्य पुस्तक से प्राप्त हुई।

कुछ लेखकों ने संभवतः विलियम हार्ट के कथन के आधार पर इस बात को स्वीकार कर लिया है कि ग़वासी ने सचमुच अपनी इस मसनवी का कथानक फ़ारसी गद्य में लिखी उपर्युक्त पुस्तक से लिया। उन्होंने इस बात के लिए ग़वासी की काफ़ी लानत-मलामत भी की है कि उसने अपनी रचना में न उस पुस्तक की चर्चा की है और न उसके लेखक के प्रति कोई कृतज्ञता व्यक्त की है; जिस पुस्तक से उसने अपनी मसनवी का कथानक लिया है।

वस्तुतः ऐसा प्रतीत होता है कि ग़वासी को इस कथानक का थोड़ा बहुत रूप लोक कथाओं के रूप में प्राप्त हुआ होगा और उसने पुनः अपनी प्रतिभा से उसे साहित्यिक रूप दिया होगा। सैफुल मुलूक के कथानक की जो फ़ारसी गद्य की प्रति उपलब्ध है; उसमें एवं ग़वासी की इस मसनवी के पात्रों के नाम एवं कथानक के रूप में भी स्थान स्थान पर बड़ा अन्तर है। अस्तु; केवल विलियम हार्ट के कथन के आधार पर ग़वासी की इस मसनवी को किसी दूसरी पुस्तक का अनुवाद-मात्र मान लेना ग़वासी और उसकी प्रतिभा के प्रति बड़ा अन्याय होगा।

उपलब्ध-प्रतियाँ :

१—सालारजंग म्यूजियम; हैदराबाद के पुस्तकालय में सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल की तीन हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं —

(क) पहली प्रति ८×६ इंच आकार की है। इसमें शेरों की संख्या १८२२ है।

देखने में प्रति पूर्ण मालूम होती है, किन्तु बीच-बीच में अन्य प्रतियों में प्राप्त कुछ शेर नहीं हैं। पुस्तक में सम्पादक और संपादन काल के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा है किन्तु अक्षरों की बनावट और लिखने के ढंग से पता चलता है कि प्रति पुरानी है।

(ख) दूसरी प्रति क्राउन साइज़ की है। इसमें शेरों की संख्या १८७२ है। पुस्तक में सम्पादन-काल १०६७ हिजरी लिखा है। पुस्तक में सम्पादक का नाम नहीं है।

(ग) तीसरी प्रति डेमी साइज़ की है। इस प्रति में तीन पुस्तकें एक साथ सम्पादित की गई हैं। पहले मुक्कीमी की रचना चन्दन बदन महरथार; उसके बाद आजिज़ की रचना लैला-मजनूँ और अन्त में गवासी की सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल संपादित है। पुस्तक के अन्त के कुछ पृष्ठ नहीं हैं अस्तु; सैफुल मुलूक का अंश पूर्ण नहीं है। इस प्रति का संपादन करने वाला रहमतुल्ला नाम का कोई व्यक्ति था; जो दिल्ली का रहने वाला था किन्तु पुस्तक का संपादन उसने औरंगाबाद में रह कर किया। सम्पादन काल ११५७ हिजरी है।

२—निजाम कालेज हैदराबाद के रियायट उर्दू प्रोफेसर श्री आगा हैदर हसन साहब के पुस्तकालय में भी सैफुल मुलूक की एक प्रति मौजूद है। इस प्रात में भी नुसरती के 'गुलशन-इश्क' और 'सैफुल मुलूक' दोनों का सम्पादन एक ही पुस्तक में किया गया है। इस प्रति का सम्पादक दक्खिनी का प्रसिद्ध कवि वज्दी है, जिसकी 'पंछीवाचा' नाम की रचना उपलब्ध है। इस प्रति में वज्दी के लिखे कुछ शेरों से पता चलता है कि उसने इस प्रति का संपादन इस्माइलखा नाम के किसी व्यक्ति के कहने पर ११३८ हिजरी में किया।

३—इदारे अदवियाते उर्दू; हैदराबाद के पुस्तकालय में इस पुस्तक की एक प्रति है। इस प्रति में ११४ पृष्ठ हैं; प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तियाँ हैं। पुस्तक ७½×४½ इंच आकार की है। पुस्तक का सम्पादक जैनुन् आबदीन हुसेनी ने १२२६ हिजरी में किया।

४—उपर्युक्त प्रतियों के अतिरिक्त "यूरोप में दक्खिनी मखतूतात" के लेखक श्री नसीरुद्दीन हाशमी ने योरोप के पुस्तकालयों में प्राप्त कुछ और प्रतियों की चर्चा की है :—

(क) "सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल" की एक प्रति इंडिया आफ्रिस के पुस्तकालय में सुरक्षित है। इस प्रति का संपादक अज़ीजुल्ला नाम का व्यक्ति है और इसका संपादन काल ११३३ हिजरी है।

(ख) पुस्तक की दूसरी प्रति ब्रिटिश म्यूजियम पुस्तकालय के ओरियंटल विभाग में है। इस प्रति का संपादन काल ११५६ हिजरी है। संपादक के नाम का

पता नहीं है ।

- (ग) क्रेम्ब्रिज विश्व विद्यालय के पुस्तकालय में इस पुस्तक की दो प्रतियाँ उपलब्ध हैं । इन प्रतियों के संपादन काल एवं संपादक का पता नहीं ।

५—उपर्युक्त हस्तलिखित प्रतियों के अतिरिक्त यह पुस्तक दो स्थानों से फ़ारसी लिपि में प्रकाशित हो चुकी है :—

- (क) सन् १८७१ में यह पुस्तक हैदरी प्रेस; बम्बई की ओर से प्रकाशित हो चुकी है ।
- (ख) हैदराबाद में नवाब सालार जंग की संरक्षता में कुछ विद्वानों की एक उपसमिति बनी । उस उपसमिति ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है । पुस्तक सन् १९४६ में प्रकाशित हुई और इसका संपादन श्री मीर सआदत अली रिज़वी ने किया है ।

प्रस्तुत पुस्तक का संपादन दोनों छपी हुई पुस्तकों और इदारे अदबियाते उर्दू के पुस्तकालय में प्राप्त प्रति के आधार पर किया गया है । हम इन पुस्तकों के संपादकों के आभारी हैं ।

पुस्तक में कुछ स्थानों पर प्रूफ की अशुद्धियाँ रह गई हैं । भाषा पुरानी होने के कारण संभव है कुछ और त्रुटियाँ रह गई हों; हम उनके लिए क्षमा प्रार्थी हैं ।

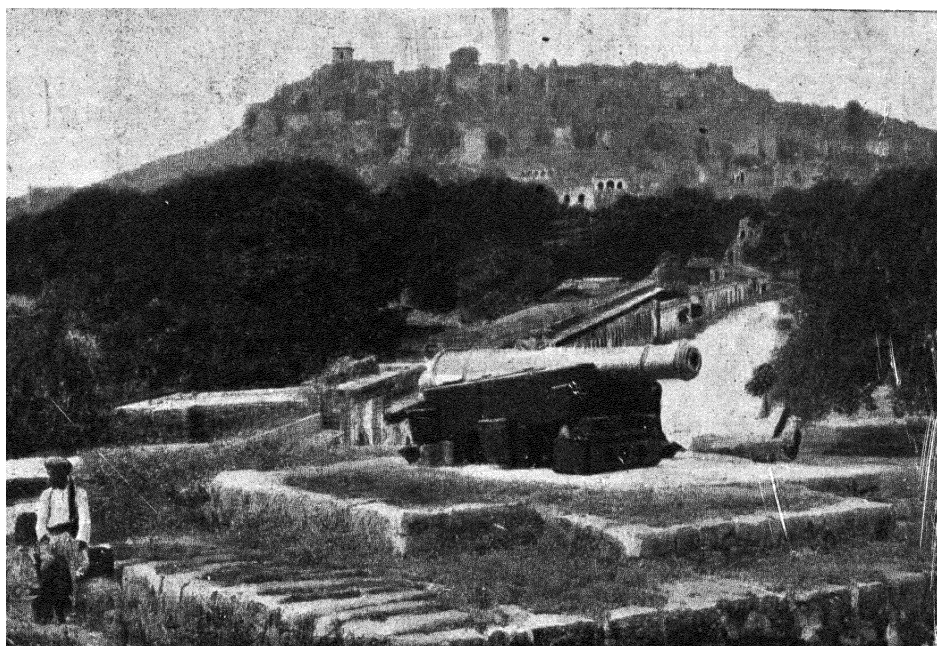
हैदराबाद (दक्षिण) }
२१ दिसम्बर; ५४ }

राजकिशोर पाण्डेय
अकबरुद्दीन सिद्दीक़ी

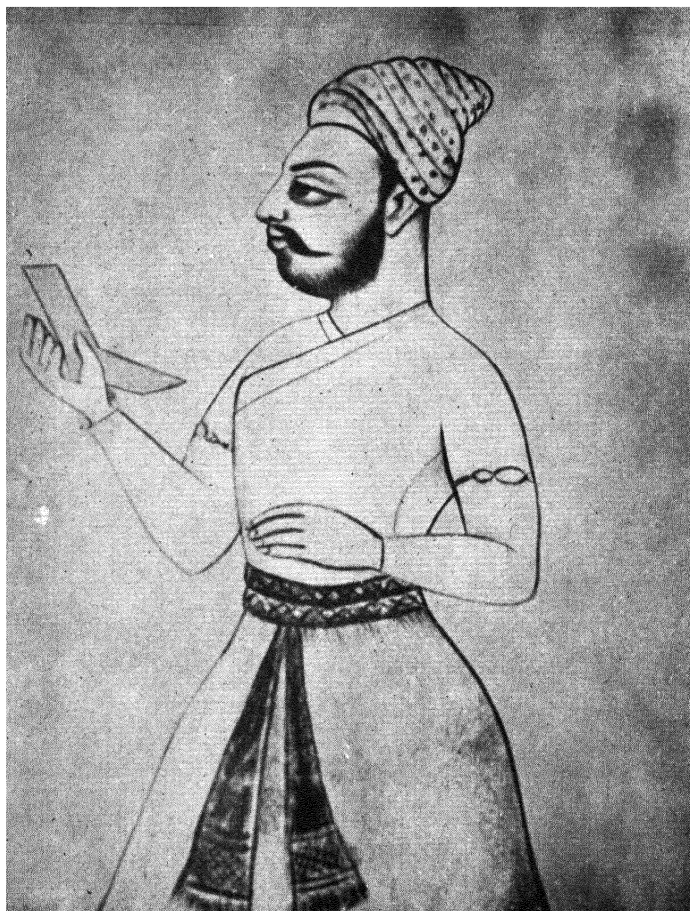
विषय—सूची

क्रम सं०	नाम	पृष्ठ संख्या
१	हम्द	१
२	दुआ	३
३	नात	५
४	हज़रत अली की तारीफ़ में	७
५	मीराँ मुहीउद्दीन की तारीफ़ में	१०
६	सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह की तारीफ़ में	१२
७	सुलुन की तारीफ़	१६
८	कुछ अपने बारे में	१६
९	दास्तान का आगाज़	२६
१०	सैफुल मुलूक का पैदा होना	४१
११	सैफुल मुलूक को दरबार में बुलाना	४४
१२	तस्वीर पर रीझना	४६
१३	इश्क़ में दीवाना होना	४८
१४	सैफुल मुलूक का इलाज	५०
१५	साअद का सैफुल मुलूक के सामने जाना	५२
१६	परियों का ज़री का कपड़ा लाना	५५
१७	गुलिस्तान-एरम की खोज	५८
१८	सैफुल मुलूक का जवाब	६२
१९	गुलिस्तान-एरम की खोज में जाना	७०
२०	हब्शियों की कैद में	७३
२१	कैद से निकल भागना	८०
२२	एक द्वीप में आना	८२
२३	बन्दरों की कैद में पड़ना	८५
२४	कफ़्तारों का कैदी होना	८७
२५	राक्षसों के द्वीप में पहुँचना	९१
२६	सकसारों के हाथों में गिरफ़्तार होना	९३
२७	दिवाल पायों के हाथ में पकड़ा जाना	९७
२८	कैसरिया शहर में पहुँचना	१०१

२६	कैसरिया से खाना होना	१०६
३०	इस्फन्द नाम के द्वीप में पहुँचना	११६
३१	शाहज़ादी को पाना	११६
३२	शाहज़ादी के साथ दोस्ती	१२१
३३	बदीउल जमाल के बारे में खबर मिलना	१२४
३४	दैत्य का मारा जाना	१२६
३५	ताजुल मुलूक से भेंट	१३१
३६	शाहज़ादी के घर जाना	१३८
३७	साश्रद का मिलना	१४१
३८	बदीउल जमाल का संगदील आना	१४६
३९	बदीउल जमाल से मिलना	१५६
४०	बदीउल जमाल का डेरे में आना	१६८
४१	सैफुल मुलूक का सीमीपटन जाना	१७२
४२	देवों के द्वारा पकड़ा जाना	१८१
४३	सैफुल मुलूक का कंद से छूटना	१८५
४४	बदीउल जमाल से शादी	२०३
४५	जलवा	२०८



गोलकुण्डा



मुल्ला शवासी

हम्द^१

इलाही जगत का इलाही सो तूँ
करनहार जम^२ बादशाही सो तूँ

तेरे हुक्म तल नौ गढ़^३ आसमान के
रैय्यत मलक^४ तेरे फ़रमान के

भर्या तिस गढ़ाँ बीच तारे हशम^५
करें नौवताँ^६ सूँ उलंग^७ दम बदम

फ़रंग्याँ^८ सूँ बिजल्याँ के रुचसाज़^९ तूँ
जुहल^{१०} कूँ रख्या कर फ़रंगदाज़^{११} तूँ

जहाँ लग जो बादल के हैं गड़गड़ात
तेरी फ़तह^{१२} दौलत दमामे के ठाट

हती^{१३} तेरे दरबार के फाड़^{१४} सब
छड़ीदार तुज^{१५} दार^{१६} के भाड़ सब

जो बारह इमामाँ हैं उन पर सलाम
सो बारह सिलहदार^{१७} तेरे मुदाम^{१८}

नग्याँ हौर बाज़े वल्याँ हैं जिते
तेरे दार के सरगुरु^{१९} हैं विते^{२०}

तेरी बादशाही को कुछ अन्त नई
तेरे मुल्क में शैर को फ़न्त^{२१} नई

१ ईश्वर की स्तुति २ हमेशा ३ इस्लाम के अनुसार आसमान के ६ खण्ड ४ फरिश्ते
५ शान शीकत वाले ६ बारी बारी से ७ लॉधना, छलॉग मारना ८ तलवार ९ रुचि के
साथ सजाना १० ग्रह विशेष (शनिश्चर) ११ सिपाही १२ फ़तह की दौलत, विजय का
धन, विजय के बाद बजने वाले बाजे १३ हाथी १४ पहाड़ १५ तुम्ह; तुम्हारे १६ द्वाग
१७ सन्तरी १८ हमेशा १९ बड़ा दर्जा रखने वाले २० उतने ही २१ पन्थ, रास्ता ।

खज़ीने^१ भरथा ग़ैब के ग़ैब ते^२
हुआ तू अपे^३ पाक फिर ऐब ते

बसाया है तिर्जग^४ का एक हाट तू
दिखाया हर एकस^५ कूँ एक बाट तू

खुलाया जनत की किवाड़ां तुहीं
बँधाया शफ़क़^६ के पहाड़ां तुहीं

चँदा में ते तू चन्दना काढ़ता
सूरज ते गरम धूप तू पाड़ता^७

दिखाता तमाशे अजब दूर थे
दिपार्ता है लख नूर एक नूर थे

हरथा कर रख्या तू जमीं सात कूँ
दिया रंग फल फूल हौर पात कूँ

नवे फूल डाल्याँ पे बार आई सो
वो तशरीफ़^८ है तुज कने पाई सो

जो कुछ तू करे सो सरे^{१०} जम तुभे
सदा सेवे मिल सात आलम तुभे

ग़वासी जो तुज दार क़ ख़ाक है
तेरी बाट का महज़ ख़ाशाक^{११} है

दिखा कीमियाँ कर तू मुभ ख़ाक कूँ
दे रंग बास मुज दिल के फल फाँक कूँ

१ खज़ाना २ ग़ैब के खज़ीने ग़ैब ते भरथा—बहुत से ऐसे खज़ाने, जो लोगों को मालूम न थे, उन्हें अनजाने दंग से तू ने भर दिया है। ३ आप, स्वयं, खुद ४ त्रिजग, तीनों लोक ५ हर एक को ६ प्रातःकाल और सायंकाल आकाश की लालिमा ७ (मराठी) निकालना ८ दीस करता, प्रकाशित करता ९ खिल्लत, बादशाह की ओर से इनाम के रूप में प्राप्त हुआ लिबास १० मुनासिब ११ तिनका।

दुआ

रहीमा सच्चा तू रानी^१ होय रे
शानी तुज अगैर अज़^२ नहीं कोय रे

तू मक़बूल^३ है मुक़बिलाँ^४ का सच्ची
तू ही नूर रौशन दिलाँ का सच्ची

जो कोई ज़िन्दा दिल है तू उनका हयात^५
जो कोई होवे तुज साथ तू उनके साथ

जो हूँ या इलाही तेरा दास मैं
किया हूँ बहुत एक तेरी आस मैं

तू मुज दास पर खोल दर्^६ फ़ैज़^७ का
मेरे मन मनेँ^८ भर असर फ़ैज़ का

तरावत^९ दे मुज आस^{१०} के बाग़ कूँ
दवा अश^{११} मुझ दर्द के दाग़ कूँ

चफ़ा में बड़ा कर जवाँमर्द मुज
तेरे बाट का करके रख गर्द मुज

अता कर मुझे कुच तेरे नावँ सूँ
दे परवाज़ मुजकूँ बलन्द धावँ^{१२} सूँ

तेरे नूर की रह दिखाना मुझे
दिला आक़ेयत का बिछाना मुझे^{१३}

जिलादे मेरे जीव की आभा कूँ
दे रंग बास मुज दिल की फल फाँक कूँ

१ जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता न हो २ तेरे सिवा ३ प्राप्ति ४ भक्त ५ जीवन
६ दरवाज़ा ७ कृपा ८ मैं ९ तरावट १० आशा का बाग़ ११ ऊँचा धाम, ऊँची जगह,
मन की ऊँची स्थिति १२ दिला.....मुझे—क्रयामत के समय आराम का बिछौना दे ।

सदा कस्व^१ मेरा सो एइलास^२ कर
तेरे खास वन्दों में मुज खास कर

जका^३ जोत तुज ध्यान केरा रतन
मेरे मन के सन्दूक में रख जतन

हुमाँ^४ कर मुजे बाट के औज का
शहंशाह कर ज्ञान की फौज का

मसीहा का दे मुजकूँ आसार जम^५
मेरी जीव कूँ कर शकर^६ बार जम

भर अमृत के चश्मे मेरे किल्क^७ में
रतन शैब के ल्या मेरे सिल्क^८ में

जो गवास हो तुज सराता^९ अछूँ
नवे मज़मुना धुन्द^{१०} ल्याता अछूँ

ब हक्के^{११} नबी है जो तेरा रसूल
मुनाजात^{१२} गवास का कर कबूल

१ प्राप्त किया हुआ २ मुहब्बत से प्राप्त करने दे ३ जगा ४ एक विशेष पक्षी, जिसके सम्बन्ध में विश्वास है कि उसकी छाया जिस पर पड़ जाती है, वह बादशाह हो जाता है ।

५ मसीहा.....आसार जम—मुझे मसीहा की शक्ति दे ६ मिठास बरसाने वाली ७ कलम ८ लड़ी; विचारों की लड़ी ९ तेरी सराहना करता रहूँ १० हूँदना ११ नबी के नाम पर १२ प्रार्थना ।

नात^१

सच्चा तूँ मुहम्मद सच्चा मुस्तफ़ा
सच्चा है तूँ अहमद सच्चा मुरतुज़ा^२

तूँ ताहा तूँ यासीन तूँ अबतही^३
तूँ उम्मी^४ तूँ मक्की^५ तूँ मुरसिल^६ सही

तूँ अव्वल तूँ आखिर^७ तू ही है अमीर
तूँ ज़ाहिर तूँ बातिन^८ नबी बे नज़ीर

तुही हाशमी हौर कुरैशी^९ रसूल
जो कुछ तूँ कहे सो करे रब कुबूल

तूँ क़ायम तूँ हुज्जत^{१०} तूँ हाफ़िज़ सच्चा
तूँ शाफ़े^{११} तूँ साबिक़ तूँ वायज़^{१२} सच्चा

तक्की^{१३} हौर सख़ी तूँ वली हौर खलील^{१४}
दिया तुज नबी नाँव रज़ुल् जलील

खुदा के नब्याँ^{१५} का सो सुल्तान तूँ
देवनहार सांग्याँ कूँ ईमान तूँ

तूँ साहब सच्चा है जगत तीन का
सदा तुज थे मामूर^{१६} घर दीन का

तूँ ज़ाहिर तूँ पिन्हा^{१७} अछे सब सिते^{१८}
वले^{१९} हर कड़ी मिल अछे रब सिते

१ पैग़म्बर की तारीफ़ २ मुहम्मद, मुस्तफ़ा, अहमद, मुरतुज़ा, ताहा, यासीन—पैग़म्बर के नाम ३ बतहा, मक्का का पुराना नाम है। मक्का में रहने वाले को अबतही कहेंगे। ४ जिस को पढ़ने लिखने की आवश्यकता न हो ५ मक्का का रहने वाला ६ रसूल, खुदा का संदेश पहुँचाने वाला ७ मुहम्मद साहब के लिए यह विश्वास है कि वे सृष्टि में सर्व-प्रथम पैदा हुए तथा ये सभी पैग़म्बरों में अन्तिम पैग़म्बर हैं ८ अप्रत्यक्ष ९ मुहम्मद साहब का ख़ानदाना नाम १० प्रमाण ११ क़ायम के समय अच्छे लोगों के सहायक १२ शिष्या देने वाला १३ परहेजगार १४ दोस्त १५ नबी का बहुवचन १६ आबाद १७ अप्रत्यक्ष १८ से १९ लेकिन।

जमीं से अरश^१ पर गए शह सवार
 करे तू गुज़र पल में कई लाक बार
 मलायक^२ यू परवाना तुज नूर के
 वल्ल्याँ सारे ज़रें हैं तुज सूर के
 तलब का जो सर पर रख्या ताज तू
 दिया तिल में जा नूर मेराज^३ तू
 खुदा हौर तुज में जुदाई नहीं
 किसे रब सूँ यूँ आशानाई नहीं
 हतेली तेरा लौह^४ उँगली कलम
 तेरी मुश्त में अर्श कुर्सी है जम
 खुदा का जो आलम है, हेजदाहज़ार^५
 रख्या है तरे छाँव तल बरकरार
 तू जिस टाँव अपना रखे पाँव तू
 तो दर हाल जिव आवे उस डार कूँ
 ज़बाँ देवे तू बेज़बानों के तर्ई
 फ़रह-बख़्श^६ जीवाँ के कानाँ के तर्ई
 तुही मौजज़्याँ^७ कूँ सो दिखलान हार
 तुही सब कूँ जन्नत में लेजानहार
 ग़वासी जो सबका है तुज नाँव पर
 फिदा जिव है उसका तेरे पाँव पर
 नबी के अनाबक^८ असहाब हैं
 सो दूसरे उमर इब्ने-खत्ताब हैं
 सो उस्माँ नबी के बड़े यार हैं
 हमेशाँ वो उनके वफ़ादार हैं

१ आठवाँ आसमान, खुदा का स्थान २ फरिश्ते ३ यह विश्वास है कि मुहम्मद साहब खुदा के पास गये और सातों आसमान की सैर करके बहुत थोड़ी देर में वापिस आगये। मुहम्मद साहब का यह पूरा काम मेराज कहलाता है। ४ स्लेट ५ अठारह हजार ६ खुशी देने वाला ७ करामत ८ अनाबक, उमर इब्ने खत्ताब, उस्मान पहला दूसरे और तीसरे खलीफा।

हज़रत अली की तारीफ़ में

तू है सात जग का वली या अली^१
वल्याँ तेरे जग के कुली या अली

जो कोई ग़ौस है कुतुब अक़ताब हैं^२
जो कोई जलालत^३ के असहाब^४ हैं

वो हैं खाक हो जम तेरे पाँव तल
करें ज़िन्दगानी तेरे छावें तल

धरत गुम मुठी में तेरे यूँ दिसे
कि दो मरज़^५ बादाम में ज्यों दिसे

कि तू वो कलीम^६ आज मगरूर है
जो खाँदा^७ नबी का तेरा तूर^८ है

जो सीमुर्ग^९ है क़ाफ़ ठारा उसे
तेरा याद दायम है चारा उसे^{१०}

पहाड़ों तेरे दास कहवावें सब
“चल आवे” कहे तू तो चल आवें सब

दिखावे जलालत के जो घात तू^{११}
भरे ल्या घड़ी में समन्द सात तू

तिल उतना ग़ज़ब कर जो तू दूर होय
भँडोली नव अंबर की फट चूर होय

१ चौथे खलीफ़ा २ सन्तों के विभिन्न प्रकार ३ बुजुर्गी ४ साहब का बहु वचन ५ बादाम के भीतर का बीज ६ मूसा पेगम्बर दूसरा नाम ७ कन्धा ८ एक विशेष पहाड़, जिस पर खुदा ने अपना ‘नूर’ गिराया, जिसे देख कर मूसा बेहोश हो गए । ९ तुममें मूसा के मुक़ाबिले में भी इस बात का गौरव हासिल है कि मूसा तो खुदा के नूर को न देख सके किन्तु तुम नबी के कन्धे पर रहकर खुदा के नूर को देख सके । १० जो सीमुर्ग काल्पनिक पक्षी है, वह भी तेरी याद के बिना जीवित नहीं रह सकता । ११ जलालत के घात दिखाना—शक्ति प्रदर्शन करना ।

खड़ा होय अगर हठ सों एक साथ तूँ
न फिरने देवे दीस^१ हौर रात कूँ

भुजंग धरत सों आ निकल खाक थे
रह्या भार ले सर पे तुज धाक थे

करामत थे तेरे कंकर फाड़ होंयें
सुकी डालियाँ सब हरे भाड़ होंयें

विलायत के आसमान थे भार ज्यों
तेरा खर्ग निकल्या सूरज-सार ज्यों^२

चन्दर तारे दहशत सों छुप गए तमाम
सेह^३ मक्र^४ करने थे सब रहे तमाम

गगन जो अहे नाग फन सात का
पड़े ज़र्द^५ उस पर जो तुज हात का

सो सातों फन उसके पड़े टूट कर
जमीं टुकड़े हो जाये सब फूट कर

कि फिर भाड़ गुल बर जमीं तुज को आये
शुजाअर्त^६ तेरा सुन मलक गड़बड़ाये

जो सब ठार तेरी दुराही^७ चले
सभी खन में तेरी जो शाही चले

जो कोई तुज विलायत^८ मने शक जो लाय
वो बेशक जो दोज़ख के दरम्यान जाय

फ़िदा या अली मैं तेरी बाट पर
सट्टूँ^९ खारजौँ^{१०} की मुड्याँ काट कर

१ दिवस २ विलायत.....सार ज्यों—वली की विशेषताओं के आसमान में तूँ सूर्य के समान प्रकट हुआ है । ३ (अरबी) जादू ४ धोखा ५ मार ६ बहादुरी ७ दुक़्क़मत ८ (मराठी) फेंकदूँ ९ अली के विरोधी ।

कल्ल बिर्द^१ अपना तेरा नावँ मैं
दुन्याँ दौलताँ . ग़ैब थे पाँउ मैं

बदन पर कल्ल जीव हर बाल कूँ
सराऊँ सदा तुज नवल लाल कूँ

रहूँ तुज थे जग में सरफ़राज़^२ हो
सदा तुज हवा में उड़ूँ बाज़ हो

तेरी पन्थ की धूल अंजन कल्ल
दरद दुःख कूँ एकवर^३ थे भंजन कल्ल

रहूँ तेरे बन्द्याँ मने खास हो
तेरी मदहूँ^४ दरिया में 'ग़व्वास'^५ हो

नज़र कर करम की तूँ मुँज पर मुदाम
तुज ऊपर हज़ाराँ दुरूह हौर सलाम

जो बाराँ इमामाँ बड़े राज हैं
चमामें^६ उनों को मेरे ताज हैं

तहय्यात^७ उनके उपर लाक लाक
मुखालिफ़ उन्हीं के अछो जम हलाक

१ बिरद, यश २ सम्मानित हो ३ एक इम ४ तारीफ़ की नदी ५ गोताख़ौर, कवि का नाम ६ जूते ७ दुआ के शब्द ।

मीराँ मुहीउद्दीन की तारीफ़ में

क़सम खाऊँ मैं सूरयेयासीन^१ सँ
कि हक़ बाद है जीव मेरा तीन सँ^२

हिमायत जो मुज बस अहे तीन का
मुहम्मद, अली और मुहीउद्दीन का

कि यू तीन सो एक हैं; दुई नई
दो देखे सो अहवल^३ बिना कोई नई

वल्याँ में वली सो मुहीउद्दीन हैं
मुक्करब^४ वली सो मुहीउद्दीन हैं

मुहिन्वाँ^५ जिते हैं सगल^६ तालिवाँ^७
यू महबूब के हैं वो सब मतलुवाँ^८

तुहीं गौस^९ आज़म सो मशहूर है
चिरागे नबी का तुँही नूर है

ख़ुदा के सो है शेर का शेर यू^{१०}
धरे सब मने तेज़ शमशीर यू

कि इस बात शाहिद^{११} है बन्दा नवाज़
मुहम्मद हुसेनी है रोसूदराज^{१२}

मुही उद्दीन का क़द्र उनों फ़ाम अपें
कहे है नवद और नुह नाम अपें^{१३}

१ कुरान का एक अध्याय २ कि हक़ बाद.....तीन सँ—ख़ुदा के बाद मैं इन तीन आदमियों को चाहता हूँ । ३ (अरबी) जिसको कोई चीज़ दो नज़र आती है ४ जो ख़ुदा के पास पहुँच चुके हैं । ५ दोस्त ६ (मराठी) सब ७ ढँढ़ने वाले ८ चाहने वाले ९ मुहीउद्दीन का दूसरा नाम १० ख़ुदा.....शेर तूँ—हज़रत अली शेर ख़ुदा कहे जाते हैं, तुम उनके शेर हो । ११ गवाह १२ बन्दा नवाज़, मुहम्मद हुसेनी, रोसू दराज दक्षिण के एक बड़े फ़कीर, जिनकी समाधि शुलबर्ग में है, उनका नाम तो मुहम्मद हुसेनी था और 'रोसूदराज' और 'बन्दा नवाज़' उनकी उपाधियाँ हैं । १३ मुहीउद्दीन.....नाम अपें—मुहीउद्दीन की क़द्र वही लोग जान सकते हैं, जो ख़ुदा के निन्यानवे नामों से पीरचित हैं ।

जो कोई जो मुही उद्दीन सँ फिर पड़े
 दुटे गर्दन उसकी तलें सर पड़े

उसे छोड़ जो कोई मँगे दीन कूँ
 नहीं दीन व ईमान उस हीन कूँ

न उसको खुदा ना मुहम्मद अली
 दिवाना कुता हो फिर हर गली

जो कोई एक दिल है मुही उद्दीन सँ
 सरअफ़राज़^१ है वो दुनियाँ दीन सँ

अछे जिस थे खुश यू वल्य़ाँ का वली
 खुश उसथे खुदा हौर मुहम्मद अली

कहे ग़ैन हौर वाव अलिफ़ स्वाद ये^२
 मुही उद्दीनियाँ कूँ अछे याद ये

जहाँ लग मुही उद्दीनियाँ^३ हैं तमाम
 हैं मक़बूल अल्लाह के वस्सलाम

१ इज्जत वाला २ कहे ग़ैन.....ये—ग़वास; कवि का नाम ३ मुहीउद्दीन के अनुगामी ।

सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह की तारीफ़ में

सो सुल्ताँ मुहम्मद कुतुबशाह गम्भीर
जग आधार है और जग दस्तगीर

चँदा चौदवाँ खुशरवी बुर्ज का^१
अमोलक रतन हुस्न के दुर्ज का

सगल पादशाहों में उसका है नाँव
उसी कुतुब का कुतुब तारा है छाँव

सुलेमाँ^३ के जो तख्त का नाँव है
अता शह कूँ वो तख्त का ठाँव है^४

पर्याँ देव आवें वतन छोड़ सब
खड़े हो रहें डरते हत जोड़ सब

नित इस शह के सेवक हों सेवें तमाम
देखन शाह कूँ यूँ कहलेवें तमाम

“मगर फिरके दुनियाँ में औतार हो
सुलेमान आया तख्त सवार हो

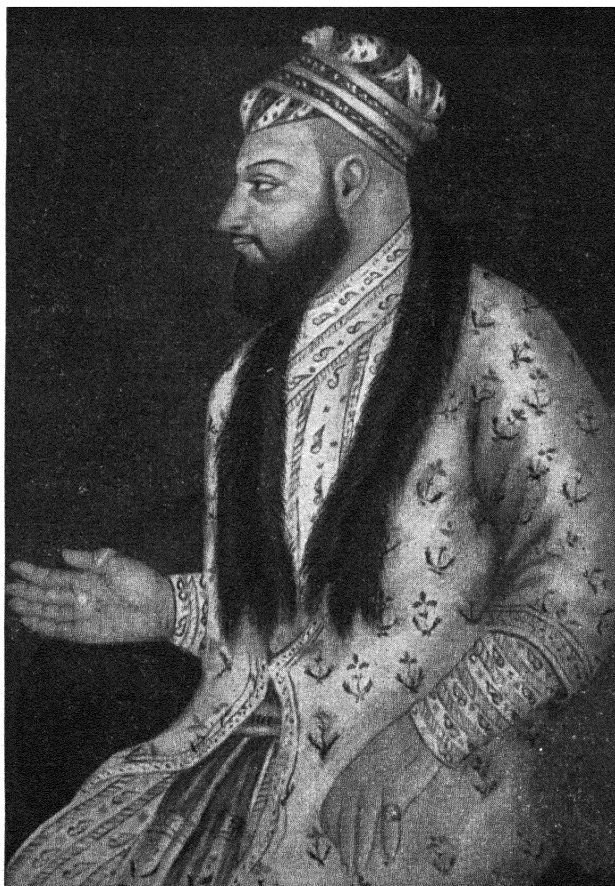
अजब क्या जो शाहों मिल आवें तमाम
सो बन्दगी का खत^५ देके जावें तमाम

जलालत भर्या हाल देख शाह का
कलजा फटे मेह्र और माह^६ का”

१ चँदा चौदवाँ.....बुर्ज का—बादशाहत के आसमान में मुहम्मद कुतुब शाह चौदहवें चाँद के समान हैं। २ रत्न रखने की डिब्बिया ३ इस्लाम के एक पैगम्बर; जिनका तख्त बड़ा मशहूर है। कहा जाता है कि हजरत सुलेमान जहाँ जाते थे, जिन और परी उसे ले जाते थे क्यों कि वे उन की रियाया थे। ४ अता.....ठाँव है—मुहम्मद कुली कुतुब शाह को हजरत सुलेमान का वही तख्त मिला है। ५ बन्दगी का खत देना, गुलामी का दस्तखत लिखाना ६ सूरज और चाँद।



अब्दुल्ला कुतुबशाह



इब्राहीम कुतुबशाह

किये अद्दल^१ यू शह हर एक ठाँव सँ
कि नवशेरवाँ का छिया नाँव सँ

दिलेरों सो हैशत थे हलते डरें
गव्वाँ^२ में थे शेरों निकलते डरें

इसी शह दिलावर के डर वास्ते
सितारे खड़े हों न सक न्हासते^३

अगर शह जो फ़रमावे एक तार कूँ
चलाता लेकर आवे संसार कूँ^४

बचन सुन के याजूज^५ शह धाक ते
छुपा जाके पाताल में खाक ते

कुवत शह का पाकर मखी सारकी^६
थपेड़ाँ सो रुस्तम के मुख मारती

हिमायत सो शह आदिल का पावकर
बदल जा वतन कर रखा बाव पर

दिसे शह कूँ यूँ हात तेग आचदार
कि हैदर के ज्यूँ हात में जुल्फ़कार^७

जम उस शह कूँ यूँ कामरानी^८ सजे
अदालत में नौशेरवानी सजे

अगर इल्म की बात पूछे जिसे
अँदाजा नहीं मारते दम किसे^९

कि है शह को रोशन गुप्त राज़ सब
छुवे ग़ैब के जो हैं आवाज़ सब

१ इन्साफ़ २ शेर की माँद ३ भाग नहीं सकते ४ अगर.....संसार कूँ—अगर बादशाह एक तार का भी हुक्म दे दे तो वह संसार को खींच कर लायेगा । ५ एक फ़रिश्ते का नाम है, जो गुनाह करने के कारण पाताल में उल्टा लटका दिया गया है । ६ सरीखा ७ हज़रत अली की तलवार का नाम ८ कामयाबी ९ अगर.....किसे—बादशाह इतना बड़ा आलिम है कि उसके सामने कोई आलिम होने का दावा नहीं कर सकता ।

अगर कोई लेवें गूँद^१ कुच दिल मनें
कहे खोल शह फाम^२ कर तिल मनें

मँगे दिल जो टुक शाहे गंभीर का
पवन पर बँधावे महल नीर का

लटकता जो शह जावे जिस ठाँव चल
हवा आ पड़े फर्श हो पाँव तल

अंबर सात जो गिर्द घेरे अहें
सो शह के रँगारंग^३ डेरे अहें

रज़ा शह की होवे ज़रा चूर का
लेवे तिल मनें तख्त चन्द सूर का

खज़ीने जो हैं शह के भर पूर हो
जवाहिर के हैं ऐव सन्दूर^४ हो

जिता उस खरचते तो सरता^५ नहीं
जिता ल्याके भरते तो भरता नहीं

न ऐसा कहीं शाह सुजान है
न ऐसा दिलावर कहीं ज्वान है

न शह सार सूरज किस असमान में
न शह सा रतन है किसी खान में

फिदा शह पे चन्द सूर असमान के
जिते हैं रतन जग केरे खान के

गवासी जो शायर है शह का मुदाम
करे यूँ दुआ शह कूँ सुबह-शाम

जहाँ लग यूँ दुनियाँ बसन-हार है
जहाँ लग यूँ अंबर निराधार है

जहाँ लग अहो शह की शाही करार
रखे अमन सँ शह कूँ परवरदिगार

अहो दोस्ताँ शह के शह दाँव तल
दन्दे^१ हौर सब दुश्मनाँ पाँव तल

कि शह घर सदा ऐश का काज अछो
बसे लग दुन्याँ शाह का राज अछो

१ दन्द रखने वाले; प्रतिद्वन्दी ।

सुष्ठु^१ की तारीफ़

कलम काफ़ व नून थे जो निकला बहार
सो पहले बचन कूँ किया आशकार^२

बचन का पड़ा नाद सरोँ मने
किया टार आ जीव के तन मने

जो कुछ राज़ पर्दे में हैं ग़ैब के
जो कुछ हैं छिपे भेद लारि^३ के

विते सब बचन में समाते अहे
बचन में च थे भार आते अहे

बचन थें सदा जीव कूँ रुच है
बचन तेच भरपूर सब कूच है

बचन अर्शकुसी^४ पोथे^५ धाए हैं
बचन आदमी के बदल आए हैं

बचन का फ़ज़ीलत^६ जम ऊँचा अहे
बचन के न कोई हद का पहुँचा अहे

बचन का अहे गर्म बाज़ार जम
बचन कूँ पुरोहे हर एक टार जम

बचन तेच होवे खुदा का सिफ़त
बचन ते होवे नात^७ और मनक़ेवर्त

बचन ते शहाँ कूँ सराते अहे
बचन तेच बहु मान पाते अहे

१ बचन, कविता २ कलम.....आशकार—कलम जब अस्तित्व में आई तो उससे कविता निकली । ३ (अरबी) इसका शाब्दिक अर्थ है, जिस में कोई सन्देह न हो । यहाँ खुदा के लिए इसका प्रयोग किया गया है । ४ आठवाँ आसमान, जहाँ खुदा रहता है । ५ पर से ६ बुजुर्गी महत्व ७ पैगम्बर की तारीफ़ ८ फ़कीर और महात्माओं की तारीफ़ ।

बचन ते सवालों जवाबों होवें
बचन ते हिसाबों किताबों होवें

बचन ते मुरादों जगत पावते
बचन थे मुलुक हौर गढ़ाँ आवते

बचन थे भले और बुरे काम सब
हर एकस कूँ होते अहे फ़ाम^१ सब

बचन तेच होवे सदा सुलहो जंग
बचन तेच हासिल होवे नावें व नंग^२

बचन थे हुई फ़ाम नेकी बदी
बचन थे हुवे मुन्तही^३ मुन्तदी^४

बचन थे दिलाँ हाथ लेते अहे
बचन थे किते जीव देते अहे

बचन थे चले दीन व दुनियाँ तमाम
बचन के हैं मुँहताज सब खास व आम

बचन थे घरों होवते हैं खड़े
बचन तेच होते हैं लोगों बड़े

बचन मोती हैं जीव के कान के
बचन पर थे वारें रतन खान के

बचन की यू भलकार नौ भान में
सितारा नहीं है किस असमान में

बचन ग़ैब के हैं अजब जौहरों
बचन के सो हैं जौहरी शायरों

बचन के समन्द का हूँ शब्बास मैं
धरन हार हूँ मोतियाँ खास मैं

१ किले २ मालूम होना ३ नेकनामी, बदनामी ४ माहिर, पारंगत ५ जिसने किसी काम को सीखना शुरू किया हो ।

जगत जौहरी सब मेरे पास आए
मेरे खास मोतियाँ कूँ जीव कर ले जाए

चढ़े हात मोती यूँ जिस राज के
तो सर पर रखे जोड़ उपर ताज़ के

उनन का ब्रह्मा^१ कोई दे ना सके
बग़ैर राज भी कोई ले ना सके

कुछ अपने बारे में

जो एक दिस^१ निकल मैं सहरगाह^२ कर
चल्या फूल बाड़े कदन^३ ख्याल धर

सो यूँ कुछ वहाँ फूल बार आये थे
सबज़पोश डाल्यो पे भलक आये थे

मगर पाच^४ सँ शमा के भाड़ कर
दिवे ल्याये थे नूर के सर बसर^५

मेरा रूह परवाने के सारका^६
जो आशिक है नूरों की भलकार का

देख इस शमा के भाड़ कूँ नूर के
लग्या फिरने खुश खोल पंख सूर के

मुँजे हालत इस ठार पैदा हुवा
सआदत^७ केरा दिन हुवेदा^८ हुआ

मेरे बस्त का सूर भलक आइया
मुख इकबाल चौधर थे दिखलाइया

किवाँडों खुले सब मेरे फ़ाम के
खिले फूल मक़सूद^९ के काम के

मेरा जीव बुलबुल हो बोलन लग्या
छुपे ग़ैब के नग़मे खोलन लग्या

हुवा अक़ल का दस्त माया मुझे^{१०}
तो इस धात खातिर में आया मुझे^{११}

१ दिवस, दिन २ सुबह के समय ३ की तरफ ४ 'जमरूद' नाम का विशेष वेशक्रीमती पत्थर जिसका रंग हरा होता है ५ मगर पाच ... सर बसर—हरे वृक्षों की तुलना जमरूद की शमा से और फूलों की तुलना चिराग की लौ से की गई है ६ सरीखा ७ (अरबी) भाग्य ८ प्रकट होना ९ उद्देश्य १० हुवा अक़ल... मुझे—अक़ल का हाथ मेरा दोस्त बन गया ११ तो इस धात खातिर में आया मुझे—इस तरह यह बात मेरे दिल में आई।

कि पंजावो ना दिल ते ताज़ा निगार
जो दुनिया में अपना अछे यादगार^१

मैं यूँ बोल पूरा किया नई लगूँ
निदा^२ ग़ैब का आइया मुझको यूँ

कि ऐ ताज़े नक्शों^३ कूँ पहचान हार
बचन ग़ैब के ढूँढ़ ढूँढ़ ल्यान हार

बना एक तरह तूँ कि यूँ वक्त है
तूँ सँ यार जो अब तेरा बख्त है^४

खुला है तेरे मुख पे दर फैज़ का
हुआ है अता तुज असर फैज़ का

निकल आ फ़साहत^५ के मैदान तूँ
बचन के तुरंग कूँ दे जौलान^६ तूँ

कि इस ठार तुज बिन नहीं कोई अब
ले जा तूँ बलागत केरा गोय अब^७

कि सैफुल-मुलूक हौर बदीउल्जमाल
यूँ दोनों हैं आलम मने बे मिसाल

उनन दुई का दास्ताँ बोल तूँ
सो दफ़्तर उनन इश्क का खोल तूँ

कि कई दास्ताँ जग में हो गए अहें
वले कोई ऐसा नहीं कए अहें

तेरे ताई आया है यूँ दास्ताँ
ज़फ़र^८ तुज कूँ लिया है यूँ दास्ताँ

१ कि पंजावो ... यादगार—दिल के अच्छे भावों को प्रकट करें जिनसे दुनिया में अपनी यादगार बाक़ी रह जाय २ नाद, शब्द ३ नए नए नक्शों, नई नई बातें ४ तूँ सँ ... बख़्त है—तक़दीर तेरा साथ दे रही है ५ शायरी ६ जौलान देना, एड़ लगाना ७ बला-गत ... केरा गोय ले जाना—ऊँची शायरी के गेंद को ले जाना ८ जीत ।

पड्या यू निदा जूँ मेरे कान में
खड़ा आ फ़साहत के मैदान में

मेरा दिल खज़ीना जो मामूर^१ है
बचन के जवाहिर सों भर पूर है

लगा रोलने ताई मैं जौहराँ^२
दिपाया तजल्यौ^३ में नौ अंबराँ

कया^४ शेर ताज़ा बड़े छन्द सों
हर एक बन्द बसलाइया^५ बन्द सों

जो लफ़्ज मिलाया रंगेली निछल
पुरोया जवाहिर का छेली^६ निछल

ख्यालौ के फौजाँ को दौड़ाइया
हज़ाराँ नवे तशबिहाँ लाइया

बनाया नवे मज़मुनाँ हौर भी
दिया तब्रा^७ को ज़ोर पर ज़ोर भी

रच्या बोल पर बोल यूँ रस भरे
जो इस थे मिठाई के बछराँ भड़े

मेरा ज्ञान अजब शकरिस्तान है
जो इस थे मिठा सब हिन्दुस्तान है

जिते हैं जो तूती^८ हिन्दुस्तान के
भिकारी हैं मुंज शक्करिस्तान के

शकर खा मेरे शक्करिस्तान थे
मिठे बोल उठे वो अपस ज्ञान थे

१ (अरबी) भरा हुआ २ लगा रोलने में जौहराँ—मैंने अच्छे अच्छे जवाहिर चुने ३ चमक ४ कहा ५ बिठाया ६ ढेर ७ तबीयत ८ एक पक्षी का नाम है, यहाँ कवियों के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

कया मैं जो कुछ आई सो फ़ाम में
किया नावें एक रूम और शाम में^१

उचाया तरज़ एक ताज़ा मिठा
जगत् बीच पाइया^२ आवाज़ाँ मिठा

दिखाया हुनर मूशिगाफ़ी^३ किया
सलासत^४ के तई सिर ते साफ़ी दिया^५

नज़ाकत को मैं आपने ख़याल थे
दिखाया हूँ बारीक कर बाल थे

दिया ताज़गी शेर के धात कूँ
सेहर^६ कर दिखाया हर एक बात कूँ

लताफ़त मनें मैं सुखन संज^७ हूँ
धरनहार लक ग़ैब के गंज हूँ

जो मैं हम सँ तब आजमाई करूँ^८
तो सार्थाँ उपर पेशवाई करूँ

कहूँ तोज़ मज़मून एक तिल मने
कि बेहद उबलते हैं मुज दिल मने

हुनर की गवी^९ का सो मैं बाग^{१०} हूँ
बचन के उत्तम गंज का नाग हूँ

सके कौन मिलने मेरे तौर में
कि रुस्तम हूँ मैं आज के दौर में

१ रूम और शाम, देशों के नाम, ये देश अपने शायरों के लिए प्रसिद्ध हैं २ (मराठी) डालना या पैदा करना ३ मूशिगाफ़ी करना—बाल की खाल निकालना ४ सादगी ५ सिर ते साफ़ी दिया—नये सिरे से साफ़ किया ६ (अरबी) जादू ७ शायर ८ ग़ैब के गंज—छिपे हुए ख़जाने ९ तब आजमाई करना—शायरी करना १० शेर की माँद ११ (मराठी) शेर ।

मेरी जीब अजब खर्ग^१ है आवदार
सदा तेज़ पानी धरे बेशुमार

मैं अप जीब की खर्ग तासीर थे
बचन का लिया मुल्क एक धीर थे^२

फ़हम का सो गम्भीर दरिया हूँ मैं
जवाहिर के मौजाँ सँ भर्था हूँ मैं

उतारिद^३ सो है किल्क^४ मुज हाथ का
दवात है सो मेरा चँदर रात का

गगन सातों दफ़तर मेरे शेर के
सितारे सो जौहर मेरे शेर के

जो कुछ तशबिहाँ खूब माकूल हैं
मेरे ख्याल के बन के वो फूल हैं

मेरे तबा का भाड़ जम ल्यावे बार^५
खिले फूल तिसकुँ हज़ाराँ हज़ार

यू अमृत सू बैताँ^६ बड़े शौक सँ
मैं लिखने लग्या दिल के अत जौक सँ

कलम जीब पा चुलबुलाने लग्या
दो जीबाँ सँ मुभकूँ सराने लग्या

जहाँ होवे मज़कूर^७ यू दास्ताँ
दिलाँ कूँ देवे सूर^८ यू दास्ताँ

सुनें आशिकाँ यू तो हैरान होयँ
पढ़ें पीर मर्दाँ तो फिर जवान होयँ

१ खड्ग, तलवार २ एक दम ३ एक तारे का नाम, फ़ारसी कवियों ने उसे खुदा का मुंशी कहा है और उनका कहना है कि खुदा जो कुछ कहता है, उतारिक उसे लिखता जाता है ४ कलम ५ बार लाना, फल लाना ६ शेर ७ कही जायेगी ८ चमक, खुशी ।

निरंजन जगत् का तू सामी अहे
 दयावन्त दातार नामी अहे

बली जाऊँ उसकी दया के उपर
 मेहरवान ख की मया के उपर

जो मुज दिल के सन्दूर^१ पर दौड़िया
 इनायत केरा साँत^२ बरसाइया

सो मेरे ख्यालौ के सीप्याँ मने
 हर एक बुंद तिस साँत के आ जमे

सो यूँ कूच^३ मोत्याँ उबलने लगे
 ख्यालौ के सीप्याँ में ढलने लगे

जो दिल समुद्र कूँ मौज पर मौज आई
 हर एक मौज चौधर ते ज्यूँ फ़ौज आई

सो फ़ौजाँ मुझे शौक में ल्याये हैं
 जवाहिर की झलकार दिखलाए हैं

जो ग़व्वास हूँ मैं कमर बाँधिया
 सो समदूर में दिल की डुबकी लिया

सो यूँ मोतियाँ ढाल ल्याने लग्या
 जवाहिर के ल्या रास भाने लग्या

जो सात अंबराँ में समा ना सके
 किसी के हिसाबाँ में आ ना सके

सो मोत्याँ के अंगे लिया रास मैं
 मदद मंग अपने खुदा पास मैं

पुरोने लग्या बैस अप हाथ सँ^१
रंगारंग हारों बहुत भाँत सँ

हर एक हार सिंगार संसार का
सुरज हो डुबे जोत हर हार का^२

कहूँ दास्ताँ सर बसर खोल मैं
करूँ जग कूँ बेताब उठूँ बोल मैं

१ पुरो ने लग्या.....हाथ सँ—बैठ कर अपने हाथ से मैं उन मोतियों को पुरोने लगा ।

२ सुरज हो.....हार का—हर हार के प्रकाश से सुरज की रोशनी भी मात हो जाती थी ।

दास्तान का आगाज़^१

कि हज़रत सुलेमान के वक्त पर
अथा मिस्र में राज एक बख्तवर^२

नगर मिस्र का तिस अथा तफ़्त गाह
अथे तिस ज़बततल^३ सकल बादशाह

नवलआसिम^४ उस राज का नेक नाँव
शहाँ में अथा उस शरफ^५ ठाँव ठाँव

वो दाना वो आक़िल जवाँमर्द था
मुसलमाँ खुदा तर्स^६ बा-दर्द था

बन्दा उसके घर का सो इक़नाल था
बसा सौ उसे कोठर्याँ माल था

अथे घोड़े पागाह^७ में नौलाख उसे
तीरन्दाज़ तुफंगी थे सौ लाख उसे

अथा उसके लश्कर कने बेशुमार
शुजार्त और अद्ल^८ में नामदार

चला जग उपर हुक्म हर साल यूँ
किया बादशाही सँ खुशहाल यूँ

अदिक छाँव का रूख था शहरेयार
क्ले सरो आज़ाद ज्यू ताजदार

सदा राज करता अथा अपसता^{१०}
वले^{११} उसको बेटी न बेटा अथा

सो एक दिस अपस में अँदेशा किया
फ़िकर ज़ाद हो मन में यूँ लाइया

१ कहानी का प्रारम्भ २ (फ़ारसी) भाग्यवान ३ जानते के नीचे, क़ानून के नीचे
४ बादशाह का नाम ५ महत्ता ६ खुदा से डरनेवाला ७ अस्तबल ८ बहादुरी ९ न्याय
१० अपने से, स्वतन्त्रता पूर्वक ११ लेकिन ।

“कि अपसैं मुलुक-माल परवर दिगार
इता कुच दिया है जो नई उस शुमार

वले कोई जतन इस रखनहार नई
कि मुज बाद मेरा कोई इस ठार नई

न जानूँ यू माल हौर मुलुक यू विलात^१
पड़ेगा किसी जाके दुश्मन के हाथ

अगर कोई फ़रज़न्द होता मुँजे
तो ये जग में आनन्द होता मुँजे

बड़ा नावँ होता मेरा ठार-ठार
दुनियाँ में रहता एक मेरा यादगार

हुकूमत मेरा हात चढ़ता उसे
यू माल हौर मुलुक सब सँपड़ता^२ उसे

दरेगा^३ ! बड़ा ग़म है मुज दिल मने
न जानूँ भँजन^४ होवे किस तिल मने”

पशेमान^५ इस धात होता अछे
अपस में च भक भक रोता अछे

सुबह उठ करे खैर खैरात मोत^६
कि हो ताकि फ़रज़न्द अपसे तुरुत

खुदा के वली खूब अछे कोई जहाँ
नंगे पाँव सँ जाय चलता वहाँ

मँगे जाके पहले यही मुददुवा^७
करे खिदमत हौर उनकी लेवे दुवा

सदा रात दिन उसकूँ यही काम था
न निस नीद ना दिन कूँ आराम था

१ विलायत, शहर २ (मराठी) प्राप्त होता ३ अकसोस ४ भंजन, टूटना, दुःख का दूर होना ५ पछताता ६ बहुत ७ अभिलाषा ।

हुवा फ़िकर के फ़िकर थे अघेड़
लिया दुःख विचारे को चौधर ते घेर

सठ्या बादशाही थं उम्मीद सब
वह चिन्ता हुआ मन में ग़म भेद सब

फिराया किनाअत^१ सठ्या^२ तन के भेस
छिले बैठिया घर में चालीस दीस^३

वज़ीरों जो दौलत के थे ठार-ठार
मिले शह के दरबार सब एक बार

जो कोई जो वज़ीरों मने खास थे
जो शह सँ धरनहार इखलास^४ थे

सो इद्रीस^५ हौर सालेहइब्नेहमीद^६
यू दोनों कमर बाँध होमुस्तईद

महाबल कने पेश हुवे सँ विचार
भजन करने दुःख शाह का कर करार

अदब सात मिल शह के आँगे हुए
दरस शाह का ज्यू^७ निभा^८ देखिए

सो ग़मगी दिस्या शाह का हाल सब
कबूदी^९ हो रह्या है रंग लाल सब

भीतर गए हैं दीदे^{१०} दुःखों पीस कर
गई है फ़िकर ते कमर बैस कर

कि जागे पे खतरा न था ठार कूच
निकल जीव जाने न था भार कूच^{११}

१ सब २ छोड़ दिया ३ छिले बैठिया.....दीस—चालीस दिनों के लिए इबादत करने बैठा
४ मुहब्बत, प्रेम ५ इद्रीस, सालेहइब्ने हमीद—वज़ीरों के नाम ६ हौर से ७ नीला ८ आँखें
९ कि जागे.....भार कूच—जिसके जगे रहने पर किसी प्रकार का खतरा पहले न था,
उसी बादशाह का शरीर ऐसा मालूम होता था कि न जाने जान कब निकल जाय ।

कहे आके “ऐ खुश रवे^१ नामदार
रखे तुज कूँ खुशहाल परवरदिगार

तूँ क्या फ़िक्र करता है दिन हौर रात
यू क्या काम है तूँ जो पकड़या है हात

नज़िक है जो लश्कर में कितना उठे
खलल होवे हौर मुल्क तेरा लुटे^२

कि यू काम तुज शह कूँ वाजिब नहीं
तेरी अकल कूँ यू मुनासिब नहीं

अगर कोई शाहों सुनेंगे यू बात
तो खुशमान^३ से ना कसे धात-धात

तूँ आरिफ़^४ है तुजकूँ हमें क्या कहें
तेरा हाल यू देख क्यों चुप रहें”

शहंशाह इस बात को सुन कर
दिया जवाब माकूल यूँ चून कर

“कि ऐ खैरखाहों अधिक फ़ाम^५ के
तरद्दुद करन हार हर काम के

मैं इस वक़्त वो शाहे गंभीर हूँ
कि जोड़ा नहीं मुँज जहाँगीर कूँ

कि शाहों न सोयें मेरे धाक थें
लरज़ते मेरे अदल के हाँक थें

जो हट कर अगर मैं धरूँ दिल मने
तो दुश्मन कूँ रहने न देऊँ तिल मने

१ बादशाह २ नज़िक है.....तेरा लुटे—तुम्हारे इस प्रकार रहने से लश्कर में फ़साद पैदा होने की संभावना है और यदि ऐसा हो गया तो चारों ओर अशान्ति फैल जाएगी और देश लुट जाएगा ३ अज्ज मान, अज्जी इज़्जत ४ समझदार ५ समझ ।

जो हट कर अगर मैं करूँ दिल में दन्द
तो रहने किसी कूँ न देऊँ अन्द-गन्द^१

किसी शाह का डर नहीं कुच मुझे
वले एक यू ग़म किया हुच^२ मुझे

शाहों में अगरचे हूँ मैं जग पती
वले घर कूँ नई कोई दीवावती^३

यही है मेरे दिल कूँ धड़का बड़ा
सो क्यों मुल्क मुज बाद होगा खड़ा

इसी वास्ते सख्त दिल गीर^४ हूँ
नहीं हाल कुच मुज ते तग़य्यीर^५ हूँ

वज़ीरों मुने शाह सूँ यू विचार
शहंशाह कूँ धीरक दे सब एक बार

नुबुय्याँ^६ कूँ एक धर ते हाज़िर किए
छिपा शाह का राज़ जाहिर किए

देखे खोल ज्यूँ शह के ताले-क़वी^७
खुशी सब के तई मुख दिखाई नवी

सितारा उठा जाग शह बख़्त का
हुवा वक्त खूबी केरे वक्त का

शहंशाह के ताले क़वी पायकर
बशारत^८ दिये शह कूँ यूँ आयकर

“कि ऐ बादशाह, भोगुनी^९ बख़्तवर
तूँ फ़रज़न्द के कारन अब ग़म न कर

१ नामो निशान २ हेच करना, बेकार करना ३ चिराय ४ रंजीदा ५ बदला हुआ हूँ
६ नुजुमी, ज्योतिषी ७ बड़ी किस्मत ८ भाग्य ९ ख़ुरख़्तबरी १० बहुगुनी, अधिक
गुण वाला ।

यमन^१ के जो राजा की बेटी है एक
चन्द्र-सूर खाते हैं रश्क उसकूँ देख

उसे मँग, तुज शाह कूँ वो सजे
कि देगा खुदा उस थे फ़रज़न्द तुम्हें^२

सुन्याँ इस वशारत कूँ ज्यूँ शह सवार
खुश्याँ साथ घर में थे निकल्या बहार

परेशान खातिर हुवा जमाँ नव^३
लगा दीपने मन केरा शमा नव

किया सिजदा उस वक़्त शुकराने का
सो पाया जो था मुद्दुवा पाने का

महाराज गंभीर आसिमनबल
चढ्या देक अपस हाथ इक़बाल बल

बुला भेज्या सब अमीराँ के तई
गुनी पेशवा हौर वज़ीराँ के तई

बुला भेजिया सब अमीराँ के तई
गुनी पेशवा हौर वज़ीराँ के तई

दिया हुक़म आनन्द पा बेहिसाब
लिखें नामाँ शाहे यमन को शिताब^४

जो लिखने कूँ नामाँ जूँ आया दबीर^५
इशारत सँ मन शह का पाया दबीर

समझ शाह के दिल के सूरत^६ कूँ
लिख्या नामाँ बेगीकर^७ इस घात सँ

कि “ऐ भोगनी शाह समरथ सजन
तुम्हारा सदा गरम अछो अंजुमन

१ एक शहर का नाम २ परेशान.....जमाँ नव—उसका परेशान-दिल नए सिरे से सम्पुष्ट हो गया ३ शीघ्रता से ४ मुंशरी ५ (अरबी) वाक्य ६ वेग से, जल्दी से ।

जहाँ आफ़री^१ है जो सब पर कदीर^२
जग आधार है और जग दस्तगीर

जो तुमनाँ कूँ कर बादशाहे यमन
किया है अता तस्त गाहे यमन

बड़े हैं तुस्हीं नेक नामी में आज
दिसें बेबदल^३ एहतेशामी^४ में आज

बहुत दिन थे मुंज दिल में ऐ शहसवार
मुहब्बत तुम्हारा किया है करार

अगरचे हमें ज़ाहिरा दो हैं दूर
वलेकिन हैं बातिन^५ में दोनों हुज़ूर

मेरे दिल में यूँ आवता है इताल^६
जो ज़ाहिर वो बातिन अच्छे एक हाल

तुम्हारा मेरा घर सो है एक घर
तुम्हारा कहा है मेरे सीस उपर

व लेकिन सुन्या हूँ मैं तुमनाँ कूँ एक
उतम पाक-दामन है फ़रज़न्द नेक

अगर उस मेरे अक़द में ल्यायेंगे^७
मेरी बस्तक़र् मुभको दिखलायेंगे

तुम्हारा वफ़ादार कहलाऊँगा
अज़ीज़ाँ के शर्ती बजा लाऊँगा^८

मुहब्बत सँ गुज़रान कर बात कूँ
किया ख़त्म नामे^९ को इस धात सँ

१ दुनिया को पैदा करनेवाला २ समर्थ, खुदा ३ जिसकी बराबरी का कोई न हो
४ शान व शौक़त ५ अन्दर से, भीतर से ६ अब ७ अक़द में लाना, शादी करना
८ शादी करना ९ पत्र ।

जो कुछ खिलअत्ता^१ खुसरवानी अथे
जो कुछ तोहफे नादिर शहानी अथे

अथा मर्तबा^२ खुस रवानी^३ जिता
कई लक वज़ा^४ सँ मुहय्या विता

दिए दबदबे साथ हाजिव^५ संगत
तुरुत बात ल्याए मरातिव^६ संगत

अंगे मेहतरा^७ सँ खज़ाना किए
यमन के कदन खुश रवाना किए

एक एक मुल्क, एक-एक शहर, एक-एक विलात
एक-एक गढ़, एक-एक कोट, लक धात-धात

उलंगते-उलंगते^८ चले ता यमन
ख़ज़र गई यमन के शहंशाह कन

कि शह मिश्र के मुल्क का बेनज़ीर
हिजावत^९ कूँ भेजा है अपना वज़ीर

जो शाहे यमन शहर सिंगार सब
कितेक सात रच आपना भार सर्व

मजालिस भरा खुसरवी शान सँ
बुला भेजिया सब कूँ बहुमान सँ

वो नामाँ सरासर पड़ाया तमाम
सो मक़सूद^{१०} ख़ातिर में ल्याया तमाम

हुआ खुश लिखे सो हर एक बैन पर
ले नामा रख्या आपने नैन पर

१ बादशाह की तरफ से दिए हुए कपड़े २ बादशाही ३ दूत ४ मर्तबा, शान ५ बड़े लोग
६ तेजी के साथ चलते हुए ७ सन्देश ८ जो शाहे.....भार सब—यमन के बादशाह ने
अपने शहर को सजाया । उसने पूरी शक्ति से महल और बाहर के हिस्से को सजाया
९ ख़्वादिश ।

कुबुल्या जो कुछ ल्याये सो यादगार
रखाया जतन याद सँ ठार-ठार

नवाज्या सकल खास हौर आम कूँ
दिया खिलअताँ सबकूँ इकराम^१ सँ

जो शाहे यमन शादमानी^२ किया
बड़ी मेहमानी शहानी किया

दिया अपनी बेटी कूँ उस शाह कूँ
बँदिया अकद सूरज कूँ उस माह कूँ

तमाम उस उरूसी गिरी काज की^३
किया मुस्तएदी बड़े साज की

जरीनाँ^४ के बेहद निछल दुरजकाँ^५
बड़े मोल के तोहफे लक दर लकाँ

पर्याँ सी कनीज़ाँ^६ उत्तम ज्ञात क्याँ
चंचल छन्द भर्याँ सूरज धात क्याँ^७

हर एक साफ़ तन ढाल मोती दिसे
नवे रंग जाली में ज्योती दिसे

सभी किसवताँ^८ उनकूँ रंग रंग सब
हर एक खुश नुमा हौर खुशाहंग^९ सब

गुलामाँ कितेक खूब साहबजमाल^{१०}
सुना वाँदे खण्ड्याँ^{११} कितेक कर रूमाल

कितेक तबले के मिस्ल तातार के
कितेक फर्श वेमिस्ल ज़र तार के

१ इनाम २ खुशी ३ उरूसी गिरी का काज, दुलहिन को सँवारने का काम ४ सोना
५ डब्बी ६ सेविकाएँ ७ सूरज धात क्याँ; बहुत ही सुन्दर ८ लिबास ९ खूबसूरत
१० खूबसूरत ११ (मराठी) खसडी, कोड़ी ।

दरयायी तुरंग हौर हती बेशुमार
अमोलक किते जिन्स के यादगार

जो था मरतबा जहेज केरा जिता
किया मुस्तैद एक तरक़्क़ थे वित्ता

बड़े मरतबे सूँ सरा बेहिसाब
लिख्या मिल के शह कूँ यूँ जवाब

“कि ऐ बादशाह जगपति नामदार
तेरी बादशाही अच्छो बरकरार

सदा फ़तह व नुसरत^१ सूँ तू राजकर
बसे लग दुनिया, नित नवे काज कर

तूँ दरिया है गंभीर गुण ज्ञान का
कि होता तूँ फ़रज़न्द मुफ़वान^२ का

दया कर जो मुजकूँ किया याद तूँ
सो रूँ-रूँ कूँ मेरे किया शाद तूँ

नवाज्या मुझे हौर किया सरफ़राज़^३
बड़े उम्र की बेल तेरे दराज़

जो कुच अम्र तेरा सूँ मैं सिर लिया
कुबूल आपने जीव दिल सूँ किया

कि मेरी हया का तूँ जीव दान है
फ़िदा तुजपे वो पाक-दामान है

जो मुज हौर फ़रज़न्द होता अग्रार
तो एक धरते करता फ़िदा तुज उपर

मुबारक तुझे ख़ास्तगारी^४ अच्छो
यू नारी सदा तुजकूँ प्यारी अच्छो”

१ खुदा की मदद २ एक बड़े बादशाह का नाम, जिसके खानदान में आसिम नवल पैदा हुआ था ३ सरफ़राज़ करना, इज्जत करना ४ मँगनी, शादी के लिए लड़की माँगना ।

लिख्या यू नवाज़िश कर इस धात सात
बड़े गुलगुले^१ हौर मरातिव सँगात

अनन्द की खुशी मंग अल्लाह कन
दिया पालकी भेज उस शाह कन

जो मंज़िल ब्रमंज़िल सो आने लगे
अंबर हौर धरत जगमगाने लगे

शिताबी सँ चल रात-दिन आइए
जो ज़ेबा रतन शाह तई लाइए

जो नज़दीक जूँ मिस्त्र के आइए
अंगे एक हाजिव कूँ दौड़ाइए

जो आसिम नवल शह खबर पाइया
उमस^२ साथ खुशियाँ मने आइया

मंगे तिउँ; अँग उसकी आया मुराद
जो कुच दिल मने था सो पाया मुराद

किया क़ज़ का साज खुश ठार-ठार
हुआ जग में यू क़ज़ सब आशकार^३

वो महलौ चतर सँ चितारे तमाम
सदर खुश खानी सँवारे तमाम

क्रमाशौ^४ से असमान के ताव मोल
बिछाने लगे जातहाँ खोल खोल

बटे-बाटे^५ धग नवरतन के बिछाए
मुरस्ता^६ के खुश बारगाहौ^७ उचाए

कदम ज़ाफ़रौ को गलाने लगे
गुलौ हौज़खाने भराने लगे

१ शान शौकन २ हौसला ३ प्रकट होना ४ एक बेशक़ीमती कपड़ा ५ हर रास्ते पर
६ हीरे जवाहिरात जड़े हुए ७ दरबार ।

पिसा मुश्क फुल नीर में घाल कर
दिखाए नवा एक बर्षगाल कर^१

मिले मजलिसाँ हौर वज़ीराँ तमाम
सिलहदार^२, सरदार, अमीराँ तमाम

रंगारंग हुआ शाह का भार सब
भलकने लग्या जड़त सिंगार सब

हुए मुस्तहिद^३ सब खुश आने के साथ
अनन्द पर अनन्द लक खुशियाँ धात-धात

रंगेला हशम^४ गत सो हर ठार रुच
छिपा रास्ता भार पर भार रुच

अपे शाह आसिम अधिक जौक सुँ
उमस^५ पाय कर मन में इस शौक सुँ

निकल कर खड़ा ज्यूँ शहे दानियाल
खुश्याँ थे खिल्या है वदन ज्यूँ गुलाल

मँगा शाह तेज़ी पवन सा शिताब
न सावज रखे कोई उसका रिकाब

सो हाता मनें पेन कर हस्तकर
उतम ज्ञात तेज़ी के उपराल चढ़

एकस तरफ़ कैसर जो पकड्या है ज़ीन
कि दूजी तरफ़ शाहे फ़ग़ाकूर चीन^६

चल्या सामने होने उस हूर कूँ
निछल नूर के पाक सन्दूर कूँ

१ पिसा मुश्क... .. वरं गालकर—फूलों से बसे जल में पिसी हुई कस्तूरी इस तरह से छिड़की जा रही थी, जैसे मानो वर्षा हो रही हो २ सिपाही ३ तैयार होना ४ शान-शौकत ५ उत्साहित होना ६ एकस ...चीन—शादी के जुलूस में बादशाह घोड़े पर सवार था। उसकी शान इतनी थी कि मालूम होता था कि कैसर (रूम का बादशाह) और फ़ग़ाकूर (चीन का बादशाह) घोड़े की दोनों तरफ पकड़े चल रहे हैं।

दमामे लगे पीट सूँ गाजने
बजन्तर^१ हरेक जिन्स के बाजने

उठे बोल जन्तर दोतारे^२ तमाम
लगे गावने गान हारे तमाम

अगर ऊद अंवर जलाने लगे
बुखूँ^३ के असमान छाने लगे

देखे लोग इस हूर के शाह कूँ
मिले सामने आके बहुमान सूँ

हुए दो तरफ़ ते सलामाँलक्याँ^४
मिले हौर खिले ज्यूँ कल्याँ डालक्याँ

दे ताज़ीम^५ सबकुँ किया बातशाह
ले दुन्नाल^६ सबकुँ अपन सात शाह

ज्यूँ आया निकल शाह मैदान में
उजाला पड्या सातोँ असमान में

महलदार हर एक वो साहब्र जमाल
उड़ागे लगे शह वे तगटे^७ रुमाल

रुमालाँ के अक्साँ भलकने लगे
हवा पर सूँ बिजल्याँ चमकने लगे

भरे थे हर एक ठार यूँ खासो आम
जो छुप गए थे एक धर ते तारे तमाम

मती हस्त आँगे सुहाते अये
पहाड़ाँ मगर चल कर आते अये

१ बाजा २ एक दो तारों वाला बाजा विशेष ३ धुआँ ४ सलाम-अलैकुम ५ इज्जत करना
६ अपने साथ लेकर ७ शाल दुशाले ।

हर एक हस्त बेमिस्तल मक्कबूल^१ खूब
 मुरस्सा की पीथ्याँ उपर भूल खूब^२

तुरंग; बाव के पाँव^३ कई लक हज़ार
 चितर में चितारे सके ना चितार

बिचकते अपने छाँव देक टाँव में
 मुरस्सा के टोडर^४ हर एव पाँव में

नफ़ीरियाँ वो बुरग़म^५ उठे यूँ तराट^६
 सिने आसमाँ के गए फाट फाट

सक्रे^७ बादिर् भर ले फुल नीर सँ
 छिड़कने लगे चौकधन धीर सँ

जो आहिस्ता डग डग चलाने लगे
 मलिक लक वजा सां सराने लगे

नज़र तल दिस्या सारे आलम कूँ यूँ
 सुलेमान शह, आरुस विलक्रीस^८ ज्यूँ

अपन शहर में शाह ज्यूँ आइया
 महल्लाँ में सक्के बुला लाइया

जो उस हूर की आई ज्यूँ पालकी
 खुशी हुई ज्यादा नवल लाल की

शहंशाह ज्यूँ लाक दजे संगत
 चला लेके खिलवत^९ में ताज़ीम सात

१ बहुत ही प्रसिद्ध २ मुरस्सा की.....खूब—हाथियों की पाँठ पर जो भूल डाली गई थी, वह हारे मोतियों से जड़ी थी ३ तुरंग बाव के पाँव—बहुत ही तेज़ चलने वाले घोड़े ४ घोड़ों के पैरों के कड़े ५ विशेष प्रकार के बाजे ६ बजने लगे ७ भिश्ती ८ मशक ९ सुलेमान..... विलक्रीस—सुलेमान बादशाह जैसे अपनी दुलहिन विलक्रीस के साथ जुलूस में चल रहे हों १० रंगमहल ।

हुआ शौक पर शौक उस शाह कूँ
 सो देख्या घूँघट खोल उस माह कूँ

तजल्ली दिखत वई हुआ बेकरार
 सो दौड़ाइयाँ दिल को बेअख्तियार

लताफत सँ कर मुलह हौर जंग कूँ
 मदन कामता हो गया संग सँ

उसी रात उस सात सोहबत किया
 मदन कामिनी मद पे इशरत किया

खुशी सँ लिया शाहजादी के हात
 बन्द्या उसके गौहर कूँ अलमास सात

मयस्सर हुआ जौक दिन हौर रात
 अनन्द पर अनन्द लक खुश्याँ धात धात

एका एक जो कुदरत केरा बल हुआ
 कितेक दिन कूँ उम्मीद का फल हुआ

सैफुल मुलूक का पैदा होना

इलाही जो साहब है संसार का
जो देता है मँग्या मँगनहार का

जो बेटा दिया शाह कूँ बेवदल
चँदर सूर ते खूब निर्मल निछल

सो हाशिम नवल शाह पाया उमस
बहर हाल फ़रज़न्द हुआ कर अपस

खज़ीने दफ़ीने जो खोलन लग्या
रतन हीर के रास खोलन लग्या^१

गिनाया तुरुत जग मनें काज थूँ
गिना ना सके जग में कोई राज थूँ

दुवा सँ उल्लाहात बहुत सिद्क सात^२
मँग्या अपने फ़रज़न्द कूँ बेहद हयात

खुश्याँ सात अमृत घड़ी फ़ाल^३ देक
सो सैफुल मुलूक कर रख्या नाँव नेक

जो था सालेह उस शाह केरा वज़ीर
खुदा उसके हक़ पर हुआ दस्तगीर

उसी रात उसे एक बेटा दिया
दिवा उसके घर का सो रोशन किया

मुबारक घड़ी में देखत फ़ाल वो
सो साअद^४ कर उसका रख्या नाम सो

जो इस हाल थे शह कूँ अपड़ी^५ खबर
फुग्या सिर थे भी खुरमी पाय कर^६

१ खज़ीने.....लग्या—पुत्र उत्पन्न होने की खुशी में उसने बहुत धन लुटाया २ सच्चे दिल से ३ जन्म-पत्री ४ सालेह वज़ीर के बेटे का नाम ५ (मराठी) मिली ६ फुग्या.....पाय कर खुशी से फूल गया ।

बुला भेजिया बेग सालेह के तई
कया यों कि इस धात माँगता हूँ मैं

जो यू दोनों बालक मिल एक ठार अछें
बधैं एक दिल होके हौर यार अछें

मँगा भेज साअद कूँ वई शहरेयार^१
दो दायँ रख्या दोनों को एक ठार

खुश्याँ सँ नुजूम्याँ कूँ भेजा बुलाय
दिख्या शाहज़ादे के ताले खुला^२

सो ताले में उसके यूँ आया निकल
कि चौदह बरस में एका-एका अव्वल

बड़ा ग़म उसे मुख दिखलाएगा
गुज़र लई ज़फ़ा^३ उस उपर जाएगा

तमाशा देखेगा बहुत धात धात
हलाक होवेगा खलक़ उसके संगत

वले शादमानी^४ है आख़िर उसे
बड़ी कामरानी^५ है आख़िर उसे

सुन इस बात कूँ शह बुरा मानकर
तवक्कल^६ किया अपने रहमान पर

बहर हाल दोनों को पालन लग्या
सो तिल तिल कूँ स्पन्द^७ जालन लग्या

बरस सात के ज्यूँ ये दोनों हुए
मुअल्लिम^८ कूँ एक खूब पैदा किए

१ बादशाह २ जन्म पत्री खोल कर देखना ३ बहुत बड़ी मुसीबत ४ खुशी ५ कामयाबी
६ भरोसा करना ७ राई, बुरी नज़र से बचाने के लिए राई जलाते हैं ८ उस्ताद ।

लेजा कर जो बसलाए मकतब मने
लगे पढ़ने दिन रात दोनों जने

किए इल्म तहसील^१ इस धात सँ
जो दम मार^२ कोई ना सके बात सँ

हुए खुशनवीसी के यूँ धात में
जो सातों कलम^३ आए थे हात में

तीरन्दाज़ ऐसे हो निकले वो दुई
बराबर उनन के न था जग में कोई

कवीदस्त^४ यूँ कस में कामिल हुए
जो रुस्तम ते एक धात फ़ाज़िल हुए

हुए मुस्तइद ज़ोर साधन मने
रसीदे हुए हर हुनर फ़न मने

वले शाहज़ादा सो मक़बूल था
मगर जीव के डाल का फूल था

अगर होयँ पैदा मुरज लाक लाक
तो आ न सके उसके सम कोई टाक^५

कधीं भार सवारी जो जाता अछे
देखन शहर का खल्क आता अछे

जो कोई उसकूँ देखे सो आशिक होवे
गवाँ होश बेहोश मुतलक होवे

तलबगार हो एक दिन आनन्द सँ
तलब जो किया शाह फ़रज़न्द कूँ

१ प्राप्त करना २ दावा करना ३ लिखने के सात प्रकार ४ ताकतवर ५ मुकाबिले में
ठहरना ।

सैफुल मुलूक को दरबार में बुलाना

सो एक दीस सैफुल मुलूक जग उजाल
शहंशाह के जीव के चमन का नेहाल^१

मुहब्बत सो हो एक तन एक दिल
गुनी बख्तवर जान साअद सँ मिल

चल्या शह को तसलीम करने बदिल
अदब सात सर भूँइ धरने बदिल

देख्या शाह दोनों के तई जो निभा^२
सोने हौर रूपे के दो कुर्सियाँ मँगा

किया अघ्र^३; बैसो ककर^४ दूइ कूँ
लग्या देखने भर नज़र दूइ कूँ

हुआ मन में खुशहाल इस धात सँ
कया जाय ना वो किसी बात सँ

उबलने लग्या प्यार का दिल में शौक
मँगाय खज़ीने में ते एक सन्दूक

सो चौंभर जड़त यूँ जड़े थे उसे
जो ताकत न था उस निभाने किसे

वो सन्दूक खोल एक अंगुशतरी^५
भमकता नगीना सो ज्यूँ मुशतरी^६

निछल ज़रज़री खूब ज़रबफ्त^७ एक
यू दो बस्त कूँ काड़ अपे शाह देक

सो सैफुलमुलूक के दिया हात में
हो खुशहाल बहुत ही च इसी सात^८ में

१ वृत्त २ गौर से देखना ३ हुकम देना ४ कह कर ५ अंगूठी ६ एक तारा, जो बहुत ही चमकदार है ७ ज़रीदार कपड़ा ८ साअत (अरबी); समय।

मँगाया उतम ज्ञात तेज़ी अनूप
पवन साज़ जल्दी में अपरूप रूप

किया पेश-कश^१ हौर नवाज्या बहुत
बुलाकर कहा “ओ मेरे मन के पूत

यू तेज़ी उतम हौर यू अंगुशतरी
यू ज़रबफ्त निरमल निछल ज़रज़री

मरे तई दिए थे सुलेमान भेज
पर्याँ हौर देवाँ के सुल्तान भेज

अजब कुच खज़ीने में मेरे है यू
दिया हूँ तुजे मैं कि तेरे हैं यू

कि मुज तुज बग़ैर कोई फ़रज़न्द नई
अज़ीज़, अरज़ुमन्द^२ हौर दिलबन्द^३ नई

यू बुस्ताँ^४ तुम्हे आरज़ानी अछो
तेरी उम्र कूँ जावेदानी^५ अछो”

ख़ुश इस धात फ़रज़न्द कूँ समझाइया
दे तशरीफ़^६ दोनों कूँ बहुराइया^७

१ तोहफ़ा देना २ लायक ३ दिल का टुकड़ा ४ बाग ५ हमेशा के लिए ६ लिबास देकर
७ बहुराना, लोटाना ।

तसवीर पर रीझना

अजब रात निर्मल थी उस दिन की रात
भूमकते थे नूरों में लक धात धात

निकल आये कर चाँद तारयाँ सिते
भूमकता अथा जगमगारयाँ सिते

निछुल चन्दना सब में पड़ता अथा
सो ज्यूँ दूध केरा वो दरिया अथा

बने-बन पवन मकमकाती अथे
चमन दर चमन लकलकाती अथे

खुश ऐसी निछुल चन्दनी देख रात
ले साअद कूँ सैफुल मुलूक अप सँगात

सुराही वो प्याले की मजलिस भर आप
लगे जौक सों पीने भर-भर शराब

निछुल गान हारे सो गाने लगे
रिझाने के बाजे बजाने लगे

मजालिस जमे राग हौर रंग सँ
हुए मस्त प्याले केरे संग सँ

अधी रात गमते हुई ऐसे धात
रहे माँदे हो नींद केरे सँगात

हुए लोग एक धर थे सब ठारे-ठार
एकट^१ शाहज़ादा सो था हुशियार

एकाएक सो दिल कूँ लग्या ज्यूँ तलाश
सो बेमिस्ल ज़रबफ्त का वो क्रमाश^२

देख्या खोलकर सर-बसर ज्यूँ उनें
सो तसवीर पाया अजब उस मनै

वो तसवीर देक वई दिवाना हुआ
वहीं इश्क का उसकूँ भाना हुआ

अपस में लग्या रोवने ज़ार-ज़ार
सो पड़ने लग्या बेखबर ठार-ठार

वो सूरतनज़र में रही चूब कर
सो जागा किया दिल मनै खूब कर

दिया संग सार्यों केरा छोड़ कर
लिया खींच दम सब थे मुख मोड़ कर

अँधारे भरी कोठरी में एकट
सो जा पर रह्या बेखबर हो निपट

इश्क में दीवाना होना

जो साअद हुआ नींद से हूशियार
लग्या देखने तई आँख्याँ पसार

नज़र नई पड़्या शाहज़ादा कहीं
लग्या हँदने हैरान हो हर कहीं

सो पाया अंधारे मने एक ठार
पड़्या था अकेला दुःखें बेकरार

आँभू^१ अँखियाँ में थे दलते अथे
नद्यों होके दो धरती चलते अथे

न ज़रा खबर कुच उसे ज़ात की
न ताकत ज़वाँ को है कुछ बात की

जिता साअद उसकूँ उचाने^२ कूँ जाय
जिता पाँव पड़ कर मनाने कूँ जाय

विता अपसं दिखलाये बेहोश कर
न दे ज्वाब चुप रहे फ़रामोश कर^३

उट्या साअद उस देक कर तलमला
लिया हैबताँ सँ कमर बैस ला^४

जो दर हाल शह कूँ खबर जा दिया
एकाएक शह का सिना तड़ख्या

जो देखन कूँ वेटे के आया नज़ीक
सो वेताब सख्ती च पाया अदीक

कया यू नुजुम्याँ केरा कौल है
वही रंज है हौर वही हौल है

१ आँभू २ उठाना ३ भूल जाना ४ डर के मार कमर बैठ गई; पस्त हिम्मत हो गया ।

जो कुछ शाह केरा जो ईमान था
सो सैफुलमुलूक जाव सो जान था

मुलुक माल पर शह कूँ दिल ना अछे
देखे बाज बेटे कूँ तिल ना अछे

जो मजलिस भराने^१ के तई भार जाय
तो फ़रज़न्द कूँ दिल मने याद लाय

कधीं टुक जो दिलगीर^२ पावे उसे
निकल धड़ में ते जीव जावे उसे

सुबह उठ बला दूर दे वेशुमार
हती हौर घोड़े हज़ारों हज़ार

सुवाँ हौर रूपा वाँद खंड्या^३ बटाय
जवाहिर के रासाँ लेकर आ लुटाय

देख्या यूँ जो बेताब एक बारगी
कमर बैस गई हौर लगी तगवगी^४

को उस वक्त पर किस कूँ ना कर खबर
मवादा^५ नज़र कुच लगी होय कर

दुवायाँ कूँ धो-धो पिलाने लग्या
लिख्या ताविज़ाँ ल्या बंधाने लग्या

१ दरबार में बैठने २ रंजीदा ३ बीस मन की एक खण्डी होती है । यहाँ 'ढेर'
इस अर्थ में प्रयोग किया गया है ४ बेचैनी होना ५ कहीं ऐसा न हो ।

सैफुल मुलूक का इलाज करना

जिते थे हकीमाँ अपन शहर के
हलब, चीन और मावरुलनहर^१ के

शिताबी सूँ फ़रमान सादिर किया
वित्ताँ कूँ बुला भेज हाज़िर किया

किते वज़ा सों सबके दिल हात ले
कया मेहरबानी सेती ला गले

जो फ़रज़न्द मेरा है सैफुलमुलूक
फ़िदा उस पे थे माल और यू मुलूक

मुजे उस बग़ैर कोई फ़रज़न्द नई
अजीज़ अरजुमन्द और दिलबन्द नई

हुआ है एका एक जो बेताब यू
कि देता नहीं है किसे ज़वाब यू

करेगा दवा जो कोई दर्द फ़ाम^२
देऊंगा उसे बादशाही तमाम

मुन इस बात कूँ शाहे गंभीर ते
उठे सब हकीमाँ सो एक धीर ते

कहे शह कूँ “सब दर्द हमन फ़ाम है
करेंगे दवा यू किता काम है”

हकीमाँ देखन नाड़ी ज्यों आये हैं
दरद ज़ाहिरा कुच नहीं पाये हैं

हुए एक तरफ़ ते पशोमान^३ सब
रहे दर्द ना फ़ाम हैरान सब

जो उस दर्द का जिन्स^१ कुछ होवता
तो दारू व दर्मन^२ का रुच होवता

सर्ची हर दर्द कूँ है हर कई दवा
वले इश्क के दर्द कूँ नई दवा

अछे जिसके तई इश्क का दर्द जो
बिचारे हकीमाँ करें क्या कहो

मुसल्लम शहंशाह हुआ ला इलाज
न था काम उसे कुच बैठे रोये बाज

हुआ घावरा शादमानी सट्या^३
निपट नींद दाना वो पानी सट्या^४

१ कारण २ दवा ३ खुशी खतम हो गई ४ भूल-प्यास खतम हो गई ।

साअद का सैफुल मुलूक के सामने जाना

सो एक दीस आये वज़ीरों सकल
कहे शाह कूँ यूँ कि “ऐ शह नवल

कुच इस बात तदवीर करना भला
कुच इस फ़िक्र में पाँव धरना भला

न होना इते वज़ा^१ सँ घाबरा
कि रहना तुज इस धात सँ है बुरा

सरांदील^२ तेरा सब पशोमान है
दुःखी हो मुसल्लम परेशान है

अपन दर्द थे हो अपे दर्दनाक
नज़िक है जो सैफुल मुलूक हो हलाक^३

भला है जो साअद दुक उसके नज़ीक
अछे उसके दुःख दर्द में हो शरीक

वही उसके दिल का सो अन्त पायेगा
वही उसकूँ मार्ग मनै लायेगा”

शहेशाह कूँ खुश लग्या यूँ विचार
दिया भेज साअद कूँ बेटे के ठार

गया शाहजादे के ज्यूँ वो नज़ीक
लग्या रोवने ज़ार उसते अदीक

कहा यूँ “कि ऐ लाल साहब जमाल^४
न सूरज चन्दर में है तेरा मिसाल

तेरा नूर हर ठार मामूर अछो
तेरा दिल खुश्याँ साथ जमपूर अछो^५

१ तरह २ आस-पास के लोग ३ अपन दर्द थे.....हलाक—कही ऐसा न हो कि अपने रंजोगम से खुद ही बहुत ज़्यादा तकलीक उठा कर सैफुल मुलूक मर जाए ४ बहुत ही खूबसूरत ५ तेरा दिल.....अछो—तेरा दिल हमेशा खुशी से भरा हुआ रहे ।

है मुज नैन कूँ नूर तुज नूर थे
सदा सूर^१ मुजकूँ तेरे सूर थे

अधर खोल मुज सात कुछ बोल तूँ
तेरे दिल में क्या है सो कह खोल तूँ

कि तेरा सदा मैं वफ़ादार हूँ
हर एक ठार तेरा मैं राम खार हूँ

एका एक यूँ आया है क्या फ़िक्र तुज
लग्या है किस्सूँ ध्यान हौर ज़िक्र तुज

नज़र किस सूरज पर पड़ी जग केरे
जो यूँ नित उबलते हैं जल के भरे

तेरा चाँद किन है; तूँ किस का चकोर
जो तिल-तिल कूँ होता है तूँ तौर-तौर^२

कहे बाज तूँ कुच मुझे फ़ाम नई
मुने लग मेरे दिल कूँ आराम नई

मुजे खोलकर तूँ कहे तो भला
वगर नई तो मैं काट लेऊँगा गला

कमर में ते वई अपने खंजर कूँ काड़
गया आपना पेट लेने कूँ फाड़

देक ये हाल दर हाल सैफुल मुलूक
पकड़ हात साअद केरा देक मूक

बिरह आग सँ जलबला आह मार
अंगारे नयन में ते डाल्या हज़ार

पछान्या^३ कि साअद वफ़ादार है
अपन दूर हौर दद का भार है

वो ज़रबशत का पारचा^१ लाइया
 जो थी सूरत उसमें सो दिखलाइया
 कहा “मैं इसी का दिवाना हूँ भोत
 अगरचे अपन ठार दाना हूँ भोत
 यही रूप लुब्धाइया^२ मुजे
 यही हुस्न बेसुध किया है मुजे
 कहीं रूप दुनिया में इस सारका
 न देख्या है कोई खल्क संसार का
 कि लगती है लई^३ दिल को हैरानगी
 न जानूँ छुटे क्यों यू दीवानगी”
 सुन्या राज़ साअद अपन यार ते
 रज़ा लेकर आया जो उस ठार ते
 शहंशाह कूँ तसलीम आकर किया
 सो वो सूरते हाल सब बोलिया

१ कपड़ा २ लुब्ध किया है, आकृष्ट किया है ३ बहुत ।

परियों का ज़री का कपड़ा लाना

अजायब लगा^१ शह कूँ इस भेद पर
कह्या खोल तो सब कूँ यूँ सर-बसर^२

“वो ज़रबख्त जो मैं दिया था उसे
जो खुश हो इनायत किया था उसे

मैं एक दीस बैठा अथा तख्त पर
सो देख्या एकाएक उसी वक्त पर

जो बारा^३ उठा एक बड़े ज़ोर का
धुलार^४ उठा सख्त शर शोर का

छिपा था गगन इस धुलारे तलें
परेशान था खल्क बारे तलें

सो वैसे मैं वाँ ते निकल भार कूँ
कितेक शह पर्याँ ऐन भूलकार सँ

मेरे तख्त के आँगे आयाँ तमाम
कियाँ मुजकूँ देक एक तरफ़ थे सलाम

कह्याँ मुजकूँ “ऐ साहबे तख्त व तاج
हमन कूँ सुलेमान भेजा है आज

वो ज़रबख्त का पारचा लाइयाँ
मेरे आँगे रख खोल दिखलाइयाँ

जो था इस मने सूते बे-नज़ीर
मुल्या देख सूत वो मेरा ज़मीर^५

लिया मैं उसी वक्त परियाँ में अंर्द^६
किया सूत किसी का है पाया मैं पंठ^७

१ अजीब लगा, आश्चर्य हुआ २ शुरू से आखिर तक ३ आँधी ४ बवंडर ५ दिल
६ छीन लेना ७ पंथ, रास्ता, रास्ता पाना, मालूम कर लेना ।

कह्याँ खोल यूँ मुज उपर कर करम
यूँ ल्यायाँ हैं अज़ गुलिस्ताने-एरम^१

कि है शह परी-एक बदी उल् जमाल
सो यूँ पाक सूरत है उसका मिसाल

वो शहवाल विन शाह रुख राज की
सो बेटी है अति शर्म हौर लाज की^२

परे हौर परियाँ जहाँ लग तमाम
करें आके शहवाल कूँ सब सलाम

वो ज़रबस्त बेमिस्त ना होवे कर
एक अंगुशतरी एक तुरंग तिस उपर

लेकर आयकर पेश कश मुँज कियाँ^३
एकाएक सब शैब होकर गयाँ

न जान्या मैं इस धात होयगा ककर
कि असला न था कुच मुँजे यूँ खबर

मुलेमान तो नई है जीता अताल
कि दिसता है मुज सर-बसर काम धाल

यहाँ कौन ऐसा है जान हौर पछान
जो देवे गुलिस्ताँ-एरम का निशान

लगे फ़िक्र आ शह कूँ इस धात का
मोअम्मा^४ दिस्या मुश्किल इस बात का

अँदेशे मने पड़ हो दिलगीर अदीक
हलूँ शाहज़ादे के आया नज़ीक

१ जन्नत का बगीचा; यहाँ किसी स्थान विरोध के लिए प्रयुक्त हुआ है २ वो शहवाल..... लाज की—वह शाह रुख के बेटे शहवाल की बेटी है, जो बड़ा शर्म और लाज वाली है ३ वो ज़र बस्त.....मुँज कियाँ—उन परियों ने उस वेश क्रीमती ज़री-कपड़े के अलावा, एक अँगूठी और एक घोड़ा भी दिया ४ समस्या ।

कह्या ऐ मेरे मन के नूरी निहाल
उजाला दो जग का सो तेरा जमाल

तू जिस रूप केरा दीवाना अहे
वो हूँदने सो आलम में पाना अहे

उताला नको हो कि तुज ज़ियान है
उताला करनहार नादान है

तुजे इस वक़्त पर सबूरी^१ भली
तू आक़िल है तुज अक़ल पूरी भली

पछानत सिती खूब पहचान तू
न कर सँ अपस कूँ परेशान तू

कितेक दीस खातिर^२ कूँ टुक जमा राक^३
दरद दुःख ते कर ले सीने कूँ पाक

जो लेऊँ परे^४ मैं कला हात पाँव^५
ख़बर तेरे मक़सूद की ठाँव ठाँव

जो इस धात सँ मंग मुहलत लिया
सो लोगाँ कूँ मुल्के मुलुक भेजिया

पतिया^६ बाप की बात सैफ़ुल मुलूक
रह्या दम पकड़^७ छोड़ दे दर्द दूक

लग्या फिरने खुशहाल साअद सँगात
पकड़ कर रह्या वो उसे दिन व रात

१ सब २ (फ़ारसी) दिल ३ मन को चैन से रखना ४ पहले ५ हाथ पाँव चलाना,
कोशिश करना ६ विश्वास करना, भरोसा करना ७ सब रखना ।

गुलिस्तान परम की खोज

गोहर सेज़^१ इस बेवदल-गंज^२ का
कहे खोल यूँ क्रिस्सा इस रंज का^३

जो गए थे रसूलों^४ तमाम एक बार
लगे ढूँढ़ने आलम मने ठार-ठार

सो ढूँढ़ने लगे कर उताला तमाम
सटे जाके आलम पे जाला तमाम^५

खुरासान, रूम हौर शाम हौर ख़ुतन
हबश हौर गुजरात दिल्ली दखन

इराक़ हौर शीराज़ रै^६ हौर ख़ुज़न्द
बुख़ारा; बलख़; यज़्द हौर समरक़न्द

समनजान, काशान, संजान सब
हलब, चीन, तूरान, ईरान सब

मख़ा^७ आगरा हौर सगल पुर्तगाल
सो मशरिक़ वो मगरिब, जुनूब हौर शुमाल

लंका, पड़लंकार्क हौर बंगाला वो गौड़
बिचारे जिधर के उधर दौड़-दौड़

गए एक तरफ़ थे जगत् तल उपर
न पाए गुलिस्ताँ-एरम का ख़बर

बरस एक लग सब परेशान हो
फिर आए मिसर कूँ पशेमान हो

१ मोती रोलनेवाला, अच्छे अन्दाज़ में कहानी कहने वाला २ ऐसा ख़जाना, जिसका मुकाबिला न हो सके ३ गोहर संज.....रंज का—यह कहानी एक वेश क़ीमती ख़जाने की तरह है और कहनेवाला मोती रोलने वाले की तरह है । उसने यहाँ से दुःख से भरी कहानी का कहना प्रारम्भ किया ४ दूत ५ सटे.....तमाम—उन्होंने सारी दुनिया में अपना जाल फैला दिया ६ ईरान का एक शहर ७ मक्का ८ लंका से भी और आगे ।

सुन्या ज्यूँ यू अहवाल सैफुल मुलूक
लग्या ग़म पे ग़म करने हौर दुःख पे दूक

अँधारे भरे घर मने जाय कर
पड़था धरतरी^१ पर सो अड़ड़ाय कर^२

सिना ग़म सिती कूट लेने लग्या^३
कर उस नार कूँ याद रोने लग्या

सबूरी के पहिरन कूँ टुकड़े किया
सो बेहोशी के हात अपसँ दिया^४

लग्या इश्क दिन रात काढ़ा उसे
अड़या निपट होके आरा उसे^५

सँगाती को अपने पुकारन लग्या
न सह-दुख विरह आह मारन लग्या

करे याद तिल-तिल रोवे ज़ार-ज़ार
पड़े बेख़बर होयकर टार-टार

ख़बर पायकर दुक जो हुशियार होय
नज़ीक आपने तां नहीं देख कोय

वो सूरत रखे आपने नयन-तल
उस ऊपर ते जावे अधीक बल-बल^६

कहे यूँ कि मुज मन की दिलदार तूँ
मेरे मन में निसि-दिन बसनहार तूँ

तूँ किस समुद की ढाल मोती है कि
तूँ किस खान की लाल ज्योती है कि

१ धरित्री, पृथ्वी २ जोर से गिरा ३ सिना.... कूट लेने लग्या—ग़म से छाती पीटने लगा ४ सबूरी... अपसँ किया—उसकी सब ख़तम हो गई और वह बेहोश हो गया ५ लग्या इश्क... आरा उसे—इश्क ने आरे के समान उसे नष्ट करना शुरू दिया ६ बलि-बलि जाना, न्योछावर होना ।

किस असमान की है चन्द्र-भान तूँ
किस अकलीन^१ की री है सुल्तान तूँ

है फुल डाल तूँ किस गुलिस्तान की
भूमकती शमा किस शबिस्तान^२ की

जो इस धात तूँ मुजकूँ लुब्धाई है^३
मेरे मन कूँ चित आपना लाई है

न जानूँ तुजे किस घड़ी पाऊँ मैं
सो क्यों हूँद काहूँ तेरा ठाँव मैं

न कुच इश्क का मुँज खबर था अवल
न कुच बिरह का मुँज को डर था अवल

तुही मुज पिरित लाग ते यूँ निढाल^४
रहूँ क्यों सबूरी सो तुज बिन इताल

दिने-दिने इसी धात बैठा अछे
देखें उस पियारी कूँ जीता अछे

नवल शाह आसिम लग्या तलमलन
दुःखी पूत कूँ देख फिर-फिर जलन

रह्या सूख दुबला तुनक तार हो^५
निपट ज़िन्दगानी से बेज़ार हो

अपस में अपैं भर ठण्डी सर्द उसास
कया आयकर अपने फ़रज़न्द पास

कि ऐ बेबदल^६ नूर दीदे मेरे
अजब कुच देख्या हूँ मैं ताले^७ तेरे

जो कुछ फिक्र तुज हक़ पे करना अथा
बजिद होके मैं कर दिखाया बिता

१ मुल्क २ महल ३ लुब्धाई है, आकृष्ट की है ४ शक्तिहीन हो जाना ५ तार के जैसा
दुबला पतला होना ६ ला जवाब; जिसकी तुलना न हो ७ किस्मत ।

जगत् कूँ तंल ऊपर कराया तमाम
सो मुल्के मुलूक उस दूँदाया तमाम

हुआ नई कुच इस हद लग इज़हार अम्हूँ
इसी से पड़्या नई यू कित भार अम्हूँ

लग्या है परी सात तेरा जिया
न समझे किसी धात तेरा जिया

परी कूँ किने जाके ल्या ना सके
कहाँ है सो किन खोज पा ना सके

मुजे कुच सो तदबीर दिसता नहीं
सो क्यों है कि तकदीर दिसता नहीं

करेगा अगर मालो धन एख्तियार
तो देउँगा तुजे बेहदो बेशुमार

अगर पादशाहाँ के बेठ्याँ में कई
दिल अछता तो देता मिला तुजकूँ में

सैफुल मुलूक का जवाब

मुन्याँ सिर थे सैफुल-मुलूक जूँ यू बात
हो तग़ाय्यीर^१ अपस में अपे धात-धात

कया “ऐ शहंशाह अगर लाख हूर
उतर आयें जन्नत ते मेरे हुजूर

तो ज़र्रा न हो किस पे मेरा खयाल
मुजे हो तो होना बदीउलजमाल

किया सई^२ तू लई मेरे काम में
लिया रंज सर खास हौर आम में

न कीता मेरे हक़ पे तक़सीर तू
किया करने के धात तदबीर तू^३

हुआ दुःख तुजे मुज कदन^४ ते ज़ियाद
वले नई हुआ तुज ते मेरा मुराद

मेरे दिल में आता है अब यू खियाल
जो लेऊँ रज़ा तुज कने ते इताल

फिरूँ जाके आलम के चौफ़ीर^५ में
अपे हो कलू अपनी तदबीर में

सो कैसा है देखू दरिया का सफ़र
जो लेऊँ गुलिस्ताँ-एरम का ख़वर

लिख्या होय तो हर सनद पाऊँगा
मेरे आस थे मैं वरास^६ आऊँगा

भला है जो लाना मुजे बेगी बात
कि बहुत ही च पकड़्या मुँज दिल उचाट

१ (अरबी) बदल जाना २ (अरबी) कोशिश ३ न कीता.....तू—आपने मेरे लिए कोई प्रयत्न उठा न रखा ४ मेरी तरफ़ से, मेरी वजह से ५ चारों तरफ़ ६ आशा का पूरा होना ।

लगे विरह उसका सो ज्यूँ खर्ग मुंज
यूँ जीना अख्यों तल दीसे मर्ग मुंज^१

अपन मन में पैदा कर ऐसा खयाल^२
पड़था बाप केरा मुसल्लम दुंवाल^३

जो था शाह अव्वल ते रंजूर पूर
हुवा सिर ते भी दुःख तले चूर-चूर

किते वज्रा सँ तलमलाने लग्या
गोते गम के दरिया में खाने लग्या

कया यूँ कि फ़रज़न्द मुजे है सो एक
क्यों उस एक कूँ देऊँ रज़ा देक देक

सकत है जो बिन तख़्त बिन ताज अछूँ
वले ताब नई मैं जो उस बाज अछूँ

किते करन पीछे मुजे जुलजलाल^३
दया कर दिया है यू नूरी निहाल

नयन तल थे क्यों मैं भगाऊँ उसे
सितम क्यों ग़रीबी में बहाऊँ उसे

मेरा दीन यू हौर ईमान है
मेरा जीव उस पर ते कुरबान है

कितेक बार कूँ फिर अंदेशे संगत
कहने लग्या क्यों रखूँ कैद सात

मवादा^४ दुःखों ते सीना फोड़ ले
मवादा यू जीवन ते दिल तोड़ ले

१ लगे विरह.....मर्ग मुंज—उसकी जुदाई मुझे तलवार की तरह तकलीफ़ पहुँचाती है; उसके बिना जीना मेरी आँखों में मौत के समान है २ पड़था बाप... ..दुंवाल—अपने मन में ऐसा खयाल करके अपनी बात को पूरा कराने के लिए, वह अपने बाप के पीछे पड़ गया ३ महान शेरवार × कहीं ऐसा न हो ।

दोजा हौर नई है जो कल्ल कुच उसे
किया है निपट इश्क यूँ हेच उसे

भला जो खुदा पर तवक्कल^१ कल्ल
उसे बाट लाने केरा बल कल्ल

सफ़र जाके या मन के मक़सद पाए
जफ़ा दुक ते खिचवा के या फिर के आए

यू दो हाल ये काम खाली नहीं
बिन इस फ़िक्र ते फ़िक्र हाली नहीं

बरस पाँच के मुस्तएदी^२ किया
दिल उसका मँगे त्यूँ दिलासा दिया

नवल शाह आसिम शहे कामियाब
बुला भेज कारीगराँ कूँ शिताब

सो फ़रमाइया कश्तियाँ बेनज़ीर
एक-एक कश्ती एक-एक दरिया गँभीर

हर एकस में हुज़रे^३ किते तरह के
निछल तश्त-पोशे घराँ फ़रह के^४

बजह तर भज़र नक़श का ठार-ठार
जहाँ का तहाँ काम खूब उस्तवार^५

करे इस वज़ा तीन सो कश्तियाँ
दैक उस कश्तियाँ कूँ भुले भिश्तियाँ^६

कुदूरत^७ उसे होय न त्यूँ बाट में
न दुःख दाट आए क्यों जंगल घाट में

१ (अरबी) भरोसा २ तैयारी किया ३ कमरे ४ खुशी के घर, खुशी और आनन्द देनेवाले
५ मजबूत ६ देख उस... .. भिश्तियाँ—इन कश्तियाँ को देख कर भिंसी भी आकृष्ट हो
जाने के ... तवक्कल ।

कितेक माहलूँ^१ कूँ खुश नाज़ के
कितेक मुतरिबानी^२ खुश आवाज़ के

कितेक खुश ज़राफ़त के निर्मल ज़रीफ़
कितेक बे बदल किस्सा खाना हरीफ़

कितेक खण्डियाँ अरगवानी^३ शराब
कितेक जिन्स के न्यामतों बे हिसाब

कितेक खूब तोहफ़े कितेक करोड़ माल
कितेक ज़ात तेज़ी पवन के मिसाल

कितेक फ़ौज़ लश्कर केरे बेनज़ीर
कितेक टोले सौदागरों के गंभीर

कितेक जिन्स के खूब बाँदी गुलाम
अपे हो बजिद^४ मुस्तइद कर तमाम

कितेक जिन्स का मूँ^५ कर बेशुमार
दे सारयाँ कूँ तरतीब सब एक बार

हर एक काम पर शह अपे हो बजिद
जो कुच करने का था किया मुस्तइद

समज धात इस वफ़ा दैर का
खुदा ते मदद मंगले खैर का

दे साअद कूँ सैफ़ुलमुलूक के दुंगल
रवाना किया हौर हुवा वई निटाल

लग्या रोने फ़रज़न्द के ध्यान सँ
बुला भेज वई अपने परधान^६ कूँ

किया मुल्क उसके हवाले तमाम
सोज़ा खाली घर में अपे सुवह-शाम

इबादत सँ मशगूल हो रात दिन
दुवा सात चित लाइया छीन-छीन^७

१ माह, (चन्द्रमा) के समान सुन्दर औरतें २ मुतरिब का बहुवचन; गानेवाले ३ नारंगी रंग का ४ कोशिश के साथ ५ सामान ६ प्रधान ७ क्षण-क्षण, हर समय ।

गुलिस्तान परम की खोज में

करनहार सैर इस पिरित घाट का
देवे काढ़ मार्ग^१ यूँ उस बाट का

जो साअद वो सैफुल मुलूक जहाज चढ़
चले गुलगुले सात दरिया में पड़

तलें साफ़ पानी उपर आसमाँ
बरसता हवा मोअतदिल^२ दरमियाँ

सभा बख्श चौधीर मौजाँ गँभीर
तमाशे कितेक इसे मने बेनज़ीर

सो देक ज़ौक पाने मने धात-धात
चलाने लगे जहाज़ दिन हौर रात

सो नज़दीक ज्यूँ चीन के आइए
सो जासूम वाँ के ख़बर पाइए

कहे जाके वई शाहे फ़ग़ाफ़ूर^३ धीर
कि आता है फ़ौजाँ सूँ लश्कर गँभीर

न जाने किधर चाल करते हैं वो
वले इस तरफ़ ख़्याल धरते हैं वो

मुने बात फ़ग़ाफ़ूर हुशियार हो
किया मुस्तइद आपना टार वो

ख़बरदार लोगाँ कूँ कर कोट के
दिला सारे दरवाज़े गड़ कोट के

चुन्याँ ख़ूब कूँ अपने ख़ासा मने
दिया भेज कर शाहज़ादे कने

पुछाया कि “तुम क्या सबब आए हो
तुमें कौन हैं ? दिल में क्या ल्याये हो

१ रास्ता निकालना, उपाय निकालना २ सम शीतोष्ण जलवायु ३ चीन का बादशाह
४ गढ़ ।

अगर दोस्ती की जो कुच बात है
तो फ़रमाओ, कुदरत मेरे हात है

अगर कुच अछेगा तलब माल पर
हती हौर घोड़े रतन लाल पर

इशारत^१ करो ल्यो मुज पास ते
वरास^२ हो उतम आपने आस ते

जो कुछ है सो कह भेज देवो शिताब
मेरे पास ते ज्वाब लेवो शिताब^३”

जो वो शाहज़ादा गुनी नेक नाम
मुन्या मूँ ते हाजिव^३ के बातों तमाम

जो कोई आए थे देवने यू खबर
उनन शाहज़ादा बुला भेज कर

अपन सामने सबकुँ बसलाइया
जो कुच कये सो खातिर मने लाइया

हँसा खिलखिला हौर उठा बोल यूँ
उनन खुश हुए तूँ कया खोल यूँ

कि “जा यूँ कहो शाहे फ़राफ़ूर सात
कि कुच काम नई मुभकुँ तुमना सँगात

रखो खातिर अपना तुमें जमा कर
कि नई है मेरा दिल किसी तमाँ पर

मेरे पास है माल व धन बेक़यास
जो कुच बस्तु होना सो है मेरे पास

वले इश्क के मुल्क का सय मैं
करनहार निकल्या हूँ; कुच हौर नई”

१ बतलाओ, इशारा करो २ आशा का पूरा होना ३ दून ४ (अरबी) लालच ।

कि इस धात सँ कये वो हाजिर सँगात
दे खिलअत किया खुश तमाम उसकी ज्ञात

खुशी सात फिर बाँ ते सब वो जने
जो फ़राफ़ूर के आए खिदमत मने

अदब सात एक धर ते कीते सलाम
कहे खोल कर वो हज़ीक़त तमाम

किए शाहज़ादे की तारीफ़ यों
सो फ़राफ़ूर खुश हो खिल्या फूल ज्यों

मुहब्बत जो वई मन में ग़ालिब हुआ
देखन शाहज़ादे कूँ तालिब हुआ

सरब दल के दुंबाल^१ ले दल पे दल
मिलन आइया आप फ़राफ़ूर चल

मिल्या शाहज़ादे सँ ताज़ीम सात
चल्या शहर में लेके तकरीम सात

सो निकल्या वहीं खुशरवी शान सँ
मित्या हौर चल्या ले के बहुमान सँ

बड़े दाव की मेहमानी किया
ज़ियाफ़त भली खुशरवानी किया

ज़ियाफ़त उपर कर ज़ियाफ़त^२ ज़ियाद
किया शाहज़ादे के रूँ रूँ कूँ शाद

तमाम उसके लश्कर से मिल चन्द रोज़
लग्या बार, हो करने आनन्द जोर^३

जिते आए सो शाहज़ादे के सात
वित्याँ कूँ किया तशरीफ़ाँ^४ धात धात

१ पीछे २ अधिक आतिथ्य करना ३ लग्या.....आनन्द जोर—यह अधिक आनन्द भी उसे भार होने लगा ४ इनाम देना ।

दिया खिलअत्ताँ सबकुँ यूँ बेशुमार
जो दिखने लग्या भार ज्यूँ नौबहार^१

रख्या पाँच जो दीस खुशहाल कर
मुहब्बत सँ वाकिफ़ हुआ हाल पर

मुरव्वत सँ शहज़ादे के मन में पैस
लिया अन्त दिल का मिल एक ठार बैस

जो कुच शाहज़ादे के मक़सूद थे
सो खातिर मने सर-बसर ल्यावते

तलब चीन के सब चितारयाँ को कर
लिया गुलिस्ताने-एरम का खबर

सो उसका मुनें भी न थे नाम वाँ
यू हरगिज़ किसी कुँ न था फ़ाम वाँ

नहीं दे सके कोई उसका निशाँ
किसी थे हुआ नई यक़ीन व गुमाँ

सो उस वक़्त एक सौ सत्तर बरस का
बुढ़ा मर्द एक कोई उस ठार था

बुला कर तफ़्हुस^२ किए उस थे ज्यूँ
सो वो पीर मर्द आ दिया ज्वाब यूँ

कि दायम^३ दरिया फिर के देख्या हूँ मैं
वले गुलिस्ताने एरम कई तो नई

मगर शहरे कुस्तुनुनियाँ में जो कोई
खबर दार इस बाग़ थे, होइ तो होइ

कि आता है वाँ खल्क^४ लई दूर का
मुसाफ़िर जिता सातो सन्दूर का

१ किया खिलअत्ताँ.....ज्यूँ नौबहार—उसने लोगों को इतने रंग-बिरंगे पोशाक दिए कि, बाहर ऐसा मालूम होने लगा कि वसन्त ऋतु आ गई है २ पूछना ३ हमेशा ४ लोग ।

ज्यूँ उस थे सुन्या शाहज़ादा यूँ बात
अपन दिल कूँ दे फिर उताले के हात^१

हुआ शह के एहसान का हक़गुज़ार
किया लई दुवा हौर सना^२ बेशुमार

हज़ार आरजू सात धर मन में आ
चला वई रज़ा लेने फ़राफूर पास

रज़ा मँग ली वई हुआ मुस्तइद
सो उस शहर लग जावने हो बज़िद

तमाम अपने लश्कर सँ क़त्लियाँ में बैस
चल्या इश्क़ के बल सँ दरिया में पैस

शिताबी सँ जा आँपड़या उस नगर
सो लोगौ कूँ वाँके बुला भेज कर

लग्या पूछने “गुलिस्ताने एरम
कहो बेग मेरे उपर कर करम”

कहे लोग वाँ के “कि सुन ऐ जवाँ
कि हम जानते नई एरम का निशाँ”

चल्या शाहज़ादा वहाँ ते निकल
अँभू डालता मोहनी के बदल^३

पयापै^४ कितेक दीस क़त्लियाँ चलाए
सो एक ठार दरिया के दरम्यान आए

सो औकल क़ज़ा हौर क़दर आ खड़या^५
सो काम आ किधर का किधर आ पड़या

१ उतावला होना, बैचैन होना २ तारीक़ ३ अँभू.....बदल—अपनी प्रेमिका के लिए
आँसू बहाता हुआ चला ४ (फारसी) लगातार ५ सो औकल.....खड़या—ईश्वरेच्छा से
उनके मार्ग में कुछ परेशानी आई ।

एकाएक उठा बाव तूफान का
दर्शा कूँ चढ़था ताव तूफान का^१

निपट आए थे डाट काले अभाल^२
छिपा सूर हौर चाँद पकड़था पताल

बरसने लग्या मेग उपराल थे
न बरस्या कधीं यूँ बरशगाल^३ थे

पड़था गिर्द चारों तरफ़ अन्धकार
कड़कने लग्यो बिजलियाँ ठार-ठार

न दिन फ़ाम होता समझते न रात
हुआ रात हौर दीस मिल एक धात

ख़ुदा सूँ पड़था आके सार्यों कूँ काम
भरोसा सटे^४ जीवने का तमाम

कि दरिया उबलने लग्या शोर सूँ
उठे मौज तूफान के ज़ोर सूँ

हुयाँ कश्तियाँ दरहम^५ एक धीरते
रह्या खल्क आजिज़ हो तदबीर ते

भर आया जहाज़ों मने आव सब
गँवाता गया माल व असबाब सब

बड़ा कुच हुआ तफ़रका हैलनार्क^६
हुए लोग लई एक तरफ़ ते हलाक

उठ्या मौज ज्यूँ वो बहती वहीं
चली शाहज़ादे की कश्ती कहीं

हुआ जहाज़ तूफान ते चूर-चूर
मलिक हौर साअद पड़े दूर-दूर

१ समुद्र में तूफान उठने लगे २ बादल ३ वर्षा काल ४ अंश ख़तम होना ५ तितर-बितर होना ६ दुःखदायी अलगाव ।

बला साअद अपसीस ले धात धात^१
 चल्या वो कहीं अपनी कश्ती सँगात

तरफ़ रूम के जाके साअद पड़्या
 द्वादश मुल्क कूँ जाय तख़्ता लग्या

लगा लग इसी धात चालीस दिन
 हर एकस पे तूफ़ान गुजर्या कठिन

हब्शियों की कैद में

जो मेह हौर वारा हुआ कम टुक एक
सो सैफुल मुलूक पाइया दम टुक एक

अमालाँ^१ हुए दरमियानी ते दूर
हुआ सूर का नूर जग में जुहूर

अख्यौं खोल देखन लग्या ठार-ठार
न लश्कर है अपना न साअद है यार

सो आये दरेगे^२ अदिक डाट कर^३
हुवा सख्त बेसुध सिना फाट कर

सभी गर्क हो जाके यारों पचास
जो बाँचे अथे सो मिले आस-पास

उचा शाहजादे कुँ बस लाइए
नसीहत सँ अँगे होकर आइए

“कि सुन ऐ दुःखी शाहजादे गँभीर
लिया यू बला तूँ बसा अपने सीर

किसी का यहाँ कूच तदबीर नई
यू वाक्ता हमन बाज तक्रदीर नई

दिल इस दुक ते घट करके रहना भला
जो कुच है जफा^४ दुख सो सहना भला

करें मिल तवक्कल^५ खुदा पर तमाम
देखें आक्रियत^६ किस वज़ा होवे काम

कहे लई सनद सात^७ यारों वले
कलेजा दुरुनी^८ में उसका जले

१ बादल २ बुरे-बुरे विचार ३ अधिक संख्या में ४ जुलम ५ भरोसा ६ नतीजा ७ कई
तरकीबों से ८ अन्दर ही अन्दर ।

अथा शाहज़ादे कूँ रोए बिन करार
कि साअद के उपराल था बहुत प्यार

फलक भी फिरन-हार जो फिर पड़था
बला हो के उपराल थे गिर पड़था^१

एका-एक बड़े गुल सिती हाँक मार
निकल जंगियाँ^२ आए एक धरते भार

सिलहकोश^३ सारे बड़े धात के
बड़े थोबड़े हौर बड़े ज्ञात के

दरिया पर के वो चोर सारे अथे
पकड़ आदमियाँ खान-हारे अथे

देखे शाहज़ादे की कश्ती को आ
लगे मारने बाँ^४ तुफंगाँ^५ बला

लड़ाई किए आके शर शोर सों
किए ज़ोर दारोगिरी^६ ज़ोर सों

पकड़ शाहज़ादे कूँ थारा सँगात
वहीं बन्द कर ले चले राते-रात

सुबह का उजाला हुआ देखकर
सब आए किनारे कूँ दरिया-उतर

निभा देखते हैं जो दरिया किनार
रखे हैं तख़त एक ऊँचा सँवार

कुदंगी, जँगी अलखन^७ उसपे चढ़
बड़े वज़ा बैठ्या है सख्ती अकड़

१ फलक भी.....गिर पड़था—आसमान मानो मुसीबत होकर उसके ऊपर गिर पड़ा २ हवशी
३ हथियार बन्द ४ बान, बाण, तीर ५ बन्दूक ६ पकड़-धकड़ ७ जिसको देखा न जा सके ।

इता कूच बदशकल चेहरा अथा
जो देखन किसे उस कूँ जोहरा न था^१

फरिस्ते भी डरते अथे अर्श पर
उतर आवने इस ज़मीं फर्श पर

बड़ा भूत कहते सो था आप वो
कि सारे भूतों केरा बाप वो

गया होंट उपर का जो इक धीर कूँ
लग्या था पिशानी उलंग सीर कूँ^२

तलों का यूँ आया अथा लुङ्क होंट
जो था उसके गुरग्याँ मने फर्क बहूत

लम्बा कद लम्बी नाक चौड़े बुलाख^३
जिसे गार के नाद लबदाँ फराख^४

बड़े डाँगरे सार के कान दो
उजड़ घर केरे खोड़ जो रान दो^५

मसे काले उसके अथे मुँह पर
मख्याँ भिन भिनाती हैं ज्यूँ गूह पर

अँगुठ्याँ बदल आपने साज़ के
गुश अँगुल्योँ में पहना डले प्याज के

पकड़ उसके नज़दीक सार्याँ को ल्याए
उसे एक तरफ़ ते सलामाँ दिलाए

सो हवत सँ सार्याँ के सीने फुटे
खगे काँपने हौर तक्रवा सटे

१ मजाल न होना २ गया होट.....सीर कूँ—उसका ऊपर का होंट निकला हुआ था और ऐसा मालूम होता था, जैसे छलांग मार कर सर तक पहुँच गया हो ३ नथने ४ चौड़े ५ बड़े डाँगरे.....रान दो—उसके दोनों कान डाँगरे (वह बड़ा बैल जिसके शरीर पर मांस न हो) के समान थे और उसकी रानें किसी पुराने गिरे हुए घर के निकले हुए खम्भों की तरह मालूम हो रही थी ।

बड़े शाहज़ादे कूँ वो देख कर
ले जावो कछ्वा अपनी बेटी के घर

सो काले जंगी दोय संगत जा
दिए उसकी बेटी केरे हाथ जा

लेकर आए जंगन कने शाह कूँ
मिलाए जोहल^१ सात ज्यूँ माह कूँ

जु बेटी कने बाप भेजे जिसे
उसे तिल मने भून खावे उसे

वले शाहज़ादे का देख वो जमाल
दिवानी हुई इश्क लाई कमाल

अथा खुश हवा का जो एक मर्गज़ार^२
सोहावे लताफ़त में जन्नत के सार

छिपाने कूँ फ़रमाई उस ठार उसे
किए कैद निकले न त्यूँ भार उसे

गुज़र कर गया म्याने एक सातरा^३
मलिक ज़ादे कूँ देख मुख-जातरा^४

बड़े शौक हौर ज़ौक सँ दौड़ आए
सो मुख शाहज़ादे केरा ज्यूँ निभाए

सो देक शाहज़ादा हुआ वई निढाल
रंग-रंग में एक धर ते बैठा कँटाल^५

कि ज़िश्तों^६ मने सख़्त वो ज़िश्त थी
निपट रूसियाही^७ में अंगुशत थी^८

१ एक मनहूस समझा जाने वाला सितारा २ चरागाह ३ सत्र ४ मुख-यात्रा, मुख देखना
५ नफ़रत करना ६ बदसूरत ७ काले रंग का मुँह ८ निपट.....अंगुशत थी—अपने रंग
के कालापन में वह एक थी ।

कि था थोबड़ा^१ उसका ज्यू^२ फ़ील का
 सर उसका सो काला रंजन^३ नील का
 आँख्याँ डोंग्याँ ज्यू^४ खुडी सार के
 दो दीदे भितर ज्यू^५ पथर गार के
 चढ़था होंट उपराल का नाक पर
 ठुडी पर पड़था है तलें का उतर
 तमाम अंग गोनी केरा टाट ज्यू^६
 चुच्याँ दो सीने पर हैं दो माट ज्यू^७
 निकल पेट अँगो को ज्यू^८ आ खड़ा
 अथा पेट थे सख्त पेडू बड़ा
 बोंबी खुल रही थी सो ज्यू^९ ऊखली
 मुसल हो के दौड़ी थी रोमावली
 लुड़कती जो चुतड़्याँ पे चोटी दिसे
 जो ज्यू^{१०} भाड़ की पेड़ मोटी दिसे
 सूए सार पिड़ल्याँ उपर तेज़ बाल
 न थी जग में डायन कोई उसके मिसाल
 सड़ी बोई^{११} बग़ालाँ में ते यूँ भरे
 जिनेँ बास उसकी सुँगे सो मरे
 पवन सारका उसकी टुक बास पाय
 तो ल्या हल्क में अंतड़ियाँ न्हास जाय
 जंग्याँ में कोई ऐसी काली न थी
 हो काली कहीं ऐसी खुजाली^{१२} न थी
 अगर लावें जिस ठार मशाल हज़ार
 उनावे तो तीरे पड़े अन्दकार

१ जबड़ा २ बड़ा मटका ३ बदलू ४ खुरदरे शरीर रखनेवाली ।

गंदी प्याज़ के डल पुरो छील कर
गले में हमायल-नमन^१ मैल कर

चतुर दो दमामें किते कोज के
नगारे बजाते हैं बिन कूच के

इता कुच ऊँचा था उसे
सिरी वाजते कोई पहुँचा उसे

न होय शाह राज़ी मनावे तो वो
अथे रोय हँसती जो आवे तो वो

चले घर मने शाहज़ादे कूँ ले
कँदोरे करे वार^२ अपने वले

जो बैठे दोनों मिल कँदोरे उपर
सो वो ज्यूँ हती हैर यू ज्यूँ मछर

कि आना मुवाफ़िक़ सँ सोहबत घड़ी
पराँ उड़के जा फ़िक़ लागी बड़ी

जो फ़ारिग़ हुए पेट भर खान खा
मँगाईं तुस्त मस्त प्याला निखा^३

सो गड़व्याँ^४ पे गड़वे लगी भेलने
लगी शाहज़ादे सँ मिल खेलने

पिये शाहज़ादे सँ मिल बैस कर
मती होके खिलवत में गये पैस कर

सो अपने मुहब्बत करे शौक़ सँ
मँगी ऐश करने के तई ज़ौक़ सँ

कुबुल्या नहीं शाहज़ादा उसे
डरया देख तन पर के उसके मसे

१ हार के जैसे गले में पहनना २ दस्तरखान तैयार करना ३ अच्छा ४ टूँटीदार लोटा ।

सटी हात जा उसपे सोरात^१ कर
सो दरहम^२ हो मार्या वहीं लात कर

निपट दिल में जागा किया कन्दराट^३
सो फ़ामी वो ज़ंगीन डायन खुसाट^४

गुसे सात अत ज़ंगियाँ कूँ बुलाय
सो संगी चक्की पीसने कूँ मँगाय

मालिकज़ादे के कन ले जावो, कही
मुबह उठ के आटा पिसावो, कही

हुआ शाहज़ादा दुःखी ला इलाज
कया दिल में मौत अपनी आई है आज

लग्या पीसने आटा लहूँ आँट कर^५
छले आए हाताँ कूँ सब डाट कर

सो खलरी निकल आई दोय हात की
मशक़क़त लगी दीस हौर रात की

हथेल्याँ जो नाजुक अथे पान थे
नरम तर नरम रूई खतियान^६ थे

गठे पड़ रहे सज़्त फ़ौलाद हो
गई नाजुकी तन की बरबाद हो

१ लालच में आना २ गुस्से में आना ३ नफ़रत करना ४ खूसाट ५ लहू का आँटना,
खून का खीलना ६ एक बहुत ही अच्छे किस्म की रूई ।

जंगी की कैद से निकल भागना

कितेक दिन कूँ वो जंगिए नाबिकार^१
सुन्याँ ज्यूँ सो घर में ते काढ़या बहार

सो बेटी कर्दी थे बुरा मानकर
कपट दिल मने हाथ में आनकर

मँगाया वचर^२ एक लसड़ी^३ सँगात
दिया फिर दुःखी शाहजादे के हाथ

दे यारों कूँ दुंवाल उसके तमाम
सो लकड़याँ डुलाने लग्या सुबह शाम

रह्या शाहजादे केरा हाल सब
दुःखों तल हुआ हाल पामाल सब

गए कपड़े सब आँग के फाट-फाट
परेशानगी हो लग्या वई उचाट

मशक्कत लगी दीस हैर रात की
न थी कुछ खबर पाँव हौर हात की

नसीवे कूँ जल बोल मारन लग्या
सो यारों थे मिल यूँ बिचारन लग्या

किया फिक्र ये अपने यारों के पास
भला है जो उस ठार थे जाय न्हास^४

जो सौ बरस अछेंगे हमें इस कने
रहेंगे इसी गिर्फ्तारी मने

हमन पर किसे प्यार आसे न याँ
हमारा दरद दूक यासे न याँ

सकल मस्त एक होय कर एक बार
किए होड़ी^१ एक मुस्तइद उस्तवार^२

अपस सबकुँ उस हौड़ी के बीच डाल
तवक्कल^३ खुदावन्द ताला पे घाल

जँग्याँ के छुटे हर तरफ़ बन्द थे
अनन्द पाए दन्द्याँ केरे दन्द से^४

१ नाव २ मजबूत ३ भरोसा करना ४ जँग्याँ के.....दन्द से—सैफुल मुलुक और उसके साथी हबशियों की कैद से आजाद हो गए और उन्हें दुश्मनों से प्राप्त होनेवाले दुःख से मुक्ति मिली ।

एक द्वीप में आना

दर्या के उपर ज्यूँ खाना हुए
सो खुशहाल सबके पराना^१ हुए

सो हौड़े^२ चलाने लगे हाते-हात
कितेक दीस चलने लगे राते-रात

दिसे मौज कई ऊँच हौर नीच कई
ले जाता खड़ा बाव आ खींच कई

कहीं डूबते हौर कहीं तैरते
हलाकीं सिर्ती^३ फीरते फीरते

अचानक पड़े एक जज़ीरे में आ
करार उस जज़ीरे में टुक पाय जा

कितेक भाड़ वाँ देखते मेवेदार
हर एक भाड़ मेवा सों आया है बार

वो खुशहाल एक दम वहीं दूक छोड़
सो मेवे लगे खावने तोड़-तोड़

किए प्यास हौर भूक कूँ दफ़ा वाँ
हुआ दस्त राहत केरा नफ़ा वाँ

बजा लाए शुक़राना करतार का
तमाशा देखे नादिर इस टार का

हुई रात देक इस जज़ीरे मने
रहने का फ़िकर मिल किए सब जने

अथा भाड़ वाँ एक बलन्द सायादार
सो उस भाड़ पर चढ़ के बैठे हुशियार

अंधारा गिरद ज्यूँ हुआ ठार-ठार
जनावर निकल आए दरिया ते भार

निहंगा^१ कितेक पहाड़ वैसे गँभीर
हती सारके माहियाँ^२ बेनज़ीर

अध्याँ दूर थे सो दिखे उनके यूँ
अंधारे मने देवतियाँ^३ लाये ज्यूँ

कितेक शकल में ऐन जैसे शिशाल^४
कितेक बदशकल रीछ केरे मिसाल

कितेक उस मने के थे ऐसे बड़े
देखे आदमी तो वहीं जल मरे

कितेक बहुत हौर कब्क^५ की ज्ञात के
कितेक सो शुतुरमुर्ग की धात के

कितेक उसमें रह रह उठें यूँ पुकार
जो होवे दर्या तल उपर जोश मार

सफाँ दर सफाँ^६ खुश गुजरते अथे
दर्या के उपर सैर करते अथे

नूरानी सुबह का जो बारा हुआ
चँदर का झलक टुक उतारा हुआ

सितारे लगे डूबने ठार-ठार
पंखी उठ लगे गुल करन यूँ पुकार

अर्श^७ का मुरग बाँग कहने लग्या
सुबह का ठण्डा बाव बहने लग्या

सूरज के उजाले कूँ ज्यूँ खोज पाय
सब एक घर ते डुब्की दरिया म्याने खाय

१ (फ़ारसी) मगर २ (फ़ारसी) मछली ३ दीबट ४ (फ़ारसी) मोड़िया ५ चकोर ६ कतार की कतार ७ आठवाँ आसमान जहाँ खुदा रहता है ।

रयन सब दरिया का देखत यू खलल
छुपे ठार ते शहजादा निकल

कहा यूँ ज़न्नॉ खोल याँ सिती
अपन दर्द के दोस्त-दाराँ^१ सिती

कहा यूँ “कि अब याँ ते जाना भला
बलायाँ ते अपसें बचाना भला”

सो चुन ज्यूँ मेवा निछल धात-धात
लिए बाँद तोशा खुशी अपने सात

रवाना हुए बेग मिल सब जने
चले फिर तवक्कल सूँ दरिया मने

जफ़ा हौर दुःख देखते ठार-ठार
हुए भी परेशाँ महीने चहार

किधर जावते सो न था फ़ाम कुच
किसी के न था दिल कूँ आराम कुच

क्रज़ा^२ यूँ हुआ जो कहीं बाट पाये
एका-एक हौर एक जज़ीरे में आये

रहे बाट हौर ना किये वाँ मुक्राम
जो कुच होवने का सो होये यू तमाम

बन्दरों की कैद में पड़ना

अजब वो जजीरा सफ़ादार^१ था
जो शहाद^२ के बहिश्त के सार था

कि था वाँ अजब कुच सफ़ा जाँ तहाँ
फ़रह पाये एक-एक के रूहाँ वहाँ

जो कुच जीव मँगता सो मेवा वहाँ
भाड़ा पे मौजूद था जाँ-तहाँ

किते भाड़ थे वाँ जो ना उस गिनत
रँगा रँग के जिन्स की हद ना अन्त

जनावर अथे उसमें कई धात के
कितेक खुश नुमा कुमरियाँ^३ ज्ञात के

कितेक नूर के नूरियाँ बेनज़ीर
कितेक बुलबुल^४ रावें^५ रोशन-ज़मीर^६

हलावें हलू पंख हर डाल थे
पड़े मेवे भड़-भड़ सो उपराल थे

अपस में अपे खुश हो मरगोलते^७
कितेक जिन्स की बोलियाँ बोलते

हर एक भाड़ तल शाहज़ादा वहाँ
लग्या फिरने याँ सँ हो शादमाँ

हवा हौर टण्डी छाँव खुश वाँ की देक
लगे नींद सँ नींद लेने टुक एक

सो ऐसे मने आए चोराँ वहाँ
पिछोडे वँदे सब के हत जोर साँ

१ साफ़ सुथरा २ एक बादशाह का नाम, जिसने दुनिया में जन्नत बनाई थी ३ कुमरी,
एक पत्नी विशेष ४ रब करना, बोलना ५ दिल की बातों को ताड़ने वाले ६ चहचहाना ।

चले मारते लेके ख्तारी^१ संगत
हुआ दूक याँ कूँ भारी सँगात
बहर हाल इस गुल में थे भार पड़^२
चल्या शाहज़ादा कहीं न्हास कर

१ बेइज्जती करना २ बाहर पड़; बाहर निकल ।

कफ्तारों का कैदी होना

निरंकार आधार जग छाँव है
करीमाँ मेहरबान का नाँव है

भर्याँ हैं वहाँ औरताँ खुश शकल
चल्या देखता वाँ महल दर महल

एकस थे अर्थ्याँ एक साहब जमाल^१
दुनिया में न थी उनकी सूरत मिसाल

हर एक की पेटाँ में मेहराब अथा
कलेजा मुअल्लक^२ लटकता अथा

पकड़ शाहजादे कूँ वई बन्द कर
लेकर आइयाँ अपने अपने राजे के घर

सौ सैफुल मुलूक देखता है जो वाँ
रखे में तखत सूर सा दरमियाँ

सो बैठे हैं वाँ नार मक्कबूल^३ खूब
सुरज चाँद ते खूब निरमल सरूप

मुकल्लल ज़रीनाँ^४ वो पेने हैं नार
खुश आवाज़ सँ देख बोली पुकार

“कहाँ ते तूँ आया है ऐ नेक नाम
तूँ किस मुल्क का बोल तेरा मुक़ाम

कि यू खूब आदम है साहब जमाल
अँगो ल्याके पूछे गरीबी का हाल

तफ़हूस किए^५ हाल कूँ सर-बसर
न तक्रसीर कीते^६ हर एक बोल पर

१. एकस थे ... साहब जमाल—एक से बढ़ कर एक खूब सूरत २ जिसको कोई सहारा न हो ३ खूबसूरत ४ ज़री का काम किया हुआ कपड़ा ५ खोज करना ६ खोद-खोद कर पूछना ।

बज्राँ हाल जी दूक का था जिता
सरासर क्या खोल कर सब विता

दुखिया ग़म थे उस ही के पाई तमाम
सो वो दूख खातिर में ल्याई तमाम

बज्राँ^१ आवो कई एक नार कूँ
सो बसलाने फ़रमाई लई प्यार सँ

मँगाई कँदोरे शहा ने जिते
रिझाने को फ़रमाई नादिर विते

कँदोरी ते फ़ारिग हुए पर तमाम
किसा उनका खातिर में ल्याई तमाम

बज्राँ वो कही नार “ऐ जग उजाल
तू आपस कूँ याँ ते बहुत ले सँभाल

यू सासानियाँ आतिशी ज्ञात हैं
तुझे खावेंगे.....जात हैं

सुन्याँ ज्यूँ सैफुल मुलूक बात कूँ
लग्या रोवने ग़म सँ बहु धात सँ

सो वो नार भी यूँ कही उसके तई
“जो रोता है ऐ दुःख भरी धात तई

अगर तू मेरा दिल करे खुश अताल
जतन सँ रखूँगी तुझे जीव-निहाल”

बुलाई नज़िक हौर सिने सँ लगाई
अदिक प्यार सँ लब मने लब मिलाई

करे तू जो सोहबत अगर मुंज सँगात
छिपा तुज रखूँगी निपट प्यार सात

जिता कुच मनाई मनाने के धात
कुबूल्या नहीं शह उस आतिश संगात

कया नार कूँ यूँ दुख्या ज्ञात सूँ
सुन ऐ नार फिरता हूँ किस धात सूँ

सो वो नार मिलती न दिसती कहीं
उसे ढूँढ़ता जग में फिरता हूँ मैं

बगैर वो मिले किससे ना होऊँ जुफ्त^१
नको दिल में हाँडी पका^२ नार मुफ्त

अजब मोहनी है वो नामाँ जमाल
सो है वो चंचल दहन^३ बदीउलजमाल

मेरा ध्यान अब छोड़ दे नार तूँ
मेरा दिल नहीं किस उपर नार सूँ

सुनी नार सैफुल मुलूक ते यूँ बात
गुसे सात दौड़ाई शह पे सो हात^४

मँगी उसकूँ खाने के तई तुफ्त^५ हो
कलेजा मँगी खावने मुफ्त हो

गुसे सों रखाई सो एक सातरा
रखी कैद सूँ कैद कर सातरा

रह्या नार सूँ शह अदिक बन्द में
रोये याद कर नार कूँ बन्द में

अपस में अपें ग़म करे यूँ कहे
खुदा या बचा तूँ बला यूँ अहे

बला यूँ बड़ी मुज गले आ पड़ी
न फुरसत है जाने की मुश्किल घड़ी

१ मिलना २ खयाली पुलाव पकाना ३ चंचलता को दूर करनेवाली ४ हाथ चलाना
५ गुस्सा हो ।

जो एक रात अधी रात गुजरी अये
मँग्या न्हासने ताई उस वन्द थे

सो मद पी हुयँ थीं मत्त्यों वो जित्यँ
सो बेसुध हो अस-पास सकल्यँ सोत्त्यों

हल्लू शाहजादा सो निकल्य़ा बहार
लग्या खल्लू कू देखने ठार-ठार

मत्त्यों हो पड़्यँ हैं किसे नई खबर
निकल भार आया दरिया के उपर

एका-एक तश्ता दिस्या एक वहाँ
निकल कर चल्या हौर हुआ तत्र रवाँ

जो तश्ते पो जा बैठिया बेग वे
चल्या बावले उस उपर बेगवे^१

दरियाँ में जफ़ा^२ हौर दुःख देखता
सो डुबता निकलता चल्या तैरता

कहीं बाव तूफ़ान का आ लगे
कहीं ताव तूफ़ान का जा लगे

न डूबे निपट ना तिरावे उसे
सो बारा^३ चहल दिन^४ फिरावे उसे

राक्षसों के द्वीप में पहुँचना

कज़ा^१ सों हुआ करम करतार का
लजाया निहायत कूँ एक बार का

छः महीने पिछे एक जज़ीरा दिस्या
जज़ीरा दिखत दिल मनेँ यूँ हँस्या

कया दिल मनेँ शाह गुरबत संगत
जज़ीरा यूँ दिसता है रौशन सिफ़ात^२

मवादा^३ अछेगी बला यौँ कुबल
मवादा मुझे जाय चीता निगल

चल्या फ़िक्र करता जज़ीरे कने
सो रख तख़्ता उस पर लग्या फ़ीरने

सो फिरने लग्या ज़ौक रूँ भाड़े भाड़
सो मेवा लगा खावने पाड़ पाड़^४

एकाएक राकस निकल आके भार
सो पा बास आदम की दौड़था पुकार

पहाड़ों के मानिन्द दौड़े जिते
सो हाकां^५ ते बादल गरज कर उठे

दिख्या शाहज़ादा बला यौँ कुबल
सो तख़्ता विसर कर चल्या वई निकल

ज़मीं पर चल्या न्हासता न्हासता
न था न्हासने त्रिन कहीं आस्ता^६

जहाँ फिर देखे उस बलायौँ कूँ शाह
पहाड़ दौड़ते हैं या बादल सियाह

१ संयोग वश २ विशेषताएँ रखनेवाला ३ कहीं ऐसा न हो ४ (मराठी) निकाल-निकाल

५ चख़िना ६ ठिकाना ।

सो फिर देखता हौर अधिक न्हाटता
अधिक न्हाटता हौर सिना फाटता

सो ज्यूँ उस पवन पर उड़ा ले चल्या
हवा पर चले त्यूँ ज़मीं पर चल्या

हुआ बे खबर . दूख हौर भूख सँ
अकल उसमें रही नई सूँ सँ

न था किस उसे ज्ञात में एक ज़रा
न था कुव्वत उस न्हासने बिन ज़रा

छे महीने पिछे न्हासता न्हासता
खड़ा एक ज़ज़ीरे कने आस्ता

कितेक जिन्स के भाड़ आये थे बार
बड़े पाड़^१ थे भाड़ सब ठार-ठार

सो मेवा लग्या चुन के खाने के तई
छे महीने पिछे उस मिल्या कूत^३ वई

जो कल कूत सँ खाय कर भी चल्या
जज़ीरे के उपराल एक गढ़ मिल्या

१ शीक २ पहाड़, पहाड़ के जैसे ऊँचे ३ रवाना ।

सकसारी के हाथों में गिरफ्तार होना

है सुबहान तेरा करम जिस उपर
तेरे अम्र का जग कूँ होवे असर

जज़ीरे के भितराल डरता घुस्या
वाँ सकसार^२ एक दौड़ उस पर धस्या

सो सैफुल मुलुक कूँ पकड़ ले चल्या
सो जिव का भरोसा वहाँ ते टल्या

कह्या दिल मने ऐ खुदावन्द पाक
बलयाँ ते पाइया है मुज तन पे धाक

सो रोता वहाँ शहर में आइया
दिल अपना तमाशे सूँ बहलाइया

सो बद-शक्ल मुँह है कुते सारका
बदन उस लुङ्कता सुअर सारका

सो हत पाँव उनके हैं अदम्याँ के सार
वले तन मने रास्त बोलें पुकार^३

सँवारा गया शहर है इस वज़ा
जो किस मुल्क में शहर नई इस वज़ा

बड़ा शहर मामूर^४ है जिन्स ते
न थे बिन वहाँ कोई सग सार ते

जो सैफुल मुलुक कूँ जो सकसार ने
पकड़ लाइया अपने राजे कने

सो सैफुल मुलुक देकता है जो वाँ
रविश^५ हौर तरतीब शाही रवाँ^५

१ हुक्म २ आदमी का हाथ-पैर रखनेवाली और कुत्तों का मुँह रखनेवाली योनि विशेष
३ वले तन...पुकार—आवाज मुँह से नहीं; बल्कि शरीर से ही निकलती है ४ मरा हुआ
है ५ रविश.....रवाँ—उसने देखा कि वहाँ बादशाहों का रंग ढंग है ।

ले गये सामने अपने राजे के पास
खड़े रह लगे देखने आस-पास

सो राजा कह्या अपने लोगों के तई
जनावर नवा आज देख्या हूँ मैं

हुआ खुश जो कोई ल्याये थे उस उपर
दिया तशरिफ़ा उन कूँ जरबफ्त^१ जर

खिला खान मोटा करो कर उसे
इशारत सँ फ़रमाइया और किसे

हँस्या बहुत खुशहाल ज्यों फूल खिल
रखाने कूँ फ़रमाइया संग दिल

रह्या बन्द में शाहज़ादा वहाँ
सो दिन बीस म्याने एकाएक वहाँ

खुदड़े^२ जो थे राकसाँ उसके तई
जज़ीरा हर-एक ढूँढ़ते आये वई

सो सगसार का शाह पाया खबर
बहुत राकसाँ आये कर शहर पर

वहीं तफ़्त होकर^३ उठ्या सगसार
किया लड़ने तई मुस्तइद अपना भार^४

लड़ाई करन सुलह संजोत सों
जो मैदान जा खड़े रोत सों

सो सगसार सब शहर के भार गये
जिते आम हौर खास सब भार गये

हलू शाहज़ादा जो निकल्या बहार
लग्या देखने शहर में ठार-ठार

नज़र नई पड़्या कोई सगसार वाँ
निकल शहर ते बेग हुआ रवाँ

चल्या न्हासता बेग जंगले जंगल
चढ़्या एक टेकान पर जा कुबल^१

बलन्द ठार था वो जहाँ है इता
लम्बा हौर ऊँचा जो कई हद न था

उस उपराल चढ़ चौकदन^२ देखता
धरत हौर सन्दूर एक कर रखा

किया शुक्र करतार का वाँ बहुत
नबी-ते मँग्या फिर शफ़ाअत^३ बहुत

जो सगसार राकस भी लड़ने लगे
एकस हात ते एक पड़ने लगे

सटे राकसाँ डोंगराँ कूँ उचा
सो सकसार क़त्ल कर ज़न बचा^४

किते राकसाँ भाड़ सूँ मारते
कित्याँ कूँ ज़मीं पर फिरा मारते

किते राकसाँ जायँ उनको निगल
कित्याँ कूँ रगड़ कर सटें खाक तल

जो सगसार अड़ाड़ा के दौड़ें^५ बहुत
लेवें नाक मुँह तोड़, धड़ कूँ बहुत

लड़ाई देख्या शह कितेक दिन तलग
जो लड़ते अथे रात, दिन होय लग

चल्या वाँ ते सैफ़ुल मुलुक हौर अँगो
सो माशूक़ के ग़म कूँ लेकर अँगो

१ दुर्गम टेकरी २ चारों तरफ़ ३ हुआ ४ सटे.....जान बचा—राक्षसों ने सकसारों को बुरी तरह हरा दिया और उनकी औरतों बच्चों को क़त्ल कर दिया ५ ज़ोरों के साथ दौड़ना ।

अपें हौर माशूक का ध्यान था
न विन ध्यान माशूक कुच ध्यान था

कहीं ज़ौक सँ हो चले हर जंगल
कहीं दूक सँ जाय जिउड़ा^१ निकल

कहीं गाय ज्यूँ भाये^२ त्यूँ हाँक मार
कहीं याद कर नार कूँ रोये ज़ार

इसी ध्यान में साल वाँ तीन चल
कटा वो जंगल शम ते यूँ नयन-तल

१ जीव २ रंभाये, गाय की तरह बोलना ।

दिवालपायों^१ के हाथ में पकड़ा जाना

इलाही जो उस पाक आशिक़ उपर
मिल्या एक जज़ीरा उसे खूब तर

डर्या फिर जज़ीरे में जाने के तई
बलायों की दहशत के पाने के तई

जो उस शहर में जा देख्या हर मक़ा
कि नई आदमी ज़ाद का कुच निशाँ

हर एक तरफ़ रौशन हैं बाज़ार चार
सँवारे गया है सो है ठार-ठार

भरे हैं वहाँ दालपाये^२ बहुत
न हिलते न चलते से बैठे बहुत

सो लिङने^३ लगे दालपाये वहाँ
हलूँ आके लट-पट हुए जाँ तहाँ

गले हौर हाताँ में पावाँ सूँ पेंच
लगे मारने हात सूँ खैंच खैंच

जो माँदा किए उसको दौड़ाय कर
वहाँ ते ले गए अपने राजे के घर

सो राजे के ज्यूँ सामने आइया
देखत शाहज़ादे कूँ वो यूँ कह्या

कि यूँ जानवर खूब है अज़्म^४ का
तमाशा देखें ल्याव है बज़्म^५ का

रखाने कूँ फ़रमाइया बन्द कर
सो एक महल में जा रखे बन्द कर

१ दिवाल पाया—एक योनि विशेष, जिसके हाथ पैर में हड्डियाँ नहीं होतीं, ये ज़मीन पर सरकते हुए या लुढ़कते हुए चलते हैं २ दिवालपाये ३ लुढ़कते हुए आगे बढ़ने लगे ४ जैसा हम चाहते हैं ५ सभा ।

अदिक बन्द में शह हुआ ला-इलाज
कह्या मौत का घर मुज आया है आज

सो ल्या न्यामतौ उस खिलाने लगे
सो गो मुश्क कर गुल कूँ लाने लगे

कितेक दिन इसी बन्द में पड़ रह्या
निकल जाऊँ कर फिक्क एक दिन किया

जो फुरसत खुदा ते मँग्या शाह ने
अधी रात गई फिक्क करते मने

सो मद पी हुए थे मती वो जिते
जो बेसुध हो अस-पास सकली मुते^१

उसी में चढ़्या जाके एक महल पर
सत्र्या वई उड़ी^२ हौर चल्या तल उतर

कितेक उसमें पा होश दौड़े संगत
लिड़े कई कूँदें यूँ जो बाँदर के धात

वहीं न्हाट कर जा जंगल में पड़्या
एकाएक गारे में आकर उड़्या

अधी रात गये न्हासते उम मने
जो यूँ गार के भार आया उने

हुआ है सो यूँ सुत्रह भलकार सूँ
देख्या दालपाये लगे पीठ सूँ

चल्या था दीस न्हासता जो तलग
जो ऐसे मने रात आई विलग

छुप्या सूर भी शाब^३ ले नूर का
खड़्या आ चँदा ताव ले नूर का

चँदा चौकदन रखत साँदा अथा
तनावों सितार्यों सँ बाँदथा अथा^१

सुरय्या^२ शमा जोत लुङ्काय कर
जगा जोत असमान पर सर बसर

कँठ्या रात सकली सो जंगल मने
तमाशा देख्या नादिर अवकल^३ मने

चड़या जाय कर एक ऊँचा भाड़
वहाँ ते लग्या देखने ठार-ठार

कितेक भाड़ रौशन हुए नाल कर
कितेक भाड़ फिरते हैं ज्यूँ जाल कर

कितेक भाड़ पढ़ते हैं कुरआँ^४ वहाँ
कितेक शमा दिपते अहें जाँ-तहाँ

कितेक भाड़ इलहान^५ सँ झिन्न कर
दुआ कूँ उचाये हैं हाताँ मगर

दुआ में रखे पात कूँ हात कर
कँठे^६ रैन सकली इसी बात पर

सो सैफुल मुलुक रैन सकली कँठ्या
उसी में उजाला रैन का फुठ्या

चन्द्र जब निकल रफत बाँदया^७ तमाम
शाफ़क में खड़ा रह किया उस सलाम

ज़माना जो हर दाय निकली बहार
ज़मी का बदन पार था बार दार

१ चँदा बाँदथा अथा—चन्द्रमा ने चारों तरफ़ अपना सामान फैला दिया था । चाँदनी के डेरों के तनावे सितारों से बँधे हुए थे २ एक तारे का नाम ३ अजीब ४ कुरान ५ आवाज ६ कटी, गुज़री ७ साज़-सामान बाँधा, चाँद डूबने लगा ।

सती हात की नार के हात 'सों
 शफ़क्त खून में थे उचा हात सों
 मुरग़ा अर्शी का हाँक मारन लग्या,
 पसिंद्या सँ अपने बिचारन लग्या
 परिन्दे लगे क़क़ने ठार-ठार
 दरिन्दे चले सैर करने कूँ भार
 रैन जिउँ जनी सुबह की पूत कूँ
 सो रौशन हुआ सुबह की रूत सँ^१

१ रैन जिउँ रूत सँ—रात ने सुबह के पुत्र को जैसे ही जन्म दिया; वैसे ही पशु पक्षियों की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी ।

कैसरिया शहर में पहुँचना

उस अवतार बाज़ी केरा हुक्काबाज़
करे इस रविश सात यूँ हुक्काबाज़^१

सो सैफुल मुलुक सर्वरे आशिक़ाँ
बिला शक्र है ताजे सरे आशिक़ाँ

निपट फाँक सबते मुर्जद हुआ^२
बिरह पर बिरह हदते बेहद हुआ

अधिक भूक हौर प्यास ते तलमल
लग्या सैर करने कूँ जंगले जंगल

हुआ सूख जा तन सो काड़ी के सार
वले नूर उसका अथा बरकरार

जो तनहा जिधर चल के जाता अछे
उधर जंगल जगमगाता अछे

जहाँ लग जो बागाँ दरिन्दे अथे
जहाँ लग जनावर परिन्दे अथे

बराबर उसी के सो फिरने लगे
हो बेताब इशक़ उस सँ गिरने लगे

जहाँ भाड़ ऊँचा अछे सायादार
उस उपराल कर उस दुःखी कूँ सवार

जंगल में जा कई फल फलाली अछे
जो कुच फल फलाली सो आली अछे

सकल जायें चुन-चुन के ल्याने के तई
मलिकज़ादे कूँ ल्या खिलाने के तई

१. उस अवतार.....हुक्काबाज़—सब से बड़ा बाजीगर जो वह खुदा है; वह यहाँ एक और नमाशा दिखला रहा है २ अकेला हो जाना ।

मुसल्लम हुआ हुलूक^१ सैफुल मुलूक
लग्या खसने^२ गम पे गम दुख पे दुख

जो देख्या जंगल के चिते बाग कूँ
हिरन, रीछ हौर अजगरों नाग कूँ

निपट गड़बड़ा कर हुआ घाबरा
दरेगे^३ सिती वई पड़्या थरथरा

सो कहने लग्या “ऐ खुदावन्दगार
ऐ रहमान, ऐ पाक परवरदिगार

कहाँ ते मुजे तू कहाँ लाइया
सो ला किस बलायाँ में संपड़ाइया

न याँ आदमी ज़ाद का कई निशॉ
न मुज कूँ है याँ कोई जान हौर पहचान

जिधर देकता हूँ उधर बेकयास
जंगल के जनावर खड़े आस-पास

गुमूँ क्यों उनन सात दिन रात मैं
करूँ इस गुंग्याँ सात क्या बात मैं

मुँजे कौन आ फाड़ खाता है कि
मेरा जीव ले कौन जाता है कि

दरेगा^४ मेरे बख्त है कैसे सख्त
किसी कूँ दुनियाँ में न होय ऐसे बख्त^५

न माँ बाप थे पा सकूँ कुच जवान
न माशूक थे हो सकूँ कामयाब^६

हर एक वक्त इस घात रोता अछे
निदाल अपने आप होता अछे

१ पूर्ण रूप से हलाक हो जाना २ बरदाश्त करना ३ डर से ४ अकसोस ५ भाग्य ६

न ग़मता दिखत व़स्त अपना कहीं
किया फ़िक्क एक दीस मन में वहीं

सो एक रात अधी रात गुज़री देखत
जगत नैन कूँ नींद पकड़ी देखत

जनावर लगे ऊँगने ठार-ठार
पड़े बेख़बर सब न थे कोई हुशियार

एकाएक हुआ शैब थे बल उसे
चढ़या हात हिम्मत केरा कल उसे

चल्या उस अधी रात वाँ ते निकल
बड़े दग़ दग़ सात जंगले जंगल

एकेला नंगे पाँव नंगे सरीर
थे ख़ारे मुगीलाँ^१ उसे ज्यों हरीर^२

कितेक दिन कूँ जूँ बाट पाया टुक एक
नज़र तल पड़या दूर ते शहर एक

जो उस शहर का कैसरिया था नाँव
सफ़ा जा बजा हौर हवा ठावँ-ठावँ

बड़ा शहर नाहद न कुच अन्त उसे
कि चौधीर लग पेशोपश पन्त उसे

जो ल्या सातां असमान इसमें छुपायँ
तो एक कोने में इसके सब छुप के जायँ

निछल चौकदन रस्ते बाज़ार चार
सो जैसे लताफ़त में गुलज़ार चार

वले आदमी ज़ाद नई कोई वहाँ
भरे हैं वहाँ बान्दरे जाँ तन्हँ

हुकूमत उनन का च है ठार-ठार
उनन का च चलता है वाँ कारोबार

देखे शाहज़ादे कूँ जूँ सर-बसर
ले गये अपने राजे कने कैद कर

जो देखता है वाँ शाहज़ादा निभा
अजायब तरह का है ऊँचा छुजा

रखा है जड़त का तख़्त म्याने-म्यान^१
ज़मीं वाँ की दिसती है ज्यूँ आसमान

छुशीला जवाँ एक गियानी सुगड़^२
ख़ुश उस तख़्त उपराल बैठा है चड़

सकल बान्दरे दायरा छोड़ कर
खड़े हैं अदब सात हत जोड़ कर

बुला बाँदर्याँ कूँ कह्या वो जवाँ
कि कुसीं ले कर आ रखो म्याने-म्याँ

ले कर आये जा बेग कुरसी निछल
कि जोड़े अथे इस जड़त बेबदल

मलिक जादे कूँ बैसला उस उपर
लग्या पूछने हाल उस सर बसर

“कि ऐ जान, तूँ काँ ते आया है कि
कहाँ काँते किस गाँव जाता है कि

तू किसका है जाया, तेरा ठावँ कौन ?
कहाँ चाँद तेरा है आसमान कौन ?

तुजे काम किस वज़ा सँ आ खड़था
तू क्यों इस खराबे^३ मने में आपड़था

सो कह मुज कने खोल ऐ यार तूँ
हो मेहमान चन्द रोज़ इस ठार तूँ”

जो ऐसी वो शीरीज़बानी किया
मलिक ज़ादे कूँ गाल पानी किया

सो एक घर ते जो हाल अपना अथा
जो कुच तलमलाना व तपना अथा

जो कुच आके डाट्या अथा बाट में
जो कुच सर घिरा था जङ्गल घाट में

सरासर कट्या खोल इस जान सँ
लग्या पूछने उस कूँ फिर ज्ञान सँ

“कि ऐ बख्तवर राज तुज राज की
तेरे तख्त की हौर तेरे ताज की

रविश हौर तरतीब कुछ हौर है
तेरे बख्त का बाव वर जोर है”

सो पूछ्या कि “इस राज इस ठार तूँ
मरातिब यू पाया है किस धात सँ

तुजे बाँदर्या सात गमता है क्यूँ^१
तेरे मन में ये ज़ौक जमता है क्यूँ

तेरी खुशरवी का अजब तरह हँ
निभाने थे मुज नयन कूँ फ़रह है”

अगर मुज पे तूँ आशकारा करे
दुआ तुज मेरा रुह सारा करे”

१ पिघला दिया २ तेरे बख्त वर जोर है—तुम्हारी भाग्य जोरों पर है ३ तुजे...
ममता है क्यूँ—इन बन्दरों से तुम्हारी कैसे बनती है ४ तेरी खुशरवी फ़रह—
तुम्हारी बादशाहत हमारी आँखों को खुश करनेवाली है ।

कह्या तब वो राजा “कि सुन ऐ अनीस
मेरा बाप था मिस्र केरा रईस

दिया भेज मुज करने सौदागरी
ले कर आने सौदा सो दरिया बरी

एकाएक सो कश्ती फुटी मौज मार
सो तख्ते उपर एक निकल्या बहार

वहाँ बाँदरे फौज कर आइये
पकड़ कर मुजे वाँ ते थाँ लाइये

सितम ज़ोर सां बैसला तख्त पर
दिये पादशाही मुज उस वक्त पर

दोराई^१ मेरी शहर में सब फिराये
मुझे आपना राज कर बैसलाये

कि इस क्रौम के बाँदर्याँ में तमाम
चल्या है रसम इस वज़ा का मुदाम

जो मरता है राजा उनन का कधीं
करार उनको अच्छता नहीं है कहीं

दिये बादशाही किसे होय ताँ^२
न जोड़था कने जाँय न खान खाँय

उनन के अवाल के महाराज की
सो बेटी है अत शर्म हौर लाज की

गमूँ इस सिती मैं कि हम जिन्स है
वो हम सार खाकी वह हम इन्स है

लिख्या इस वज़ा था सो अपढ़था मुजे
खुदा अम्र हौर देवे राहत तुजे^३”

१ हुकूमत २ किसी को दिये तक ३ लिख्या इस.....तुजे—मेरी क्रिस्मत का लिखा
इस तरह पूरा हुआ। खुदा तुझे चैन और शान्ति दे।

मिल एकस कों एक बात कर इस तरीक
कँदोरे शहाने अथे जिस तरीक

किया अम्र ल्या बाह करने शिताब
कितेक जिन्स के न्यामतौं बेहिसाब

जो ल्याकर कँदोर किये बार खूब
जड़त के रखे ज़फ़ हर ठार खूब

दोनों मिल के खुश जौक सँ खान खाये
रंगेला शराब अरगवानी^१ मँगाये

पया पै^२ लगे ऐश सँ भेलने
हुए मुस्तइद बाँदरे खेलने

अपस में अपें ताल मंडल बजाय
विकट बाजियाँ के तमाशे दिखाय

कुलाय्याँ उछलने लगे मेल खूब
कितेक खेल मुज़हिक कितेक खेल खूब

हुनर भेद अपना जिता था दिखाये
बहर हाल दोनों कूँ खुश कर हँसाये

कितेक दीस शहज़ादे कूँ रग्य वो राज
किया बाट लाने^३ कूँ एक दिन इलाज

पयापै रख इस धात दिन तीन चार
शगुफ़ता^४ किया मौँदगी^५ सब उतार

समज ख्याल उसका कहा यूँ उसे
“कि तूँ जिव सँ आशिक हुआ है जिसे

यहाँ कोई इस थे ख़बर दार नई
किसी मुल्क में वो तो इज़हार नई^६

१ नारंगी के रंग की २ लगातार ३ रास्ता निकालना ४ खुश किया ५ थकावट
६ जाहिर नहीं है ।

अजब कुल्लु है दुनियाँ में तेरा पिरित
न देखा कोई ऐसा भी गहरा पिरित

अँपड़ते तेरे दाद फरियाद कूँ
सकत नई किसी आदमी ज़ाद कूँ

तेरे मन के मकसूद बर ल्यान हार
नहीं कोई याँ बाज परवरदिगार

तवक्कल सँ कर आपने मन कूँ शाद
मुलुक हूँद हौर पा तूँ अपनी मुराद”

कि इस धात एक बादपा^१ ऐन जात
मँगाया जड़त के खुश अवरन^२ सँगात

अँगे हो अपे सरकला उस उपर
हुआ उस केरे हक़ में लक धात कर

कर इज़हार अपने जिते मेह ते
खाना किया खुश उसे शहर ते

कितेक बाँदरे देके उसके गँगात
जहाँ लग है अपना मुलुक हौर विलात

वहाँ लग उस अँपड़ाव कर भेजिया
दुआ उसके हक़ वेनिहायत किया

चले बाँदरे उसकूँ अँपड़ाव ते
तमाशा हर एक ठार दिखलावते

खड़े रहे रज़ा लेके ऐलाइ^३ खुश
किये अपने सरहद थे पैलाइ^४ खुश

कैसरिया से रवाना होना

चल्या शाहजादा ले वैताग^१ भी
उठी सुलग कर विरह की आग भी

सो फिर अपने माशूक के ध्यान सँ
भगड़ता ज़मीं हौर असमान सँ

सरासर सरीर आपना जालता
अंगारे अभूँ गम अधिक डालता

पन्ते-पन्त जंगले-जंगल भाड़े-भाड़
गव्याँ^२ हौर भुड़ुपे-भुड़ुपै^३ फाड़े-फाड़^४

उलंगता गया एक जज़ीरे कने
जो देकता है जा उस जज़ीरे मने

लगे हैं गगन ऊँचे सन्दल के भाड़
खड़े हैं हर एक ठार खुश पाँव गाड़

ज़मीं सब सोने की है इस ठार की
भलकने में ज्यूँ सूर के सारको

भरे हैं मकोडे वहाँ ठार-ठार
हती सारके आदम्याँ खान हार

भुके होके फिरते हैं चारे के तई
सो खाने मँगे इस बिचारे के तई

लग्या फिर वो जिव के दुल्ल^५ न्हासने
सो देख्या पंखी एक ऐसे मने

बड़ा धड़ शुतुर्मुग के सारका
बड़े शह पराँ तेज़ मिनक्रार^६ का

किनारे पे दरिया पे बैठा है आ
 पकड़ वहीं लिया उसके दो पाँव जा
 चल्या उसको ले मुर्ग इस ठार ते
 उड़या हौर हुआ शैब संसार ते
 उलंगता उलंगता कितेक पाड़ वो
 चल्या एक सन्दूर के पैलाड़ वो
 सो हैरों हुआ शाहजादा तुरत^१
 लग्या फिक्र करने कूँ मन में बहुत
 जो वॉते सो नई न्हास सकता था कई
 लुङकता चल्या उसके चंगुल में कई
 इसी फिक्र में शाहजादा रह्या
 मुवल्लक^२ हवा पर सां घन पर चड़या
 बज्राँ^३ शाहजादा कह्या दिल मने
 नहीं याँ गुदा बाज़ मुश्किल मने
 लग्या रोवने दिल में सो बख्त पर
 वहीं बख्त सख्ती ते सख्तियाँ च उपर
 अजब खेल तेरा है करतार हक़
 तू जिउ बाँचने का मुजे दे सबक़
 सख्या जिउ का वो भरोसा बहुत
 लग्या ध्यान अल्लाह साँ आकर तुरत
 इलाही बचाता अहे बहुत धात
 इता यू पड़या आके मुश्किल अत

१ वज्दी, जिसने इस किताब को नकल किया है, उसने किताब में नोट लिखा है कि नाँचे के नव शेर केवल एक ही प्रति में पाये जाते हैं, मालूम होता है कि ये शेर किसी दूसरे के लिखे हुए हैं और बाद में मिलाए गए २ लटका हुआ ३ उसके बाद ।

सो तदबीर के हात ते बल किया
अदिक शाहज़ादा सो तलमल^१ रखा

चल्या वो सो घन पर वतन आपने
सो अपने वतन बीच कूँ तापने

पड़्या ऐसे जंगल मने आयकर
जो फिर कोई आ ना सके जायकर

वहाँ आपने ठार का गोज काड़
हुआ सारजा एक उँया है भाड़

सो उस भाड़ की पेड़ दौड़ पताल
सो डाल्याँ अपड़ ले उठ्याँ थ्याँ अभास^२

उतार उस उपर शाहज़ादे के तई
बच्याँ पास अपने चल्या दौड़ वई

अवल थे एक आदम जो वई मारकर
रख्या था जतन आपने ठार पर

सो टुकड़े कर उस बाँट भाने लग्या
बच्याँ ताई अपने खिलाने लग्या

देखत शाहज़ादा जो उस भाड़ तल
पड़े सो जहाँ के तहाँ हाड़ गल

एकाएक ऐसे मने एक साँप
बड़ा सारका धड़ जमीं कूँ ले टाँप

धुलारा उँचाता^३ वहाँ आइया
बच्याँ कूँ सो खाने के तई धाइया

चड़्या भाड़ उपराल वई भाँप मार
सब उसके बच्याँ को निगल एक बार

लिया उस मुग्ग की मुण्डी जायकर
भसम कर सख्या तिल मने खायकर

देख्या शाहजादा जो इस हाल कूँ
छुटी काँपनी तन पे हर बाल कूँ

जो हैबक़ज़दा हो लगा काँपने
सो तदबीर वाँ ते किया न्हासने

एकाएक कुबल आके बाज़ी घड़ी
सो वई भाड़ उपर ते मील्या उड़ी^१

जँगल बीच पड़ लाख दुशवार सात
लग्या न्हासने ताई वाकी सँगात

न कुच हाल तन में न कस पाँव में
सो उठता व पड़ता हर एक टाँव में

अदिक प्यास हौर भूक ते तलमले
चल आया हलूँ एक हरे भड़ तले

सो वाँ एक चश्मा अथा आव का
खज़िल^२ उस अँग आव गुल्लाव का

पड़्या था वहाँ गैब का एक अनार
सो रँग-रस भर्या हौर मिठा दानेदार

भुका था सो वई छील खाया उसे
रगे-रग मने जीव आया उसे

पिया नीर चश्मे मने जाय कर
किया तकिया उस भाड़ तल आय कर

पंखी एक ऐसे में मरगोल^३ उठा
यूँ उस भाड़ उपराल थे बोल उठा

१ एका-एक.....मील्या उड़ी—एकाएक एक बड़ी मुसीबत आई और टल गई २ शर्मिन्दा

३ बोल उठा ।

“सोता है जवाँ यू जो साहब जमाल
हुआ है जो बिरहे के गम में निढाल

बड़ा कुच बला एक याँ आयेगा
सो इस बेगुनह जवान कूँ खाएगा

पंखी दूसरा सुन बुरा मानकर
दरेगे^१ अधिक मन मने आन कर

लग्या पूछन उसकूँ यू क्या है कना^२
कि इस बेगुनाह का सो क्या है गुनाह

कह्या वो पंखी खोल इस धात तब
कि किस्सा सो इस जवान का है अजब

कि एक दिन कितेक जिन आये अथे
मिल एक ठार मजलिस भराए अथे

जो कोई था बड़ा जिन जो मजलिस मने
एकाएक उठ्या बोलकर यूँ उनें

कि है बस्तु ऐसी जो वो खाई जाय
वो खाये तो जिन्नाँ की शाही मुँज आय

सुन्याँ हूँ कि कई बाग़ है एक रुखन^३
है उस बाग़ का नावँ अवतार बन

वहाँ भाड़ है एक अन्नार का
लग्या है उस एक फल जो अवतार का

देवेंगे मुजे ल्याके वो फल जो कोइ
तो मेरा प्रान उसते खुश नूद होइ

मजलिस में बाज़े अथे जिन जिते
सो ढूँढ़ ल्यावेंगे कर कबूले विते

छः महीने की फुरसत^१ लिये एक रखन
चले हूँद लेने वो अवतार बन

सो एक जिन ने उस बाग कूँ पाइया
वो अवतार फल जायकर लाइया

एकाएक प्यासा हो पानी के आस
पीने नीर आया जो चश्मे के पास

वले फिर के जाता वखत नावकार
बिसर कर गया था वो अवतार अनार

उसी फल कूँ यू ज्वान खाया अहे
वले भेद इसका न पाया अहे

बिसर कर गया सो वो जिन आग हो
बसाने बला उसपे आता है वो

अगर अकल कुच हो गया उस मन
है ख़ातिम^२ मुलेमान का उस कन

वो जिन फिरके जिस वक्त यँ आयेगा
जो अनार हूँदने के तई धायेगा

कना यूँ गज़ब सँ उसे हाँक मार
“कि ऐ जिन कुदंगी नजिस नावकार

वो अवतार बन था मुलेमान का
रज़ाबाज^३ उसके फल उस ठार का

तुजे तोड़ने हात किस धात आये
तू क्या काम रह-रह किया हाय-हाये

मुलेमान भेजा अहे यँ मुजे
लेकर आवो बन्द कर पिछौँडे तुजे^४

१ इजाजत लेना २ बेकार ३ अंगूठी ४ बिना आशा के ५ लेकर.....पिछौँडे तुजे—मुले-मान ने तुम्हारां मुश्कें कस कर लाने के लिए मुझे भेजा है।

दिया है निशान आपना मेरे हात
खड़े हो न देखूँ^१ तुझे एक सात

वो जिन जूँ सुलेमान केरा निशान
देखेगा तो उड़ जायेगा बई परान

दिसेगा उसं टुट पड़े तूँ अकास
सो छुप जाएगा बीच पाताल न्हास^२

सो सैफल मुलुक जूँ सुन्याँ यू बिचार
डड़ी मारकर जा छुपा एक ठार

जूँ आया वो जिन दौड़ चश्में कने
एकाएक आया निकल भार उनें

अँगूठी दिखाया उसे हाँक मार
सो हैबक़ज़दा^३ होके बेअख्तियार

हुआ ग़ैब पाताल में जा वो जिन
सलामत छुट्या उसके हाताँ ते इन

१ देखूँ २ दिसेगा.....पाताल न्हास—उसे ऐसा मालूम होगा, जैसे आसमान टूट पड़ा हो।
वह दौड़ कर पाताल में जा छिपेगा २ बहुत अधिक डरना ।

इस्फन्द नाम के द्वीप में पहुँचना

जो राहत कलम की ज़बाँ को छुटे
कलम साखे असरार की यूँ फुटे^१

कि रहमान अपने बन्दूयाँ के उपर
दया की जो मँगता है करने नज़र

उचा आपने प्यार के हाथ सँ
बचाता है आफ़त थे हर धात सँ

करीमी^२ जहाँ पर करन हार वै
मशक़क़त कूँ राहत देवन हार वै

जो निकल्या वहाँ थे सो सैफ़ुल मुलूक
पड़्या जाके हौर एक जंगल में चूक

एकेला जो आँग हो जाने लगा
कठिन बाट कूँ चल घटाने लग्या

चड़्या जायकर एक टेकाँ उपर
देख्या दूर ते एक मैदाँ उपर

सो चोंधीर उजाला बरसता अहे
जंगल नूर सीते च बसता अहे^३

लगा बहुत उसे यू तमाशा अजब
रह्या गुम हो आपस मने आप तब

चड़्या टेक उपर थे उतर आइया
नज़र चार अतराफ़ दौड़ाइया

सो बेमिस्ल नक़शे रंगारंग महल
सफ़ा दार एकाएक पड़्या दृष्टि तल

१ जो राहत.....यूँ छुटे—जब कलम की ज़बान चैन और शान्ति का वर्णन करेगी तो उस समय नीचे लिखे रहस्य जाहिर होंगे २ मेहरबानी ३ जंगल.....बसता अहे—जंगल नूर से ही बसा हुआ दिखलाई पड़ रहा था ।

जो नज़दीक आया खुशी सात जब
अपस ते अपी खुल पड़े कुफल सब^१

दुरुनी^२ चल्या ज़ौक पा वेशुमार
निभा देखता है जो वाँ ठार-ठार

सवारे अहें गैब थे सब महल
बिछाने बिछाए हैं जाँ ताँ निछल

रखे हैं तखत हौर उसके उपर
सोता है ले मूँ टाँप कोई बेखबर

न हिलता न चलता है इस ठार ते
न धरता खबर कूच संसार ते

न डर जीव कूँ अपने इस वक्त पर
दिया मर्ग के हात अपस सख्त कर

१ अपस ते कुफल सब—आप ही आप सभी रहस्य प्रकट हो गए २ अन्दर ।

शाहज़ादी को पाना

चल्या धस के देख्या नज़िक जा उसे
सो नारी है मक़बूल^१ सोती दिसे

न उस सार सूरत मनें हूर कई
न वैसी तजल्ली सती सूर कई

कितेक बार बैठा नज़िक बेक्रार
मगर नींद ते होयगी कर हुशियार

सो हरगिज़ वो हुशियार होती नहीं
मुवे तूँ च दिसती है सोती नहीं

डरथा हौर मँग्या फिर के जाने वहीं
सो देख्या पटी एक सिराने वहीं

उचा वो पटी देखता है जो पड़
सो बाँदया है कोई नींद उसके उपर

सय्या फोड़ जूँ टुकड़े कर वो पटी
वो मक़बूल एकाएक वहीं जाग उठी

अंगे हो किया शाहज़ादा सलाम
मुक उसका देखत ज़ौक पाया तमाम

सो हैरान हो बैठी वो उस घड़ी
अधर खोल जूँ फूल की पंखड़ी

कहीं यूँ “कि याँ आदमी ज़ाद कूँ
व थी कुदरत आने, क्यों आया है तूँ^२

सही कह कि तूँ कौन किस ठार का
खबर क्यों लिया है तूँ इस ठार का

१ खूबसूरत २ न थी कुदरत.....आया है तूँ—किसी में ऐसी ताकत न थी कि यहाँ आ सके, तू कैसे आ गया ।

तेरा नाँव क्या कौन इन्सान तूँ
ख़बर दे मुझे गुनवती जान तूँ”

तब उस शाहजादा उठ्या बोल कर
हकीकत सो अपना कह्या खोल कर

“कि ऐ नार किस्ता है मेरा दराज़
कहूँगा जो सुनने कूँ आसे नवाज़

हुए बरस तेरह मुझे रात दिन
जो फिरता हूँ वैताग^२ सर ले कठिन

बलायाँ बहुत सूसियाँ^३ विरह क्याँ
जफ़ायाँ देख्या इश्क के गिरह क्याँ

हुआ इश्क थे हाल सब पायमाल
न जानूँ होवनहार है क्याँ अताल

बदीउल जमाल एक है शहपरी
वो सूत पे अपनी मुजे यूँ करी

कहूँ क्या तुज ऐ शाहे शक्कर लवों
कि यों लटपटाती है मेरी ज़वों

न वो मिलती है ना गुलिस्ताँ एरम
यूँ इस ताई खोता हूँ अपना जनम

तलें धरतरी हौर उपर आसमान
दुःखों पीस जाता हूँ ग्याने मियान

कि धरता हूँ सीने में दुक कड़ज़ मैं
हुआ हूँ पिरित सोच जल भड़ज़ मैं

कि धरता हूँ सीने लक खार-खार
पड़े हैं कलीजे में रौज़र्न^४ हज़ार

एकाएक अल्लाह जो ल्याया मुजे
सो इस महल में आज पाया तुजे
तेरा हाल हौर वज़ा क्या है सो बोल
छुप तू नको मुजते दिल खोल-खोल”

शाहज़ादी के साथ दोस्ती

वो अमृत के गुन की सगी मेहरबान
फ़िरासत^१ सँ, उसका जलया दिल पछान

कही यूँ “कि बेटी हूँ मैं लाज की
सरांदील^२ के मुल्क के राज की

हमें दरअसल तीन बहनों अर्थ्याँ
सो एक दिन रज़ा बाप की ले वित्याँ

गयाँ बाग में सैर करने के तई
लग्याँ तैरने हौज़खाने में वई

सो दरहाल वाँ एक बार^३ उठ्या
चमन दर चमन सब धुलारा उठ्या

सो उस धूल में ते जनावर बड़ा
उचाकर^४ मुजे ले गया वई उड़ा

हवा पर चल्या दौड़ पंख मार-मार
रख्या मुंज को ल्याकर सो इस ठार उतार

अंगे हो मेरे आ किया वई सलाम
कह्या डर नको ऐ चंचल नेक नाम

कि आशिक्र हूँ मैं तुज उतम माह का
कि बेटा हूँ परियाँ के मैं शाह का

बड़ा भाई जो एक मुजे आज है
वो दरियाये कुलजुम^५ केरा राज है

इसी महल म्याने है मेरा मुक़ाम
न मेरा है यू बल्कि तेरा मुक़ाम

यू जागा जज़ीरा है इसफ़न्द का
फ़रहवाश्^१ हौर लाख आनन्द का

रख्या यूँ लेकर आके इस ठार मुंज
किया यूँ बला में गिरफ़्तार मुंज

महीने को एक बार आता है वो
मुंजे देक फिर-फिर के जाता है वो

मैं उसका कह्या ना सुनूँ देक कर
गुस्सा वेनिहायत पकड़ मुंज उपर

मंतर सूँ मेरी नींद कूँ बाँद आये
अकेली मुंज इस महल में छोड़ जाये

सो तूँ जिस पटी कूँ सट्या फोड़ कर
वन्द्या था मेरी नींद इसके उपर

इसी वज़ा सूँ वर्षा बारह हुए^२
मेरे दीस चुपकी आवारा हुए^३

कहूँ क्या तुजे कहने की बात नई
कि याँ एख्तियारी मेरे हात नई

दिल अपना तवक्कल सूँ किये हूँ गँभीर
कि नई मुज खुदा बाज कोई दस्तगीर^४

नको जा, दो दीस अछू^५ मेरे पास तूँ
नको ल्या ले कुच दिल में व स्वास^६ तूँ

वो आसे^७ ना अजन्तू न हो घाबरा
अजहूँ दीस बाक़ी है एक सातरा

१ आनन्द देनेवाला २ मेरे दीस.....आवारा हुए—मेरे दिन बिना किसी कारण के बेकार हुए । ३ मदद करनेवाला ४ रहो ५ डर, भय ६ उसके आने से ।

दे शहज़ादे कूँ धीरक इस धात सूँ
उठी बोल फिर यूँ मिठी बात सूँ

कि इस वक्त पर मैं तुझे ऐ जवाँ
तेरी मोहिनी के जो देऊँगी निशाँ

कहूँगी जो बाग़े एरम की खबर
तो क्या अपड़ेगा मुजकूँ इसका समर^१

बदीउल जमाल के बारे में ख़बर मिलना

वो गुनवन्त सकी^१ जो कही अपनी बात
ख़ुशी सँ फुगी शाहज़ादे की ज़ात^२

अदब की रविश सात सर भुँइ पर धर
दुआ हौर सना^३ उसकूँ लई धात कर

कया यूँ कि ऐ मोहनी नेक नाम
फ़िदा तुज पो थे जीव मेरा तमाम

अगर तूँ कहेगी मुजे उसकी बात
तो देगा खुदा तुज जज़ा^४ हाते-हात

जो देगी तूँ उस मोहनी का निशाँ
करेंग दुआ तुज ज़मी आसमान

जो ख़बराँ कहेगी तूँ उस हूर के
तो उतरेंग तुज पर तबक़ नूर के

रह्या बहुत कुच आवारा हो मैं
इसी ताई फिरता हूँ बारा हो मैं

परेशान उसका हूँ मुल्के-मुलूक
भर्या है रगे-रग मने उसका दूक

मेरा दूक गवाँ तूँ कि है तुज सवाब
मुजे तेरी दौलत सँ कर कामयाब

देखी आजिज़ी उसकी ज्यूँ वो तपा
सो दिल में थे वई मेह का जोश उठा

लगी खोल कहने कूँ सुन ऐ जवान
कि मुज पीट की थी नन्हीं एक बहन

१ सखी, सहेली २ खुशी सँ.....जात—शाहज़ादा बड़ा प्रसन्न हुआ ३ तारीफ़
४ बदला ।

हमन तीन बहनाँ में वो खुब थी
सो बेमिस्त आलम में महबूब थी

तन उसका निछल मकमकाता अछे
अंबर मुश्क का बास आता अछे

हँसी सात गुलरेज़^१ ज्यूँ बाग़ थी
कलेजाँ पे हूराँ के न्यूँ दाग़ थी

सो एक दिन ले संगत हमना कूँ माई
खुशी सात एक बाग़ में लेकर आई

कितेक दीस वाँ शादमानी किये^२
अदिक जश्न वाँ खुस रवानी किए

एकाएक औरत एक इस ठार पर
हरे भाड़ पर थे उतर आय कर

अंगे हो मेरी माँ कूँ कीती सलाम
उठी बोल इस धात हो हम कलाम

कि परियाँ के राजा की औरत हूँ मैं
देखन आई हूँ तेरी बेटी के तई

सकल शह पर्याँ में मेरा नावँ है
मेरा गुलिस्ताने एरम ठाँव है

जो है मुंज कने एक बेटी नन्हिँ
सो है मेरे नैन की रोशनी

रख्या नावँ उसका बदीउल जमाल
है उस सात मेरा मुहब्बत कमाल

बहुत दिन थे अछती हूँ इस ठार में
अदिक खुश किये हूँ यूँ गुलज़ार मैं

तुजे देक मैं जौक पर जौक पाई
अछो कायम यू आज थे आशनाई

यू बेटी सो तेरी है बेटी मेरी
यू बेटी सो मेरी यू बेटी तेरी

पिला प्यार से दूद तेरा उसे
कि मैं देउँगी दूद मेरा उसे

कर इस वज़ा सँ बात एकस कूँ एक
रहे दो जने मिल अपस एकाँ एक

लगा जीव वो यूँ मेरी माई सात
करन आवे महिने कूँ एक बार बात

बड़ी होगी वो चंचल आज कूँ
अछेगी सूरज थे निछल आज कूँ

अजब शह परी है वो साहब जमाल
कहीं जग में होसे न इसका मिसाल

मैं अपने नगर बीच अछती जो आज
तो करती हर एक वज़ा तेरा इलाज

कहती हूँ हौर एक बात सुन ऐ अज़ीज़
अगर तुज सकत है तो दे मुज तमीज़

सो शहज़ादा सुनकर हुआ यूँ खुशहाल
कह्या सुन ऐ रौशन तूँ साहब जमाल

कि मैं अर्ज़ करने भी मँगता हूँ तुज
अगर खुश जवाँ खोल फ़रमाये मुज

खुदा मुश्किल आसाँ करन हार है
निराधारियाँ कूँ वो आधार है

कही मोहिनी बोल क्या है सो मुज
कहूँगी मैं उस बात का जाब तुज

कहा “जब वो देव आवे इस ठार पर
सो तूँ पूछ ले उसके जीव का खबर

मेरा जीव तुज हात में है यहाँ
तेरा जीव मालूम नई मुज कहाँ

यू खूबीं खबर उसतें ले मुज कना
तो मैं कर सटूँ उसकूँ तिल में फ़ना”

यू सुन मोहनी कई शकर लव कूँ खोल
लिये हूँ खबर उसते कहती हूँ खोल

कि इस दीस मुजकूँ रख्या सो परा
लग्या मुजरूँ बातों •करन बहुतेरा

कह्या यूँ कि तुज तिन नहीं कोई मुंज
तेरा इश्क काफ़ी है जग दुई मुंज

बहुत है मेरा जीव तेरे उपर
वले नई तेरा जीव मेरे उपर

मैं इस बात कूँ जवाब दी यूँ फिरा
कि मुंज पर अगर जीव होता तेरा

तो अलबत्ता अपना कता राज़ मुंज
देता अपने बातिन थे आवाज़ मुंज

तेरे हात में है मेरा जीव तो याँ
वले कह मुजे है तेरा जीव कहाँ

अगर आदम्याँ थे पर्याँ कूँ हयात
अछे ज्यास्त तो क्या हुआ नई निहात

दो दिन की दुनियाँ कूँ न कर एतबार
कि जीना हमारा है दो दिन उधार

हैं आगे पिछे जान हारे हमीं
समज लेवें आपस में बारे हमीं

सुन्याँ मुंज ज़वाँ थे वो यू बात ज्युँ
उठ्या बोल कर फेर मुज सात यूँ

कि है सच तेरा जीव मेरे हात में
वले नई मेरा जीव तेरे हात में

मैं ऐ मोहनी तुजते अब क्या छुपाऊँ
कता हूँ मेरा जीव रहता सो टाउँ

कि है एक सन्दूक शीशे केरा
सो उसके दुरुनी^१ अहे जीव मेरा

वो सन्दूक सो है दरिया के भितर
अँगोटी^२ मुलेमान की कोइ अगर

दरिया के नज़िक जाके दिखलायेगा
निकल वो संगती च उपर आयेगा

बज़ाँ वाँ थे ऐ मोहनी मेहरबान
मेरी ज़िन्दगानी सरी कर पछान^३

१ भीतर २ अँगूठी ३ मेरी ज़िन्दगानी सरी... .. पछान—यह समझ ले कि मेरी ज़िन्दगी ख़त्म हो गई ।

दैत्य का मारा जाना

सुन्याँ शाहजादा जो इस बात कूँ
कह्या खुश हो उस पद्मिनी ज्ञात कूँ

कि “ऐ मोहनी पाक दामान की
अँगूठी तो हज़रत सुलेमान की

मेरे पास हाज़िर है दब^१ में अताल
तूँ क्यों मुजकूँ सँभालती सो सँभाल”

सुलेमान की उस अँगूठी कूँ देक
हुए शाद बहुत ही च एकस ते एक

ज़माना जो आखिर हुआ मेहवाँ
सो दोनों को हिम्मत दिया आसमाँ

पकड़ हात बाटसारु हुए^२
मिल अपने दरद दुक के दारु हुए^३

एकस कूँ एकन जल्द हो पाँव सार
शिताबी सती आये दरिया किनार^४

दिखाये दरिया कूँ अँगूठी निछल
सो दर हाल सन्दूक आया निकल

जूँ एक बारगी पाय दोनों जने
उचाकर ले कर आये दोनों जने

वो सन्दूक ज्यूँ देखिए खोल कर
जनावर अथा एक उसके भितर

सटे उस जनावर की मुंडी^५ मरोड़
किये चूर सन्दूक को तोड़-फोड़

१. कमर में २ रास्ता तय करने लगे ३ मिल अपने.....दारु हुए—वे दोनों मिल कर एक दूसरे का दुःख दर्द दूर करने लगे ४ एकस.....दरिया किनार—एक दूसरे की बजह से दोनों तेज चले और जल्द ही दरिया के किनारे पहुँच गए ५ सर ।

सो दर हाल पैदा हुआ एक गुबार
बरने लगा मेहों लहू बेशुमार

पहाड़ सारका सर एक उपराल थे
पड़था सो हल्या धरत पाताल थे

दिया झड़ बर्या जीव अपना तुरुत
सो उसके मरग थे हुए खुश बहुत^१

खुदा इस बलाते किया ज्यूँ खलास
सो चलने कूँ वाँ ते किये फ़िक्र खास

दोनों वई नन्हीं एक हौड़ी किये
जवाहिर कंकर इसमें कुच भर लिए

कर अल्लाह का शुक्र वाँ बेशुमार
हुए खुश दोनों मिलके होड़ी सवार

क़ज़ा पर नज़र रख तवक्क़ल सतीं
दरिया पर चढ़े मौज़ के बल सतीं

चल्या बाव ले बेग हौड़ी कूँ काड़
अजायब कितेक देखते भाड़-पाड़

छः महीने तलक दुःख जफ़ा देक-देक
उलंगते अजायब जज़ीरे कितेक

न थी सुद किधर मौज़ क्यों आवते
न था फ़ाम यूँ कुच किधर जावते

हो माँदे बहुत एक जज़ीरे में आवे
कितेक दीस रह वहाँ अमन पावे

१ दिया झड़.... बहुत—उसने अपनी जिन्दगी फ़ौरन ख़त्म कर दी। उसकी मौत से ये दोनों बहुत प्रसन्न हुए।

ताजुल मुल्क से भेंट करना

ज्यूँ एकबाल का दर खुला गैब थे
चढ़ाया दुक के मुक पर कला गैब थे^१

खुश उस ठार रोज़ी फ़रागत हुआ
परेशान खातिर कूँ राहत हुआ

सो एक दिन निकल शाहज़ादा वहाँ
हलूँ सैर करने लग्या जाँ तहाँ

सो आदम कितेक वाँ पड़े दस्त तल
एकाएक खुशी आई मन में उबल

सो नज़दीक जा सबकुँ कीता सलाम
कहे मिल अलैकस सलाम^२ उस तमाम

वजाहत उपर उसके रक आँक कई
मिल एक ठार बैठे सो नाफ़ाँक वई^३

फ़िरासत में देक उसकुँ आली वक्रार
लगे भेजने मरहबा बेशुमार^४

हुए एक जेहत सात ज्यूँ हम कलाम
सो बोल्या उनन धर दुक अपना तमाम

जो एक बारगी लोग उस ठार के
सुने क्रिस्ते इसके हौर उस नार के

सो लक धात सूँ दिल में दुक आन ले
किते वज़ा सेती बुरा मान ले

१ ज्यूँ एकबाल.....गैब थे—जैसे ही भाग्य ने साथ दिया वैसे ही दुःखों के मुँह पर चाँटा पड़ गया २ सलामालेकुम ३ वजाहत.....वई—उसकी हालत को देख कर सभी लोग वहाँ एक साथ बैठे ४ फ़िरासत.....बेशुमार—उसकी अधिक बुद्धिमानी को देख कर सब त्राग उसकी प्रशंसा करने लगे ।

कहे यूँ कि “वो जगमगाते शमे
समझते हैं कि बज्र के सो हमें

है बेटी हमन राज के भाई की
जनी माई जीती है उस जाई की^१

सरांदील में बादशाहीं संगात
है उसका जिता बाप हाली हयात

बचा उस नन्हीं का सो एकी च है
वो वासित कते सो नगर बीच है

नेखा नावँ^२ उसका है ताजुल-मुलूक
अजब कुछ है उसका मुरौवत सुलूक

हमें सब रैयत हैं उसकी तमाम
यहाँ ते उसी का है आगें मुक़ाम^३”

ज्यूँ ऐसी खबर खल्क ते पाइया
सो दौड़ उस सहेली कने आइया

कहा खोल दर हाल अहवाल उसे
खबर दे किया बहुत खुशहाल उसे

फ़रागत के मिल दोनों हौड़ी पे चढ़
चले वाँ ते राहत की दरिया में पड़

चले शहरे वासित क़दन ज़ौक सँ
लगे बाट चलने कूँ अत शौक सँ

कहीं बाट मंजिल में आलस न कर
शिताबी सेतीं अँपड़े जाव उस नगर^३

कितेक पिछें शहर वासित कूँ पाय
बहर हाल उसकी हवेली में आय

१ जनी माई... .. उस जाई की—उस लड़की को उरख करनेवाली माँ अभी जीती है

२ अच्छा नाम ३ शिताबी.....उस नगर—बहुत शीघ्र उस नगर में पहुँच गए ।

जो नज़दीक उस शहर के खास बाग़
अथा सो रहे वौं लगे दिक चिराग़

रयन जाग रब्बी के फ़रमान सँ
जो आया निकल सूर असमान सँ

सो उस शहर का बेवदल शहरेयार^१
नेकोकार ताजुल-मुलूक नाम दार

इसी बाग़ में खुसरवी दाव सों
करन सैर आया बड़े लाभ सँ^३

सो नागह नज़र उसकी इस ठार पर
पड़ी शाहज़ादे के दीदार पर

सो नैनौं कूँ उसके लगा मुबुक^४ बहुत
बुला उस निभाने लग्या मुक बहुत^५

बड़ा बख़्तवर कोई है कर पछान
नज़िक बैसला उस कह्या “ऐ जवान

कहो काँ ते आया है ऐ जवान तूँ
सो मँगता है जाने कूँ किस ठाँव तूँ

क्यों आना हुवा याँ तेरा बोल मुंज
जो कुछ है तेरा माजरा खोल मुंज^६”

जो इस धात का उसते पाया मुलूक
लग्या बोलने हाल सैफुल-मुलूक

“कि ऐ शाह, ग़मगीन हो संसार ते
मैं आया हूँ याँ मिस्त्र के शार^७ ते

१ (फ़ारसी) बादशाह २ अच्छा काम करनेवाला ३ इसी बाग़ में... ..लाक़ सँ—
उस बगीचे में ताजुल मुलूक बादशाहों की शान शोकरत से सैर करने को आया ४ अच्छा
५ बुला.....मुक—उसको बुलाया और उसके चेहरे को ग़ौर से देखने लगा ६ शहर से।

मेरा किस्सा है सख्त दूरो दराज
 लगेगा कहने बार^१ ऐ शाहबाज
 कि लए दिन ते फिरता हूँ गुरबत मने
 जनम सब गँवाया हूँ शिद्दत^२ मनै
 कि होसे न मुज सार दुःखियारा कहीं
 न मुज सार वैताग^३ मार्या कहीं
 बहुत रंज देख्या हूँ मैं ठार-ठार
 नहीं है मेरे दूक कूँ कूच शुमार
 न मेरी जफ़ा रंज कूँ है शुमार
 न सीने कूँ ठण्डक न दिल कूँ करार
 मेरा दर्द कोई ना सुने तो भला
 सुने तो बिला शक उठे तलमला
 जो खातिर में ल्यावे मेरा रंज कोइ
 तो उसका सीना फाट ज्यूँ फूट^४ होइ
 खबर जिसकूँ होवे मेरे वैताग ते
 तो जल राख होये दुक की आग ते
 गरीबी मेरी खोल कहने मुजे
 अदिक शर्म आती है क्या कऊँ तुजे^५
 सुन्या यूँ जो ताजुल-मुलूक शह नवल
 दरेसे^६ सँ मन में ते आये उबल
 कि बोल्या ज़ाँ खोल “सुन ऐ जवान
 नको डर कि अल्ला है मेहरबान

१ बार लगेगा, तकलीफ़ होगी २ मुसीबत ३ दुःख ४ एक विशेष प्रकार की ककड़ी, जो एक जाने पर फट जाती है ५ रंज और राम से ।

कि ग़मनाक हूँ मैं भी लई साल ते^१
खबर कुच नहीं मुज मेरे हाल ते

भतीजी मेरी एक साहब जमाल
गँवाई गई सो हुए बारह साल

दुक इसका कलँ मुझकूँ छाती नहीं
कि अजन्तू वो कई पाई जाती नहीं

एकाएक गुम हो गई बाग़ ते
कि मरता हूँ मैं निशदिन इस दाग़ ते

मुई है कि जीती नहीं कुछ खबर
बड़ा दुःख है यू मुज कलेजे भितर^२

जो यू बात फिर इस परेशान कूँ
लग्या तीर हो दौड़ जा कान कूँ

सो जलती दुरुनी^३ सँ जल आह, मार
उलँड्या अँखियाँ में ते दुख बेशुमार

कह्या “दुख न कर ऐ सुखी राज तूँ
खुशी कर यू दुख छोड़ दे आज तूँ

कि तेरी भतीजी कूँ ल्याया हूँ मैं
कुबल ठार^४ ते उसकूँ पाया हूँ मैं

सो क्यों उसके लेखे सगा भाई हो
बचाया हूँ सो जान ते माई हो^५

तुजे आज ते जौक है लाख लाख
वले मैं सोहूँ ग़म ते नित चाक चाक

१ कई साल से (लई का प्रयोग मराठा में ‘कई’ के अर्थ में होता है) २ जलता हुआ दिल
३ बहुत ही अगम्य स्थान ४ सो क्यों उसके.....माई हो—एक सगे भाई और माँ की
तरह मैंने पूरी कोशिश से उसे बचाया है ।

जिता कुछ है नाज़िल दुःख आफ़ाक़ पर
जम्या है वो दुख मेरे सीने भितर^१

अज़ल ते यू आया है बाँटा मेरा
कि पंज्याँ है काँठ्याँ सँ फाँटा मेरा^२

दरद दुक सँ इस वज़ा गुज़रान बाद
मिल एकस कूँ एक हात म्याने ले हात

चले इशितयाक़ी^३ सँ दोनों जने
वहीं आये उस पाक दामन कने

देख्या ज्यूँ भतीजी कूँ आपी चचा
सो पुतली कर अँख्यौ की लेता उचा

गले लाग अड़ड़ा के रone लग्या
फ़िदा उसके उपराल होने लग्या

दिल उसका बहुत धात सों हात ले
कलेजे के टुकड़े कूँ संगीत ले

लेकर आइया घर में ताज़ीम^४ सात
गया शहर में लेके तकरीम सात

घर आया सो हुई शादमानी बड़ी
किया शहर में मेज़बानी बड़ी

नवाज्या अदिक शाहज़ादे के तई
रख्या जीव कर दूख ज़ादे के तई

दिया भेज क़ासिद कूँ वई माई पास
मेहरबान उसकी जनी माई पास

१ जिता.....सीने भितर—आसमान से जितनी मुसीबतें संसार में आई हैं, वे सब मानों मेरे ही लिए थी २ शौक़ से ३ इज्जत के साथ ।

हुमाये सआदत असर खोल पंख
उड़था जूँ सरांदील की धर निशंक^१

सरांदील का बादशाह बल्लवर
मुन्या अपनी वेदी केरा जूँ खबर

इता कुच हुआ खुश जो बोल्या न जाए
मगर गैब ते लाक गर—कोट आए^२

लगी भड़ने अम्वर ते रहमत की फुई
जलनहार सीने कूँ टंडक हुई

१. हुमादे.....निशंक—वह दूत सिंहलद्वीप की ओर क्या गया मानो हुमाँ पक्षी अरना पंख खोल कर गया। हुमाँ के सम्बन्ध में विश्वास है कि जिसके ऊपर उसकी छाया पड़ती है, वह बादशाह हो जाता है २ इता कुच.....गढ़-कोट आये—सिंहलद्वीप का बादशाह इतना प्रसन्न था मानों उसे लाखों किले प्राप्त हो गये हों। प्रसन्नता के मारे उससे कुछ बोला नहीं जाता था।

शाहज़ादी के घर जाना

भया^१ वस्ल^२ का बाग चौधौर ते
सूका बाग मन का खुल्या सीर ते^३

हुआ फ़रह रोज़ी जनी माई कूँ
तमाम उसके बहनों कूँ हौर भाई कूँ

कबीले कूँ सब आबरूई चड़ी
हुई सब सरांदील कूँ शादी बड़ी

अजीज़ अर्जुमन्द अपनी बेटी के तई
बुला भेजने का किया फ़िक्र वई

बुला भेजने उस उतम जाई कूँ
किया मुस्तइद उस केरे भाई कूँ

दे संगत लश्कर के दल बेहिसाब
बड़े दबदबे सात भेज्या शिताब

जो मुस्ताक़ हो भाई ल्याने चल्या
सगी भान^४ के तई बुलाने चल्या

चचा के नगर बीच ज्यूँ आइया
सो देक उस चचा जीव कर पाइया

हज़ार आरजू सात दोनों मिले
खुशी के कल्यों हर तरफ़ ते खिले

बोल्या घर कूँ ल्या सो मिले भाई भान
एकस कूँ एकस दे लिए जीव दान

जो कुच दुःख अथा आपन दिल मने
सटे काड़ सीन्याँ में ते तिल मनें

लग्या दिल कूँ हम्^१ भान हम भाई की
जो फिर कर जने पेट ते माई की

गम एक सातरा लाक इशरत^२ सँगात
दुआ ले चचा हौर चचानी के हात

निकल वाँ ते सँगात ले भान कूँ
चल्या मिल के सैफुल मुलूक जान सँ

पंते-पंत तीनों कन्थे^३ खोलते
गँमाते वक्रत हौर किस्से बोलते

सरांदील के आए ज्यूँ वो नज़ीक
उमस^४ पर जना बाप खुश हो अदीक

निकल घर ते लाक इन्तज़ारी सती
सो दौड़था वहीं बेक्ररारी सती

जिगर शोशे कूँ अपने ज्यूँ पाइया
छतर कर अपस उसके सर छाड़िया

सिने सँ लगा उस परी चेहर कूँ
उंडेलन लग्या मेह पर मेह कूँ

बड़े दबदबे सात ल्याया उसे
सो फुल नीर सँ मुक धुलाया उसे

ज्यूँ आया गया सो रतन हात में
नवा जीव आया त्यूँ हुआ ज्ञात में

मित्याँ दिल सँ सैफुल मुलूक जान सँ
हुवा आसमाँ उस जली भान कूँ

हकीकत कूँ उसके अपड़ खूब आप
दिया धीरज इस ज्यूँ देवें माई-बाप^१

रख्या उस हतेली के फोड़े नमन
हो दरमान^२ उसका किया दुःख भंजन

करम उसके हक हद ते पैलाड़ कर
सट्या गर्द एक धर थे सब भाड़ कर^३

अजीजाँ में सब दे बड़ाई उसे
इनायत किया पेशवाई उसे

१ हकीकत.....देवें माई बाप—सैफुल मुलूक की हालत जान कर उसने उसे धीरज बँधाया जैसे माँ-बाप अपनी सन्तान को देते हैं २ दवा दारू करना ३ करम.....सब भाड़ कर—उसने सैफुल मुलूक पर बड़ी मेहरबानी की और इस तरह सैफुल मुलूक के दुःख दर्द मिट गए ।

साअद का मिलना

कहानी कहन हार इस धात की
चलाता है खुश बात हर बात की

कि एक दीस सैफुल-मुलूक शहसवार
निकल आइया भार^१ खेलन शिकार

एकाएक बाज़ार में एक जवाँ
नज़र तल पड़्या ज़ार^२ हौर नातवाँ^३

मुसल्लम है दिलगीर^४ हौर बेकरार
वजाहत^५ मने ऐन साअद के सार

किया याद साअद कूँ उस देक कर
अंभू लाइया दूक के नयन भर

अपस में अपे भाइया सरद उसास
किया आपने मन में ग़म बेक़यास

कह्या अपने लोगाँ कूँ “जा उसकूँ लाव
अपे आये लग; घर ले जा बैसलाव”

उसी धात जा उस बुला लाइये
ले जा एक जगे पे बसलाइये

कि ज्यूँ उस मुबारक सवारी सैं फीर
ज्यूँ आया शिताबी सैं अपने मंदीर^६

किया याद आते च उस ज़वान कूँ
बुलाया नज़िक उस परेशान कूँ

शफ़क़क़त^७ जो उसकी ग़रीबी पे आई
कह्या कौन है तूँ सो मुज बोल भाई

१ बाहर २ दुबला पतला और कमज़ोर ३ ग़म ज़दा ४ ऊपर देखने से ५ मंदिर, महल
६ मेहरबानी ।

सो वई वो परेशान जल आह मार
उठ्या बोल कर यूँ कि “ऐ काम गार

कहूँगा अगर मैं मेरे दर्द कूँ
तो ताकत न रहसे किसी मर्द कूँ

भर्या सीना पूर इस दुःख सँगात
कहूँ मैं तुम्हे खोल किस मुख सँगात

मेरा यार एक शाहज़ादा अथा
वो मिलता तो मुज दुख न होता इता

मैं उसकी जुदाई ते लई हूँ हलाक
जल उसके बदल में तिल-तिल कूँ राक

न जानूँ कि वो सूर किस ठार है
मुज उस बाज आलम सब अंधकार है

वो या दूक सो है याके इकबाल सँ
ना जानूँ वो अछूता है किस हाल सँ

है फ़रज़न्द वो मिख सुल्तान का
हूँ फ़रज़न्द मैं उसके परधान का

नेका नाँव उसका है सैफुल-मुलूक
हूँ मैं बेखबर उसके तई भूक-भूक^१

मेरा नाँव साअद वले वास्त^२ नई
कलूँ क्या कि वो यार इस वक्त नई

मैं अपना मुलुक सट हुए तेरह साल
न किस कूँ मेरे अवदसे^३ का मलाल

एकेला हूँ इस शहर में मैं ग़रीब
न कोई मुज अक्कारिब^४ न कोई याँ हबीब^५

कि फिरता हूँ नित याँ दुकानें दूकान
न पिउने को पानी न खाने कूँ खान”

जो अपनी गरीबी वो बोल्या तमाम
सो वो शाहजादा उतम नेक नाम

गलाया दुलना सुना ताबल्या^१
गले ला उसे आँख में आव ल्या

कह्या यूँ कि “ऐ यार आव छोड़ दूक
तेरा यार सो मैं हूँ सैफुल-मुलूक

हमारे नसीबों मने ज्यूँ खुदा
लिखा था सो अपड़ाइया वों खुदा

हमें सर जफ़ा दे फेंकाया सो वो
सलामत रूँ फिर ला मिलाया सो वो

फिकाने के काम हौर मिलाने के काम
खुदा बाज़ भी नई किसे हौर काम

यू जीव उसकी कुदरत पे कुरबान है
कि साहब बड़ा वो मेहरबान है”

मिले देक एक जीव के दूइ यार
हुवा खुश सरांदील का शहरेयार

जो साअद आवारा हो दुक दर्द में
डुब्या था जो गुरबत^२ केरे गर्द में

सो हम्माम में गर्म ले जा उसे
किये खुश धुला आँग हलका उसे

निछल खूब किसवत^३ शहानी पिनाय^४
रंगारंग मजलिस नूरानी भराय

१ गलाया.....सुना ताबल्या—उसने मन ही मन साअद को गले लगाया और बड़ी शान्ति के उसकी बात को सुना २ मुसाफिरी ३ (फारसी) कपड़े ४ पहना कर ।

मैगा नुकुल^१ मद मस्त आराम सँ
दोनो यार बैस आपने फ़ाम सँ

पियाले लगे खेलने जौक सँ
क्रिस्से ल्याके म्याने सटे शौक सँ

नवल जान सैफुल-मुलूक जग उजाल
बजिद होके^२ साअद कूँ लाग्या दुबाल^३

कि मुजते बिलुइ तूँ फिर्या किस वज़ा
खड़या आ तेरे सर उपर क्यूँ कज़ा

छुपा तूँ नको मुजते तक्रदीर कूँ
जो कुच है सो कह खोल मुज धीर तूँ

गुनी यार साअद देक उसका ख्याल
लग्या भार माने कूँ दिल का उबाल^४

गरीबी के बातों लग्या बोलने
कँथा अवदसे का लग्या खोलने

“कि ऐ शाहज़ादे जहाँ ते जो मैं
चल्या काँक कर^५ तेरी सोहबत सों वई

फुट्या जहाज़ हुक्मे खुदाई हुआ
तदाँ ते^६ तुजे मुज जुदाई हुआ

सो बेसुध हो तूफ़ान के बात्र सँ
पड़या एक जज़ीरे में जा ताव सँ

कितेक बार कूँ देखता हूँ जो वाँ
सो चौधीर छाया है ज़ोरों धुवाँ

१ शराब पीते समय खाने के लिए इस्तेमाल की जानेवाली चीज़ें २ हठ करना ३ पीछे पड़ गया ४ लग्यदि।.....ल का उबाल—अपने दिल के उबाल को बाहर निकालने लग ५ अलग हो कर ६ उस समय से ।

हवायों हो उड़ते हैं वाँ साँप सब
लिये हैं जज़ीरे कूँ वाँ टाँप सब

ना आसमान दीसता न कई धरतरी
छुटी सीस ते पाँव लग थरथरी
गगन सार ऊँचे कितेक डोंगरा^१
पड़े उसपे मुसकारते अजगरों

एता कुच वहाँ देखिया मैं अज़ाब
जो नई इस अज़ाबाँ^२ कूँ हद होर हिसाब

पड़था जा बलायों के भौरे मने
पड़था जा के लई-लई^३ जज़ीरे मने

बहुत दिन बहुत ठार फाँके देख्या
कह्या जाय ना ऐसे बाँके देख्या

बसर दिन हुवा आके इस शहर में
मिले शुक्र बारे हमें होर तुमं

वले कुच गनीमत मुजे आज है
गदा मैं तेरा तूँ मेरा राज है^४

वले उस परीज़ाद का खोज कई
तूँ इस हद तलग अजनुँ पाया कि नई

कहीं वी गुलिस्ताने एरम का निशों
किया तुझ कूँ सपड़थाँ कि नई ऐ जवाँ^५

बज़ाँ वो उतम जान सुमिरत गँभीर
कह्या खोल इस धात साअद की धीर

कि “मुज तुज बनाया सो परवरदिगार
मुज उम्मीद का एक सो ल्याया है बार^६”

नहीं कुच खुशी पाइयाँ जायेगी
वो दो दिन कूँ इस शहर में आयेगी^७

१ किले २ अजीबोचारीब ३ बहुत से ४ गदा मैं.....राज है—मैं तेरा फ़तीर हूँ त मेरा चाडशाह है ५ मेरी उम्मीद के दरख़्त में फल लग रहे हैं ।

बदीउल जमाल का सरांदील आना

सआदत के जूँ दीस आगे आइये
बखत रौशनाई सँ भलकाइये^१

सुलखनवंती धनि बदी उल जमाल
एकाएक एक दिन खयाले खयाल

निपट दिल रुबाई के तन्नाज़ सँ
लटकती अपस में अपें नाज़ सँ

सरांदील के राज के घर कँ आई
सो गुम हुई सो इस शाहज़ादी कँ पाई

सगी भान^२ कर जानती थी अवल
बड़ी कर उसे मानती थी अवल

बड़ी दर्द मंदी सँ ग़म खार हुई
एकट दिल सँ मिल जा उस पार हुई

कही “ऐ संगातन^३ इते दीस तूँ
अथी किस वज़ा हौर किस भेस सँ

निकल उस बलाकन ते किस घात आई
छुटक उसके हाथों ते किस वज़ा पाई

सरासर मुझे कह जो दुक अम्र पाऊँ
दुःखी दिल कूँ मेरे सुखी कर बसाऊँ”

सो वो शाहज़ादी उठी बोल यूँ
हकीकत सो अपना कही खोल यूँ

कि “ऐ मोहनी मन की साहब जमाल
जो तेरा मुहब्बत हैं मुझसँ कमाल

१ सआदत.....भलकाइये—जैसे ही अच्छे दिन आगे आये, वैसे ही भाग्य चमक उठा

२ बहन ३ सखी ।

सदा यू मुहब्बत सो कायम अच्छो
भूमकता तेरा हुस्न दायम^१ अच्छो

जो मैं हात में उस बला के हुलग^२
गिरफ्तार होके जो थी आज लग

एकाएक उस ठार परवरदिगार
नज़र जो करम की किया एक बार

सो फ़रियाद-रस^३ मेरी फ़रियाद कूँ
दिया भेज एक आदमी ज़ात कूँ

सो आ भार काड़था मुज उस ठार ते
हूँ शर्मिन्दी मैं उसके उपकार ते

एता कुच किया मुजपे एहसान वो
एता कुच दिया मुजकूँ जीवदान वो

जो तिल उसकी उतराई ना होने पाउँ^४
कि जग में किया वो बड़ा नेक नाउँ

सुन इस बात कूँ कई बदी उल जमाल
कि “आदम कूँ आने न था. वाँ मजाल

सो किस धात उस ठार वो आइया
न थी बाट सो बाट क्यों पाइया

अजायब यू लगता है इस ठार मुज
कना खोलकर तूँ यू गुफ्तार मुज”

कही शाहज़ादी कि “ऐ मोहनी
बड़ी बात है यू नहीं कुच नन्हीं

१ (अरबी) हमेशा २ जो मैं हात.....हुलग—मुसीबत के हाथों में पड़ी हुई जो परेशान थी ३ खुदा ४ जो तिल.....पाउँ—मैं उसका बदला थोड़ा सा भी न देने पाऊँगी ।

कया मुजते जासे^१ न याँ इस वज़ा
कहूँगी कनेका^२ अहे जिस वज़ा

दोनों मिल के चल एक गुलशन में जायँ
दो बातों करें वक्त अपना गमायँ

कि हर बात में इश्क का राज़ है
सुन इस राज़ कूँ तू कि तुज साज़ है^३”

कर इस धात सेती खबरदार उसे
ले जाने मैंगी बीच गुलज़ार उसे

जो वाँ एक फ़रहबूश्^४ गुलज़ार अथा
सफ़ादार अथा हैर हवादार अथा

उसी ठार कर शाहज़ादा मुक़ाम
गवनहार था ज़ौक सँ सुवह शाम

जनी माई कूँ ले वई अपनी दुवाल
चली वाँ अपे हौर बदी उल जमाल

सो चमन चमन गश्त करने लग्यौ
कल्यौ चून चून गोद भरने लग्यौ

कहूँ वाँके चमनाँ कूँ मैं क्यों चमन
कि था हर चमन साफ़ एक-एक गगन^५

भर अमरत सँ चमनाँ के म्यान तमाम
जड़त के अथे हौज़-खाने तमाम^६

कने-बन बरक^७ लहलहाते अथे
कल्यौ पर कल्यौ बार आते अथे

१ जाये २ कहने का ३ तुज साज़ है; तुम्हारे ही लायक है । तुम्हीं से वह कहा जा सकता है ४ आनन्द-प्रद ५ आसमान ६ भर अमरत.....तमाम—उस वास में जो हौज़ बने हुए थे, उन पर हीरे-जवाहरात जड़े हुए थे और वे अमृत से भरे हुए थे ७ वृक्ष ।

पवन भोले खा फूल की डाल हल
सो पड़ते अथे फूल हर भाड़ तल

मगर आ अंवर के चितारे तमाम
चमन में बिछाए थे तारे तमाम^१

अथे बुन्द शबनम के यूँ पात में
रतन खास खूबाँ के ज्यूँ हात में

इलाही के हो जिक्र में मस्त हाल
पंखी गुल उचाते थे खुश डाल-डाल

वो आशिक सो माशूक के ध्यान सँ
मता हो^२ अपस में खुश इलहान सँ^३

जम्ह्याँ ख्याल इस धात गाता अथा
जो हर रूख कूँ हाल आता अथा

पंखी गुम हुए थे वो इलहान सुन
बहता नीर बहता न था; तान सुन

सुनी वो गला ज्यूँ बदीउलजमाल
गली उस गले के उपर रख खयाल^४

“कही याँ यूँ किसका है नादिर गला
किया है मेरी रूह कूँ मुन्तला

गला यूँ न होय कुच बला है गंभीर
कि पानी किया गाल^५ मेरा शरीर

रुमें रूम सुज जौक सारा हुवा
यही रूह कूँ मेरे चारा हुवा^६”

१ मगर.....तारे तमाम—बाग में जो नीचे फूल गिरे हुए थे, वे ऐसे मालूम होते थे मानों आसमान में तारे बिछे हुए हैं २ मस्त हो ३ अच्छी आवाज से ४ सुनी.....रख खयाल—बदीउलजमाल ने जैसे ही उस आवाज को सुना, वह उस पर न्यूँझावर हो गई ५ गला कर ।

कही शाहज़ादी की माँ तब उसे
“धू नादिर गला उस किसी का दिसे

जिनें मेरी-बेटी कू ल्याया अहे
दे जीव-दान सर ते बँचाया अहे

जो देखेगी तू उसकूँ दिखलाऊँगी
नज़िक उसके डेरे के ले जाऊँगी”

सो वई आसरे ते वो चन्दर बदन
देखन आई सैफुल मुलूक के कदन

जो देखी निभा खूब उसका जमाल
दिवानी हो दर-हाल हुई वई निढाल

पड़ी उसके आ इश्क के दाम में
बले टुक रखी थी अपस फ़ाम में^१

दिल उसका लग्या तलमलन^२ तन मनें
किया ठार इश्क उस केरे मन-मन

लगा जीव बातिन में उस सात वई
चले सैर करते हलूँ दौर कई

बले शाहज़ादे कूँ उन आई सो
दरस देख दिल आपसों लाई सो

न थी कुछ खबर मस्त था अपने ठार
अपस में अपे खँचता इन्तज़ार

जूँ उस सात वो चुलबुली दिल लगाई
सो वो शाहज़ादी उसी वक्त पाई

बुला वई नज़िक उस परीज़ात कूँ
उतम दिल रुब़ा सर्वआज़ाद^३ कूँ

१ बले.....अपस फ़ाम—लेकिन उसने इन तमाम भावों को अपने ही हृद तक रखा

२ तल मलाने लगा, बेचैन होने लगा ३ (फारसी) माश्रूक ।

कही “याद है एक हिकायत मुजे
मुनेगी अगर तू तो कहूँगी तुजे

सुनी हूँ कि कोई मिस्त्र में बेनज़ीर
है आसिम गुनी सो नवल शह गँभीर

सत्री कुच खुदा उसकूँ बरूशा अथा
वले उसके तई कोई फ़रज़न्द न था

तवज्जह वल्यौ सात धरता अथा
बहुत खैर आलम में करता अथा

कितेक दिन पिछेंते खुदा उस उपर
नज़र कर जो फ़रज़न्द दिया बख़्तवर

सुक अपना पराया देखत वो सुख्या
उसे नाँव सैफुल-मुलूक कर रख्या^१

जो था उस कने एक दाना वज़ीर
हुआ उसको फ़रज़न्द एक बेनज़ीर

वो साअद कर उसका रख्या नाँव सो
जो अँपड़े बुजुर्गी कूँ एक ठाँव वो^२

कितेक दीस कूँ वो जो स्याने हुए
हर एक इल्म में खूब दाने हुए

सो दोनों पे वो ख़ुसरव गुन बज़ाँ^३
हज़ारों शफ़क़क़त सौ हो मेहराँ

बुला भेज ख़िलअत दे ज़रबख़्त एक
दिया सो अथी सूरत उसमें एक नेक

१. सुक कर रख्या—अपने और पराये लोगों को सुखी देख कर उस सुखी बादशाह ने अपने बेटे का नाम सैफुल-मुलूक रखा २. जो अँपड़े..... ठाँव—एक दिन आगे चल कर साअद बड़प्पन प्राप्त करे ।

कि वो ऐन तेरी च सूरत अथी
वो तुज शहपरी की च मूरत अथी

देखत शाहजादा वो सूरत वहीं
सो आशिक हुआ बेज़रूरत वहीं

चढ़था ज्यूँ उसे इश्क एक बार सर
ले संगीन वैताग^१ का भार सर

जुदा होयकर अपने घर बार ते
निपट तोड़ ले जीव संसार ते

अपे हौर साअद सिना सख्त कर
बिरह सँ कलेजे कूँ सद लख्त कर^२

जहाँ दर जहाँ फीरता-फीरता
दर्या बीच पड़ डूबता तीरता

न चँदना समझता न सूरज की आँच
अदिक बेखबर हो बलायाँ ते बाँच^३

तुजे छँद लेता कहाँ ते कहाँ
हलाकी सेती आइया है यहाँ

किया यूँ उसे इश्क तेरा शिताल^४
नज़र सँ तेरी अख्त उसके उताल

वो आशिक सच्चा है तेरा भूट नई
ज़र इसके तो इश्क में टूट नई

जिनें जीव दिया उस इलाही की सौं
लग्या जीव बाँदया है वो दिल तू सौं

कि दिखलाऊँगी कर तुजे एक नज़र
मैं आते बर्राँ^५ आई हूँ कौल कर

१ मृसीबत २ सौ टुकड़े करना ३ न चँदना बाँच—न चँद की चँदनी से वे
आकृष्ट होते न सूरज की गर्मी से परेशान ४ मजबूर ५ आते समय ।

खुदा जानता है उसे कौल ते
फरागत सँ हुई फारिग इस हौल ते

दिखा हर सनद^१ मुख एक चार उसे
किना आधार है दे तू आधार उसे

मेरा हौर मेरी भाई का रख रेवाज
मेहरबान हो हर तरीक^२ उस पे आज

यही अज मेरा बड़ा आज है
अगर नई तो मुझकूँ बड़ा लाज है”

वो चंदर बदन गुन भरी ज्ञान की
वो निर्मल रतन दुख के खान की

खुश इस धात सेती उठी बोल कर
दिये जवाब ऐसी जबाँ खोल कर

कि “ऐ भागवन्ती सँगातन मेरी
मेहरबान दुःख सुख की सातन मेरी

जो तू मुजपे इजहार यू राज की
सरअफराज की मुज सरफराज की^३

वले मैं परी हौर वो सो बशर^४
बड़ी क्योंकि दोनों में लई है अन्तर^५

एकाएक यू अन्तर सँटू काड़ क्यों
पडूँ भार पदें कूँ मैं फाड़ क्यों

अगर यू सुनेंगे मेरे भाई बाप
गलेंगे हया सँ वो आपस में आप

१ हर प्रकार से २ हर तरह ३ सर अफराज.....की—तू ने मुझे बड़ी इज्जत दी कि
तुमने मेरे सामने एक राज की बात कही ४ (अरबी) आदमी ५ घड़ी.....अन्तर—दोनों
में अन्तर बहुत है। हम दोनों एक कैसे हो सकते हैं।

मेरा हाल रहसे न कुच ठार थे
गुज़रसे न वो मेरे आज़ार से^१

दुजे बार कूँ भेज देसे न भी
मेरा नावँ रोसूँ सूँ लेसें न भी^२

न को हो तूँ इस बात के पै मने
कि हरगिज़ न आसूँ तेरे कहे मने^३

वो ज़ाहिर तो यूँ एतराज़ी अथी
वले दिल सूँ बातिन^४ में राज़ी अथी

समज अकल सूँ खूब इसका खयाल
सो माँ हौर बेटी लगे फिर दुंवाल

“कि शहपरी काड़ सट दगदगा
न को अपने आशिक़ कूँ दे तूँ दगा

न को सर्द पड़ लाज ते गर्म हो
कि है फूल ते नर्म तूँ नर्म हो

हमन बाज़ कोई तुजकूँ हमराज नई
न करसें हमें फ़ाश यूँ राज़ कई

ले जायेंगी तुज ऐसे ख़िलवत के ठार^५
जो कोई ना अछे बाज परवरदिगार

दिखा एक नज़र टूक दीदार उसे
बिना धार है वो दे आधार उसे^६

१ मेरा हाल आज़ार—मेरी कोई हालत बाक़ी न रह जायेगी और कहीं मेरे माँ-बाप मेरे इस दुःख के कारण गुज़र न जायें २ दुजे.....लेसें न भी—मेरे माँ-बाप दूसरी बार यहाँ आने न देंगे और गुस्से से मेरा नाम भी न लेंगे ३ दिल ही दिल में ४ एक्रान्त स्थान ।

बहर हाल फुसला के राज़ी कियाँ
लगा इश्क उस न फिर तें ताज़ी कियाँ^१

हुई देख आशिक़ की वो मुब्तला
नहीं जानत्याँ तूँ च कीता कला^२

१ लगा.....ताज़ी कियाँ—उसके प्रेम को फिर नये सिरे से ताज़ा किया २ हुई.....
कीता कला—बदीउल जमाल, सैफुल मुलूक को देख कर उस पर आशिक़ हो गई। साथ ही
माँ बेटी ने ऐसा जाहिर किया जैसे उन्हें इस सम्बन्ध में कुछ मालूम ही नहीं है।

बदीउल जमाल से मिलना

जिन उस बाग की बागबानी करे
 यूँ उस बाग की गुल फिशानी करे^१

कि ज्यूँ वो छुबीली चंचल गुलेज़ार
 करार आपना छोड़ हुई बेक्रकार

उताली हो आशिक के दीदार की
 सटी लाज हुई यारनी यार की

एकेली नज़िक जा अधी रात कूँ
 उचा उस सँगातन उतम ज्ञात कूँ

कही यूँ कि “मैं तो तेरे बोल पर
 जो थी गाँठ दिल में सटी खोल कर

गवाँऊँ इते दिन की क्यों आशनाई
 कि बज गई है आलम में सब यूँ शनाई

फिरँ क्यों न मैं आज तुज आत में
 कि सँपड़ी हूँ या ख़ुश तेरे हात में

जो देखूँ उसे एक नज़र आज मैं
 कि हूँ उसके दर्शन की मुहताज़ मैं

न जाने नमन कोई, मिल जायें चल
 उसे दूर ते देख फिर आयें चल

कि तूँ हो शिताली है जब ते मुजे
 नहीं ज़रा आराम तब ते मुजे^२

यूँ गत^३ क्या छुपाऊँ तुज अंगे अताल
 कि मैं हुई देक बेसुद मैं उसका जमाल

१ जिन.....गुल फिशानी करे—जो इस कहानी को सुना रहा है, वह अब उस कहानी को इस प्रकार कह रहा है, जैसे उसके मुँह से फूल भड़ रहे हों २ कि तूँ.....मुजे—जब से तुमने मुझे मजबूर किया है, मुझे ज़रा भी चैन नहीं है ३ यह दशा ।

न जानूँ उसे किस घड़ी मैं निभाई^१
नहीं नींद अंखियाँ कूँ तेरी दोहाई

तुसों मिल मैं गरचे बैठी हूँ याँ
वले दिल मेरा सैर करता है वाँ”

लगी उसके दुबाल पड़ हात पावँ
चली ले उसे ढूँढ़ती ठावँ-ठावँ

जो आशिक के डेरे के नज़दीक आई
खबर होय ना त्यों उसे खुश निभाई

सो बैठा देखी मस्त उस ठार उसे
चढ़था है मदन का सो खुश लहार उसे^२

तजल्ला उपर मुख बरसता है खुश
लियाँ अंखियाँ नाज़ों हँसता है खुश

लगे हैं शमे चौकदन नूर के
भूमकते हैं रुखसार^३ ज्यूँ सूर के

अपन मन में भलता अथा मस्त ख्याल
सो टलकी है पगड़ी खुल्या है जमाल

खुले हैं सफ़ा के किवाड़ों तमाम
देवें जलवा डेरे के बाड़ों तमाम^४

खुले हैं रँग-रंग चमन आस-पास
सो महकता है महकारवाँ बेक्यास

डुब्या है सभी बाग़ खुश बास में
सो दौड़था है महकार आकास में

१ देखा २ चढ़या है..... लहार उसे—उसके ऊपर काम का नशा चढ़ा हुआ है ३ गाल
४ खुले है.....तमाम—खूब सरती के तमाम दरवाजे खुले हुए हैं; वह खूबसरत है
और चारों तरफ़ उसकी कान्ति फैली हुई है ।

नज़र जो पड़्या यू तमाशा मोहाल
 सो उस चुलबुली का हुआ हौर खयाल

देखत यू तमाशा बदीउल जमाल
 हो हैरान अपस कूँ न सकसी सँभाल

मती होके वाँ यार के बास ते
 पड़ी थी जो फूलों के ज्यूँ रास ते^१

न थी कुछ खबर उसके तन की उसे
 ज़मीं सेज थी उस चमन की उसे

खड़ी थी सो वई सर्द भाकर उसास
 पड़ी जा चमन में हो फूलों की रास

जो सैफुल-मुलूक आशिके बख्तवर
 मदन मद की मस्ती ते पाया खबर

एकाएक सहरगाहँ बे अख्तियार
 दुरुनी ते डेरे के निकल्या बहार

चल्या सैर करने कूँ चमने-चमन
 सो वो शह परी नार चँदर बदन

पड़ी थी सो देख्या नज़िक जा उसे
 बदीउल जमाल है कि समज्या उसे

अगरचे न देख्या अथा उस अवल
 वले उसकी बेमिस्ल सूरत निछल

चुन्नी उसकी नैनों में बे अख्तियार
 पड़्या वई ज़मीं के उपर बेकरार

जो दीदार का शौक उबल्या अदिक
 दरस देखने तई जो आया नज़िक

१ मती.....ज्यूँ रास ते—बदीउल जमाल सैफुल-मुलूक के शरीर की खुशबू से मस्त हो कर वहाँ फूलों के डेर के समान बिना हिले डुले पड़ी थी २ संभरे के समय ।

अजब नूर केरा अथा मुख पे ताब
कि कुरबान उस मुख पे लक आफ़ताब

भरया नूर उसका अथा पूर ज्यूँ
उबलते थे असमाँ के सन्दूर ज्यूँ^१

मनौवर^२ हुये थे मकानों तमाम
अर्श हौर कुसी के थाँवाँ तमाम

समन पद भरी है अदिक नाज़ तन
सहेली कमल सँ है नाज़ुक बदन

सो रुख़सार रौशन अमोलक हिलाल
सो है नावँ जिसका बदीउल जमाल^३

कोने तूँ बहुत मेहतरी नार है
शकर हौर नमक का जो अंवार है

जमी आरसी नमने ता काफ़ सब
भलकते थे इस धात हो साफ़ सब^४

जो दीसते अथे लोग पाताल के
कि ज्यूँ मोतियाँ ढाल बीच थाल के

देख्या ज्यूँ चंदर उस मुड़ी काड़ कर
सठ्या पैरहन असमान के फाड़ कर^५

सितारे देख उसका निछल नूर सब
लिये हात शर्मिन्दा हो चूर सब

१ भरया नूर.....सन्दूर ज्यूँ—उसका सौन्दर्य चारों ओर फैला हुआ था । ऐसा मालूम होता था मानों आसमान से सौन्दर्य का समुद्र उबल रहा हो २ रौशन ३ सो रुख़सार..... जमाल—उसके गाल पहली तारीख़ के चन्द्रमा के समान रौशन थे ४ जमी.....साफ़ सब—बदीउल जमाल के नूर से काफ़ पहाड़ तक की सारी ज़मान दर्पण के समान भलकनी थी ५ देखया.....असमान के फाड़ कर—चंद्रमा ने ज्यों ही बदीउल जमाल को सर निकाल कर देखा, उसे अपने से भी खूबसूरत पा कर, उसने आसमान के अपने लिबास को फाड़ कर फेंक दिया ।

कलियाँ सब चमन के देख उस भान कूँ
कियाँ चाक अपने गिरहवाने^१ कूँ

जिते सरो वाँ के डुलन हार थे
फ़िदा उस के क़द पर वो सारे अथे

देख उसके नयन बन के नर्ग़िस तमाम
हो बेहोश लड़ते थे ख़िस-ख़िस तमाम

देखत उसके पेचाँ भरे कुरडलाँ
सब आये थे गल बरज़मी^२ सुबुलाँ^३

पवन उस गुल अन्दाम की खास बास
भँवर होके फिरता अछे आस पास

दिवाने हो भाड़ाँ के पाताँ तमाम
दुवा सँ उचाये थे हाताँ तमाम

कि वो नार अवतार कुच हूर थी
न कुच हूर वो ऐन सन्दूर थी

सुती^४ देककर उसकूँ आशिक़ गँभीर
लग्या रोवने उसपे चौफीर फीर

नज़ार्याँ की पै में हुवा जौक़ सात
लग्या वारने इश्क़ के शौक़ सात

दो दीदाँ के अंभुवाँ सँ मशग़ल कर
छिनकने लग्या शबनम उस फूल पर

जो वो शहपरी बास आदम की पाई
एकाएक उठी नाज़ सँ दी जमाई^५

१ ऊपर के वस्त्र में सीने पर का वह हिस्सा जिसमें बटन लगता है। गिरह शब्द फ़ारसी के 'ग्रे' का अपभ्रंश है, जो संस्कृत के 'ग्रीवा' से मिलता है और उसी अर्थ में है २ ज़मीन पर ३ एक विशेष प्रकार की घास, जो धुंधुराले बालों के समान होती है ४ सोई हुई ५ उसने जम्हाई ली।

निभा देखती है जो अंख्यों पसार
नज़िक आके बैठा है वो दोस्त दार

धूँध में छुपा मुख वहीं नाज़ मैं
हलूँ खोल अधर नर्म आवाज़ सूँ

कही “थूँ तो वाजिब नहीं है तुजे
जो नज़दीक आकर निभावे मुजे

मैं औरत शरम की हूँ होर मई तूँ
न मैं तुजकूँ जानूँ न तूँ मुंजकूँ

पनज मैं तूँ आदम है होर मैं परी
नहीं महरम आदम सेती कई परी

सबब क्या अथा आने इस रात कूँ
कना मुभकूँ तई खोल यू बात तूँ”

वफ़ादार वो आशिके नामदार
जो माशूक थे पाइया यूँ अधार

सो खुश बेनिहायत हो पाया उमस
रगे-रगे मैं दौड़था नवा रंग-रस

ज़वाँ खोल बातों लग्या बोलने
रतन जीव के राज के रोलने^१

“कि ऐ बेवदल मोहनी जग उजाल
जो है नावँ तेरा बदीउल जमाल

तेरा नावँ पर थे हूँ बलहार मैं
सटूँ जीव कूँ तुज उपर वार मैं

नज़र कर मेरी धीर जो अम्र पाउँ
देखूँ दीद पर दीद टुक दुःख गवाउँ

१ पैदाइश में २ रतन जीव के.....रोलने—दिल के भेदों को बतलाने लगा ।

कि धरता हूँ सीने में दुःख कड़ज़^१ मैं
हुआ हूँ पिरित अंग में जल भड़ज़^२ मैं

इता कुच भरथा है मेरे मन में सोज़
जो सुलगी उस लाक भड़के हर रोज़

अभूँ मुक्त नयन थे जो ढलते अहें
तेरे इश्क के दाट^३ उबलते अहें

तेरे लिए च फिरता हूँ मैं रात दीस
लिया हूँ तेरे लिए च वैताग भेस^४

यकीं जान मैं आशिके पाक हूँ
तेरे इश्क का पाक बेबाक हूँ

तेरे लिए किता रंज देख्या हूँ मैं
जो देख्या नहीं कोई दुनियाँ में कई

न यू कुच आया है मुंज धीर थे
कि नाज़िल हुआ है यू तक्रदीर थे

तेरे वस्ल^५ का देक मुंज मन कूँ आस
दिया है खुदा भेज मुंज तेरे पास

नको देक अपस थे बेगाना मुजे
भला है जो अपना कवाना^६ मुजे

बचन बोल वो आशिक इस धात सँ
हुवा उस पे कुरबान सब ज्ञात सँ

चतुर चुलचुली धन बदीउल जमाल
छुपा मन में रख यू मुहब्बत कमाल

१ अधिक २ भाड़ में जलनेवाला ३ (मराठी) बहुत अधिकता से ४ ऐसा वेश या ढंग,
जो मुसीबतों से भरा हुआ है ५ मिलना ६ कहवाना ।

उबलते पिरित कूँ सो मन में जिरो^१
बहाने सेती तूँ उठी बोल वो

कि “ऐ शाहजादे गुनी बख्तवर
अपस मन के सौरात^२ पर रख नज़र

तूँ मुज सात तो इश्क लाया न देक
तूँ मैं इश्क क्यों ल्याऊँ मैं देक-देक

अगर तुजसूँ निस्वत कुच अच्छती मुजे
मैं अपना कर हर वज़ा पाती तुजे

एकाएक तेरी बात कूँ क्यों पत्याउँ
एकाएक तुज सात क्यों मन लगाउँ

फिरथा बहुत मुल्क तूँ टूट कर
मुवादा^३ तेरा दिल अछे भूट पर

सुनीं हूँ बशर^४ में नहीं कुच वफ़ा
तूँ मैं जीव ल्याये तो क्या है नफ़ा

तूँ जा याँते सँभाल ले आप कूँ
कि डरती हूँ मैं अपने इन बाप कूँ

अगर कोई देखेंग याँ मेरे लोग
तो आज़ार अँपड़ायेंग^५ दोनों कूँ ठोंक

सलामत सँ मुश्किल है फिर बाँचना
समज ले तूँ आक़िल है तुज क्या कना^६”

चुप अज़मावने कूँ कती थी वली
दुरू^७ में उसे थी अदिक तलमली

लगा रोजे सैफुल-मुलूक सुन यू बात
निकल तन थे गई तूँ हुवा उस हयात^८”

१ दबा कर ; यह शब्द फारसी के ज़र करदन, धातु से बना है २ ख्वाहिश ३ (फारसी)
कहीं ऐसा न हो ४ आदमी ५ मुसीबत में डालेंगे ६ मन में ७ निकल उस हयात—
उसकी हालत ऐसी हो गई, मानों उसके शरीर से प्राण निकल गये ।

गोता खाइया वई मुंडी ढाल कर
सट्या विरह अगिन सँ अपस जाल कर

हुवा सर थे संगीन दुक उसपे यूँ
रखे पाड़ कूँ लाके काड़ी पे ज्यूँ^१

रह्या जीव होटा मनं आ उसे
हो बेसुद अकल सर चड़ी जा उसे

देक ये हाल मोहन बदीउल जमाल
हो मन में मुसल्लम परेशान हाल

पछानी कि यूँ कुच तो बाज़ी नहीं
हक्रीक्री पिरित है मजाज़ी^२ नहीं

उचाई नज़िक जा उसे हात मूँ
गले लागती जीव के सौरात सँ

देती लक वज़ा सात जीव दान उसे
सो तहक्रीक कर पाई ईमान उसे

मुहब्बत जो जागा किया दिल मनें
रखी पाँव यारी के मंज़िल मनें

पलो सात अँजू उसके पंचन लगी
भरोसा दे धीरज सों बोलन लगी

“कि ऐ मेरे मन के संगती अताल
न कर दूक तूँ हौर नको हो निटाल

तूँ आशिक मेरा कर सची पाई मैं
यकीं तुज सँ ईमान जीव ल्याई मैं

१ हुवा सर.....काड़ी पे ज्यूँ—फिर नये सिरे से उसे बहुत अधिक दुःख हुआ। उसके शरीर के लिए वह दुःख काड़ी पर पहाड़ के जैसा था २ भूठा।

वले क्या करूँ नई मुजे अख्तियार
पर्याँ मुज मुवक्किल^१ हैं कई लक हज़ार

न तदबीर है कुच जो हीला करूँ
एकाएक तुसूँ क्यों वसीला करूँ

मेरी एक दादी सो है एक ठाँव
शहरवानो उसका अहे नेक नाँव

जो सीमीपटन शहर है एक गँभीर
वो करती है वाँ खुसखी बे नज़ीर

है सारों कूँ उसका बड़ा एतबार
कि है सब कबीले की वो नामदार

वले जाँ तलक शहर की घाट है
वहाँ लग अगिन काच एक घाट है

सकत है जो बारा^२ जहाँ फिर सके
वले नई यू कुदरत वहाँ फिर सके

कि दरिया अगिन की उबलती है वाँ
जमीं गर्म तौबा हो जलती है वाँ^३

कही त्यूँ करेगा जो ऐ जान तूँ
किये त्यूँ है लक मुजपे एहसान तूँ

भला है जो वॉलर्ग^४ अपे जाये तूँ
कि हाल आपना मुद्दुवा^५ पाये तूँ

कि अपड़ेगी वो तेरे अहवाल तई
कुबूलेगी वो तेरे अकवाल तई

कि वो गुन भरी बख्तवर नेक नाम
करेगी तेरा काम हर क्यों तमाम

१ मेरी रखवाली के लिए मुक़रर हैं २ हवा ३ ज़मी गर्म.....जलती है वाँ—वहाँ की ज़मीन आग में जल कर तबि की तरह लाल है ४ वहाँ तक ५ इच्छा ।

कि धरती है वो दोस्त^१ इंसान कूँ
करेगी बहुत प्यार तुज जान कूँ

जो तेरी ज़बाँ थे वो रौशन ज़मीर
मुनेगी तेरा किस्सा यूँ दिल पिज़ीर^२

तो हर क्यों^३ करेगी तुजे सरफ़राज़
कि शाहवाज़ाँ में तूँ शाहवाज़

मेरी माई दौर बाप कूँ मँग ले
मिला एक करेगी मुजे हौर तुजे

कि धरती है कुदरत वो असबाब का
हो खुशहाल तूँ वक़्त है लाब^४ का

वले तुज अकेला केरा नई है काम
जो ढूँढ़ कर सके काड़ उसका मुक़ाम

सलामत सों अपड़ाय तुज मीत कूँ
देऊँगी संगत एक इफ़रीत^५ कूँ

ना आज़ार होय तूँ तेरे बाल कूँ
वहाँ भेज देऊँगी तुज लाल कूँ^६

जो कुच ग़म है दिल में सो तूँ काड़ सट
गरद दर्द का मुख पो थे भाड़ सट

तरे तई वो शाहज़ादी हौर उसको माई
बहुत कुच सिफ़ारिश किया मुजकूँ आइ

किते वज़ा सों कर सिफ़ारिश तेरा
पड़ी थी गले अंत लेने मेरा

१ दोस्त रखती है २ दिल का पिघलाने वाला ३ हर तरह से ४ लाभ ५ ज़िन्न, देवों की एक योनि विशेष ६ ना आज़ार.....लाल कूँ—वहाँ तुझे इस प्रकार भेज दूँगी कि तेरा बाल भी बाँका न होगा ।

वले कूच खातिर मैं ना लाई मैं
तगाफुल^१ में सुन कर अपस भाई मैं

अभी तूँ नको बोल कुच उनके धीर
खज़िल^२ कर नको गाल मेरा सरीर”

क्या शाहज़ादा “मेरा क्या मजाल
जो ठेलूँ तेरी बात ऐ जग उजाल

तेरा अम्न मुज सर पे ज्युँ ताज है
मुजे तुज तरफ़ थे रेवाज^३ आज है”

बचन घट करे यूँ हुए एक दिल
सुबह लग गये बाग़ में दुई मिल

उजाला^१ हुवा जग में ज्युँ सुबह का
रहे ले अपन टार अनजान ज़ा

बदीउल जमाल का आना

अलामत सँ नेक अस्तरी का जुहूर
किया जूँ जहाँ में जहाँ ताब सूर^१

सो उसकी सँगातन सों मिल उसकी माई
मितर उस परीज़ात के डेरे आई

दुआ कर कही यूँ कि 'ऐ गुलेज़ार
अजब आज का दीस है कामगार

गुनीमत है यूँ फुरसत आराम कर
तूँ कल शर्त की तूँ च अब काम कर^२

कही शर्त कल की बजा ल्याव नाँ
तेरा दइस उस आज दिखलाव नाँ^३

नको ठेल दे तूँ मेरी बात अताल
मेरा दूद पी है सो कर तूँ हलाल

जो बेटी मेरी भान तेरी अहे
तूँ उस थे सगी मेरी बेटी अहे

कलेजा कते सो मेरा तूँ है आज
सच ईमान मुज जीव केरा तूँ है आज

तूँ आज उसी दुःखी यार कूँ याद कर
दिखा दरस तेरा उसे शाद कर

जुदाई तो नहीं कुच हमन तीन में
तूँ एक नाम कर ले दुनियाँ दीन में

१ अलामत सूर—अच्छी किस्मत का तारा इस तरह चमकने लगा, जिस तरह सूर्य सारे संसार को प्रकाशित कर देता है २ तूँ.....अब काम कर—कल तुमने जो शर्तें बांधी, उनके अनुसार काम करो ३ कही शर्त.....दिखलाव नाँ—तुमने जो शर्त कल की थी उसको पूरा करो अपना दर्शन सैफुल-मुलुक को दो ।

कहूँगी तुजे तो बदीउल जमाल
जो उस बे-नवा' कूँ करेगी निहाल

मिन्नत मेरी खातिर में ल्या हर सनद
कि रहेगा तेरा नावँ अज़ल^१ ता अबद^२

ज्यूँ इस रात पर थे छुटी गुदगुली
सो राज़ी हुई वो चंचल चुलबुली

मुहब्बत मने देक उसका खयाल
कुबुली वो कये त्यूँ बदीउल जमाल

जमा कर खुशी मन के सौरात की
किये गर्म मजलिस खुश उस रात की

कुदूरत^३ साँ ज्यों आरसी पाक हो
असर सात सुसर साँ तरबनाक^४ हो

सो चारों मिले खुश हो वई एक ठार
सो बैठे लताफ़त साँ मजलिस सँवार

अदिक गर्म सोहबत सो खुश सात हुई
टल्या दीस बातों में सो रात हुई

हुब्या सूर; महतार्व^५ आया निकल
बरसने लग्या साफ़ चंदना निछल

सितारे भूमकने लगे ठार-ठार
छुपा जाके जुल्मात^६ में अंधकार

उजाला हुआ साफ़ यूँ चौकदन
जमीँ कूँ मगर लाये थे घस चन्दन^७

१ गरीब २ (अरबी) सृष्टि का प्रथम दिन ३ (अरबी) सृष्टि का अन्तिम दिन, क़यामत का दिन ४ ग़म और गुस्सा ५ (फारसी) खुश ६ चन्द्रमा ७ वह स्थान जहाँ हमेशा अंधेरा रहता है ८ उजाला.....घस चन्दन—चारों तरफ़ चाँदनी फैली हुई थी । ऐसा प्रतीत होता था मानों किसी ने ज़मीन पर चन्दन घिस कर लगा दिया हो ।

सफ़ादार इस बज़्म के नूर थे
भूमकते अथे शमाँ खुश दूर थे

हर एक ठार पर शमाँ की रौशनाई
जकाजोत सो चौकधन जगमगाई

मँगाये निछुल मस्त रंगी शराब
सुरायों भरे पाछु^१ क्याँ बे-हिसाब

फिराने लगे प्याले याकूत^२ के
सटे म्याने बादाम ल्या कूत के

वो गुनवन्त शहज़ादी हौर उसकी माई
अधी रात लग वक़्त अपना गँवाई

रज़ा ले चल्याँ वाँ ते अपने मंघीर^३
हुई याँ खुशी ज्यास्त दोनों कूँ फीर

असर भेद मन में हुए मस्त ख़याल
वो सैफुल मुलूक हौर बदीउल जमाल

जो देखन लगे खूब एकस कूँ एक
अँख़ियाँ में रहे खूब एकस कूँ एक

कि थे एक ते एक साहब जमाल
मती हो मुहब्बत के वो जग उजाल

हलूँ हात में हात लेने लमे
चुमे लग मुहब्बत साँ देने लगे

मदन दो तरफ़ थे जो आया उबल
हुए महब आपस में आपीं पिघल

हुए सुद^४ गवाँ बेख़बर दो जनें
सुते मिल के वई एक बिछाने मनें

१ हरे रंग का एक बेशक्तीमती पत्थर २ लाल रंग का हीरा ३ मंदिर, महल
४ सुधि, होश ।

व लेकिन उनन में न था कुच ख्याल
कि थे पाक दामन में दोनों कमाल

जो कोई पाक आशिक है बावल नहीं
वो संगीन है कुच उतावल नहीं

यकीं जान तू इश्क जाँ पाक है
तलब नफस का उस आँगे खाक है^१

सुबह जो रयन^२ में थे पैदा हुआ
जो मशरिक कदन थं हुवेदा हुआ^३

छुपा चाँद जा सूर की ताब थं
एकाएक उठे जाग वो खाब थं

चले अपने खीमाँ में भट फाँक^४ हो
रहे दोनों दो धीर थं दो आँख हो

सो सैफुल-मुलूक रात के जौक सात
कह लेने लग्या इस वज़ा शौक सात

कि क्या कुच मुबारक थी रात आज की
मगर हूर आई थी मेराज^५ की

अजब फ़ैज़ पाया मैं उस रात में
कि माशूक आया था मुज हात में

मुजे इश्क का मस्त आपड़्या शराब
सेता था मेरे गोद में माहताब

यही जौक जीता हूँ लग बस मुजे
यही रंग बस है यही रस मुजे

चड़्या तन कूँ कस दिल कूँ उमस हुआ
बड़। जस हुआ मुंज बड़ा जस हुआ

१ यकी जान.....खाक है—जहाँ पवित्र प्रेम है, वहाँ प्रेमी शारीरिक प्रेम को तुच्छ समझते हैं २ रैन, रात ३ प्रकट होना ४ अलग हो ५ स्वर्ग ।

सैकुल-मुल्क का सीमीपटन जाना

जो उस बावरी का परीज़ात कूँ
लग्या आव उस सर्वेआज़ाद^१ कूँ

चड़ी इश्क के खुश हँडोले मने
पड़ी जा मुहब्बत के भूले मने

हुई ज्यूँ कि लैला सो उस लाल की
भँवर होके उस फूल की डाल की

परेशान जी में लगी फीरने
लगी बिरह दरिया मनें तीरने

गोते बेसुदी^२ हो जो खाने लगी
सो हैरत में पड़ रंग फिराने लगी

दीवानी हुई सुध सटी ज्ञात की^३
लगी खूब सोहबत असर रात की

जो पाई खबर फिर कितेक बार कूँ
खबरदार हुई ज्यूँ सुबह टार कूँ

सगी अपनी दादी कूँ तब याद कर
रबी नाम ले नाँमाँ^४ बुनियाद कर^५

करी खुश इब्रत सँ तहरीर यूँ
लिखी इश्क ताज़ा की तक्ररीर यूँ

जो हर बोल पर वो पिगल नीर होय
पिगल नीर हो आपने धीर होय

लिखीं हर सतर सो सतर सेह^६ की
उस उपराल वई मोहर की मेह^७ की

१ (फारसी) आशिक २ बेसुध ३ दीवानी.....ज्ञात की—वह प्रेम में पागल हो अपने
आप को भूल गई ४ पत्र ५ प्रारंभ करना ६ जादू ७ प्रेम ।

निछल गुन भरी शह परी बेमिसाल
सुलखन^१ चतुर धन बदीउलजमाल

अदब की रबिश सँ सरा^२ बेहिसाब
लिखी अपने हाताँ सँ दादी कँ ज्वाब

बुला कर कही एक इफ़रीद^३ कँ
मेरा मीत है एक इस मीत कँ

ले जा काड़ सीमीपटन लग शिताब
मिला मेरी दादी सँ दौर ल्या ज्वाब

कह उस शहर बानूँ कँ मेरा सलाप
जो कुच मुद्दुवा^४ है सो उसका तमाम

ले कर आवले अपने खातिर मनें
कि आया है वो आस कर तुज कने

वो फरमाई थी तूँ च इफ़रीद सो
मलिक ज़ादे कर आइया दौड़ वो

कहा ऐ जगाजेत नूरी निहाल
मुजे भेज दी है बदीउल जमाल

तुजे अपनी दादी कन अपड़ाव कर
खबर अपड़था सो तुस्त ल्याव कर

चला तूँ मेरे सात एक तिल मनें
तुज अपड़ाउँगा उसको दादी कने

नज़र राख सैफुल-मुलूक बरक़ज़ा^५
सरांदील के शह से लेता रज़ा

वो साअद कते सो नन्हें भाइ थे
वो शहज़ादी हौर उस केरी माई थे

१ सुलक्षण, अच्छे लक्षणोंवाली २ सराह, तारीफ़ कर ३ प्रेतों की एक योनि विशेष

४ इच्छा ५ तक्रदीर पर भरोसा करना ।

दुवा मँग ले इफ़रीद पीट पर
चढ़था जो क़ह्या वो अँख्याँ मूच कर

जो सैफुल-मुलूक ज्यूँ अँख्याँ मूचिया^१
वो इफ़रीद वई वाँ ते हमला किया

उड़ाया कबूतर कर उस जान कूँ
चल्या हौर लग्या जाके असमान कूँ

उलंग आग का गर्म सन्दूर घाट
पकड़ रास सीमीपटन धीर बाट

ज्यूँ शहर केरे नज़िक आइया
अँख्याँ शाहज़ादे कूँ खोलो क़ह्या

उतारथा जो इस शहर में जा उसे
अजायब दीस्या वाँ तमाशा उसे

देख्या ज्यूँ अँख्याँ खोल सैफुल-मुलूक
सो लागे अजब वाँ के बरबस्त^२ लोग

परथाँ का जो ग़ौगा^३ है दर हर मकाँ
नहीं आदमी ज़ात का कई निशाँ

ज़मीं वाँ की दीसती है जोती तमाम
कि कंकर न थे वाँ थे मोती तमाम

सकल कोट चौगिर्द भंगार^४ का
बरसता है वाँ नूर करतार का

मुरस्ता^५ के चौंधीर थे भाँच^६ उसे
रखे हैं अज़ल^७ थे मगर मौज उसे

बँदे है लूजा उसपे अलमाश^८ का
मंडप उस पे ताने हैं आकाश का

१ आँख बन्द किया २ चीजें ३ शोर-गुल ४ भीषण शब्द ५ (फ़ारसी) जड़ाऊ, जिस पर
वेशक्रीमती पत्थर जड़े हुए हों ६ कलश ७ शुरू से ८ वेशक्रीमती पत्थर ।

सोने की है चौंघीर ऊँची दीवार
जड़त के कंगूरे उपर ठार-ठार

लग्या है बड़ा बाग़ उस आस-पास
संदल, ऊद, अगर के बैरक बेक़यास

हर एक ठार अमृत की तासीर के
बहते हैं निछल काल्वे^१ नीर के

दिये हैं हर एक ठार डेरे बलन्द
तनावों मुरस्सा के मेखाँ कूँ बन्द

न था शहर आलम में इस धात कई
हुआ देक़ शाहज़ादा हैरान कई

लग्या फ़िक्र करने जो उस ठार पर
कि खीमाँ शहर बानूँ का है किधर

दिया उसकूँ इफ़रीद ज्यूँ आ निशान
सो नज़दीक़ शहज़ादा आया पछान

अखंड पाच^२ का देख्या एक तख़्त
उस उपराल वो मावली^३ नेक़ बख़्त

शगुफ़ता^४ हो बैठी है खुश दाव़ सों
खड़याँ हैं परयाँ सब मिल आदाव़ सों

मुक़ल्लल है किसवत मनें नूर की
तजल्ली दिंपे मुख़ उपर सूर की

वो आशिक़ चलन हार इफ़रीद सात
खड़या सामने जा रविश रीत सात

अंगे हो किया शाहज़ादा सलाम
सो देती अलैकी^५ फिर वो नेक़ नाम

१ नहरें २ हरे रंग का देश कीमती पद्वार ३ माता; बूढ़ी औरत ४ खुश हो कर ५ सलाम का जवाब देना ।

कही तूँ सलामाँ न करता मुंजे
तो करती बिला उज्र टुकड़े तुजे

कि देवाँ व परियाँ कूँ इस ठार पर
सकत नई हैं आने की यूँ बेजिगर

अथा सख्त तेरा कलेजा बड़ा
जो आकर मेरे सामने तूँ खड़ा

सो यूँ आ कहा शाहजादा उसूँ
कि मुंज ते हुआ है गुनह बग़्श तू

बदीउल जमाल उस लिखी सो जवाब
दिया हात में जाके उसके शिताब

पड़ी सरबसर ज्वाब वो खोल ज्यूँ
रख उसकी तरफ़ कर उठी बोल यूँ

देखी हर्फ़ दरहर्फ़ मशगूल हो
सो खातिर^१ में अपने खिली फूल हो

वो मतलब उसे खुश मुवाफ़िक़ लग्या
यू आशिक़ वो माशूक़ लायक़ लग्या

देक उसके कधन मेहरवानी में आई
नज़िक़ बैसला हम ज़बानी में आई

शक़ल सूरत उसकी निभाने लगी
अदिक़ फ़रह पर फ़रह पाने लगी^२

कि तूँ कौन है हौर किघर का अहे
जो इश्क़ इस सहेली सों धरता अहे

तेरी ज्ञात आदम दिसे वो परी
तूँ सूँ जुफ़्त^३ क्यों होवे वो गुन भरी

कि है वो चंचल पद्मिनी आतिशी
तुज आतिश सँ गमने कूँ क्यों हुई खुशी

क्यों उस नार से हो सके जुफ्त तूँ
कि देख्या अहे यू मगर मुफ्त तूँ^१

मेरी जान कूँ बहुत मुश्किल दिसे
कना क्यों वो तुज एक तन, एक दिल दिसे

मुनी हूँ पर्याँ थ मुजे याद है
बड़ा बेवफ़ा आदमी ज़ाद है

वफ़ा आदमी ज़ाद में कुच नहीं
जहाँ कुच वफ़ा नई वहाँ सच नई

मैं किस धात बर ल्याऊँ तेरा मुराद
कि मुंज दिल कूँ लगता नहीं एतमाद^२

सुन्याँ शाहज़ादा जो इस बात कूँ
उठ्या बोल उस वक़्त इस धात सँ

अगिन इश्क की फीर इस बात ते
उठी मुलगा कर उस जले ज़ात ते

कि “ऐ बख़्तवर माई गुन ज्ञान की
तूँ सन्दूर सचली है इरफ़ान^३ की

अछो उम्र दुनियाँ में तेरा दराज़
कि तूँ फ़िल हकीक़त है आदम-नवाज़

जो कुच तूँ कही सो मुजे सच कही
वले सुन कता हूँ तुजे मैं सबी

लग्या है मेरा दिल उम्र सुवह शाम
भरी है मेरी ज़ात में वो तमाम

१ कि देख्या.....मुफ्त तूँ—बदीउल जमाल को तूने बेकार ही देगा है २ पूरा करूँ

३ समुद्र ४ ज्ञान ।

अगर पूछती है तो मुँज बाले-बाल
 बदीउल जमाल है बदीउल जमाल
 मैं उस नार का पाक आशिक हूँ कर
 बजा है ढँढोरा नव आकाश पर
 उतम ज्ञात वो नार आतिश नेहार
 टंडी मुज लगी आव थे बी ज़ियाद
 न कुच मुँज में हौर उस मनं फर्क है
 यू तन उसकी पीरित मनं शर्क है
 बजा है मेरा हाँक मुलुके मुलूक
 मदन कामता मैं हूँ सैफुल-मुलूक
 मैं वो आदमी हूँ जो सब थे अवल
 दिऊँ जीव उस शहपरी के बदल
 जम उस मोहनी का वफ़ादार हूँ
 सदा जीव सँ उसका ख़रीदार हूँ
 बहूत दूख देख्या हूँ मैं उसके तई
 जंगल घाट कोई नई न देख्या सो मैं
 फिरयाँ डोंगराँ डोंगराँ^१ दूख के
 किया दौड़ लई गश्त सन्दूर के
 कि उसके बदल में जफ़ा^२ सीस ले
 जिया जालिया^३ हौर सिना पीस ले
 फिरया सर ले मैं दुःख के डोंगराँ
 किया तल उपर सात मैं सन्दुराँ
 बहूत मारकाँ पेच^४ के देखिया
 तमाशे तमाशे जगह देखिया

मेरे दर्द दुख कूँ निहायत नहीं
मेरे अवदशे कूँ जो गायत^१ नहीं

तू ही यूँ सुनेगी मेरा दर्द अगर
अजब क्या जो जावे सिना तख्त^२ कर

गरीबी मेरी कुच बिसरने की नई
एकाएक मेरी बेग सरने की नई^३

दचन बोलता हौर रोता अथा
भरा रंग तशय्यीर^४ होता अथा

जो याद आई वो धन सो हो चर्खे गई
हुआ बेखबर फिर सिना तख्त^२ गई

देखी शहर बानू कि सख्ती च यू
हुआ है गुम उसके पिरित बीच यू

समझ ली उसे आशिके पाक कर
हुवा है बिरह खर्ग^५ थे चाक कर

कही जो भला उसके हक पर अताल
जो वाकिफ हो उसको करूँ मैं निहाल

नज़िक आपने प्यार सूँ गई बुलाई
बहुत मान दे तख्त पर बैसलाई

कही “शम नको कर तूँ खुशहाल अछ
खिल्या ताज़ा जूँ फूल का डाल अछ

कि हर क्यों करूँगी तेरा काम मैं
दिलाऊँगी तुज वो दिल आराम मैं

खिलाऊँगी गुंछा तेरे आस का
दिपाऊँगी तारा तुज आकाश का

लगाऊँगी मरहम तेरी रीश^१ कूँ
मिलाऊँगी तुज सँ तेरे खीश^२ कूँ”

जनी माँ हो फ़रज़न्द पाई उसे
दे इस धात तक़वा^३ ज़िलाई उसे

बज़िद उसकी हुई कारसाज़ी मने
चित उसकी रखी सरफ़राज़ी मने

तलब सारे देवाँ कूँ कर एक बार
जमा करने फ़रमाई सब एक ठार

तमाम अपने लश्कर हशम^४ भार सँ
मिल इस तलमलाते जलनहार सँ

हवा के उपर दो तरफ़ बान^५ सफ़^६
चली वई गुलिस्ताँ एरम की तरफ़

नज़िक गुलिस्ताने एरम के जूँ आई
सो एक ठार शहज़ादे कूँ बैसलाई

चली शहर में आप खुशहाल सँ
मिली जाके फ़रज़न्द शहबाल सँ

देवों के द्वारा पकड़ा जाना

जहाँ जानियाँ^१ जिस निगहवान है
न उसकी कधीं ज्ञात कूँ ज़ियान^२ है

अजब कुच समाया है इस ठार का
अजब खेल कुच यौ है करतार का

कि जिस ठाँव वो आशिके नेक नाँव
अकेला रह्या जो अथा कर मुक्ताम

सो वो ठाँव अवतार कुच ठार था
जनत के गुलिस्तान के सार था

खिले थे कितेक जिन्स के फूल वाँ
बू के बिन न थी नाँव कूँ धूल वाँ

डुबे थे चमन सरबसर फूल में
किते जिन्स की बास हर फूल में

पवन बाज वाँ कोई माली न था
किसी फूल थे बिन वो खाली न था

कहीं राई चम्पा कहीं सेवती
कहीं मोंगरा हौर कहीं रेवती

कहीं यासमन हौर मदनवान कई
कहीं ताजे सुख हौर रैहान कई

कहीं लाल हौर कहीं रँगिले गुलाल
कहीं फूल सद्दर्ग के वेमिसाल

कितेक इस मनें फूल कीते कल्यौं
देखें ता नयन कूँ उटें गुदगुल्यौं

कहीं तख्ते अंगूर के बेबदल
कहीं अंजीर वो अनार शीरीं निछल

कहीं सेव हौर कई अनन्नास खूब
कितेक जिन्स के मेवे खुश बास खूब

कई अखरोट बादाम पिस्ते नफीस
कई जौज़ चिलगोज़ दिसते नफीस

खुश ऐसे अचंचे गुलिस्तान में
लगया सैर करने अपन ध्यान में

ठंडी कुच हवा वाँ की जूँ उसकूँ भाई
सो एक भाड़ तल खुश उसे नींद आई

कज़ारा^१ वो इसफ़न्द केरा परा
जो उस शाहज़ादी कूँ लेके उड़ा

रखा जो अथा कैद कर बन्द सैं
जो नींद उसकी बाँद्या अथा दन्द सैं

दुःखी उस परे का बड़ा भाई हो
मुसल्लम सुक आराम थे हात धो

तलब कर पर्याँ कूँ सो कई लक हज़ार
किया सबको ताकीद यूँ बेशुमार

कि “मारया जो है भाई कूँ मेरे कोई
सो वो आदमी बाज दूसरा न होई

ढूँढो जाके मशरिफ़ ते मशरिफ़ तलग
करो तल उपर मुल्क एक धर ते जग

लफ़्फ़हुस^३ सिते हर सनद पावो उसे
मेरे पास जीता पकड़ ल्यावो उसे

चल्याँ वई परयाँ ढूँढ लेत्याँ उसे
सो फिरने लग्याँ पूछ्याँ हर किसे

उनन में थे कितेक परयाँ पाइयाँ
मलिकजादे के हक्क पे वो धाइयाँ

एकाएक आयाँ उसी बन मनें
सोता उसकूँ पायाँ उसी बन मनें

नज़िक आ तमाम उसकूँ कीता हुशियार
कह्या कौन है तू तेरा कौन ठार

न था उस बिचारे के तई फ़ाम कुच
एकाएक खड़्या सर पे आ काम कुच

समज यूँ पछान्याँ^२ कि सब यूँ परयाँ
इसी ठार क्याँ होयेंगी सुन्दरयाँ

जो कुच था किसा आपना सरबसर
कह्या इस परयाँ धीर ना जानकर

वहीं वो परयाँ उस उपर टूट पड़्याँ
हवा के उपर ले उसे वई उड़्याँ

चल्याँ गुलिस्तानेएरम ते उलंग
पिछौंड़े बन्द्याँ ज़ोर वर ज़ोर तंग

पड़ी उसके गरदन पे ज्यूँ यूँ बला
न सह सक जफ़ा तलमला-तलमला

कह्या शाहज़ादा यूँ क्या हाल है
यूँ क्या कह है जो मुज उपराल है

दियाँ ज्वाब सब वो परियाँ यूँ उसे
“तू सँपड़्याँ सितम पूछता है किसे^३

१ (अरबी) खोज २ पहचाना, समझा ३ तू सँपड़्या.....पूछता है किसे—तुमने जुल्म किया है, अब हम से क्या पूछने हो ?

परा^१ जो मुवा है तेरे हात सँ
लगा है फिकर उस केरे भाई कूँ

वो दरियाये कुलजुम केरा राज है
शाँ में बड़ा सो वही आज है

हमीं उसके फरमान बरदार सब
तुजे हूँदते थे हर एक ठार सब

ले जाते हैं तुजकूँ उसी पास अताल
न जाने तेरा किस वज़ा होवे हाल

बहरहाल उस ले गयाँ राज-पास
सो देक राज उसे तुन्द^२ हो बेकयास

वो मातमज़दा ज्यूँ उसे देखिया
सो टुकड़े करो कर इशारत किया

कह्या बेग जल्लाद कूँ मार उसे
वो जल्लाद ना मार, कर प्यार उसे

कह्या उस शहंशाह कूँ इस धात जा
कि इस मारना खूब नई इस वज़ा

सो रखें ज्यूँ उसके तई बन्द कर
जो भुर-भुर अज़ावाँ थे यू जाय मर

इसे मारना खूब नई एक बार
अज़ावाँ^३ सँ रखना उसे एक ठार

जो भुर-भुर^४ अपस में अपें सुवह शाम
देव छोड़ दिक्कत सँ जिउड़ा तमाम

अगर मारते हैं तो एकी च बार
वहीं जीव देकर सो मरता है ठार

१ परा का पुरुष वाची शब्द २ (फारसी) गुस्ता ३ तकलीफ ४ दुःख से खूब-खूब कर ।

कहे तूँ बन्द उस सज़ावार
वले क्या रज़ा शह की इस ठार है

जो ज़ह्नाद थे शह सुना यू बचन
सो फ़रमाइया तू च करने जतन

रख्या शाहज़ादे कुँ जूँ बन्द में
भरथा दूक बन्दे-बन्द के पैबन्द में

चड़ा दर्द उस आशिक़े पाक कुँ
हुवा बन्द में उस दरदनाक कुँ

लग्या रोवने हौर सिना फाड़ ले
सकत नई जो वाँते अपस फाड़ ले

धसे ब्रूत फिर इस पे दन्दे के सार^१
सो मरने के कारन हुवा एस्तियार

खुदा बाज भी उस न था कोई नज़िक
करे याद उस शहपरी कुँ अदिक

दुःखों ते अपस में हुवा यूँ मलूक^२
न था आदमी का कुच उसमें उसूल

पड़था दूर जूँ आपने खीस^३ ते
सो ताज़ा किया रीश^४ कुँ नीश^५ ते

न कुच फ़हम इसमें न कुच ज्ञान था
उसे कूर्त^६ माशूक का ध्यान था

जो वो मावली गुन भरी वेनज़ीर
सुलखनवती शहरवानू गँभीर

सो उस पाक आशिक़ जलन हर कुँ
गिरफ़तार हौर तलमलनहार कुँ

^१ दुश्मन की तरह ^२ दुःखी ^३ अपने लोग ^४ ज़ह्म ^५ नशतर ^६ खुराक ।

रखे ठार पर है च कर जान ले
खुशी बेनिहायत अपस आन ले

मिली जाके जूँ अपने फ़रज़न्द कूँ
निछल नूर दीदे ख़िरदमन्द^१ कूँ

हुआ माँ कूँ देक शाह यूँ शादमाँ
जो गुल-गुल हो कीता हुआ आसमाँ

उतर बात में वो ठंडी पेट की^२
कहीं हाल उस जान के नेट^३ की

सो कुसीं उपर बैसला बात कूँ
किये शाद शहवाल की ज़ात कूँ

कही हाल सैफुल-मुलूक का तमाम
मुनाई किस्सा उसके दुक का तमाम

सो शहवाल वो सात^४ उस तिल मने
मुहब्बत पकड़ आपने दिल मने

कह्या अपनी माँ कूँ कहाँ है वो ज़वान
देखन उसकूँ तपता है मेरा प्रान

कही शहरवानू मैं उस ज़वान कूँ
सो आते वख़त सात ले आई हूँ

फ़लाने चमन में रखी हूँ उसे
एकाएक डरी ल्याने तुज कन उसे

कि आदम हो वो आदमी सो कहीं
कि वज़ा हमनाँ संपड़ता नहीं

मुवादा^५ करेगा तूँ उसको हलाक
बहुत एक मेरे दिल मनें था यूँ धाक

१ (फ़ारसी) अक़लमन्द २ (मुशविरा) बाल बच्चोंवाली ३ दोस्त; प्रिय ४ साअत (अरबी)
समय ५ कहीं ऐसा न हो ।

सो दर हाल शह-पाल शह बख्तवर
पर्याँ कूँ दिया भेज उस ल्याव कर

बुला भेजिया भेज कीतेक परी
सो जा उस गुलिस्तान में गुन-भरी

जो उतर्या अथा शाहज़ादा जहाँ
वहाँ जायकर देखि आये वहाँ

देख हूँ चमने-चमन ठारे-ठार
न पाये कहीं सो लग्या खार-खार

कह्यौ शाह शहपाल को जायकर
कि वो जान दीसता नई उस ठार पर

फिकर-ज़ाद हो फिर के आते बरौ^१
कह्या एक परा सामने होके वाँ

कि देख्यौ हूँ मैं भूत्र उस जान कूँ
निछल हुस्न के उस उतम भान कूँ

परी एक जमाअत की जाती अथी
हवा पर उड़ा उस ले जाती अथी

शगुफ़ता^२ न था सख्त दिलगीर^३ अथा
चले मैं न पृछ्या सो तकसीर^४ अथा

सुन इस धात उस ज्वान के हाल कूँ
कहे आयकर त्यूँ च शहपाल^५ कूँ

सो शहवाल बिन शाह रुख ज्यूँ यूँ वात
सुन्यौ सो लग्या तलमलन धात-धात

जो था शाह खुशहाल ज्यूँ फूल खिल
सट्या सोच आपीं हुवा वई खजिल^६

कमर शहर वानू की पैटी वई
परेशानगी दिल में बैठी वई

जो इस हाल ते धन बदीउलजमाल
खबर पाई सो सुद गवाँ हुई निटाल

पड़ी भुईँ उपर जो न था ताव उसे
सो छिड़क्याँ पर्याँ मुख गुल्लाव उसे

कितेक बार कूँ फिर जो टुक होश पाई
सो उठकर हलूँ अपनी दादी कन आई

कहीं “ऐ सगी क्या करूँ मैं अताल
कि दिसता है उस बाज जीना मुहाल

मेरा जीव था सो वही पीउ था
कि उस पीउ पर लई मेरा जीव था

उस वाँ एकट छोड़ के आई तूँ
संगात अपने की ना उसे लाई तूँ

कती किस बज़ा काम तूँ हाय हाय
कि याँ नई रखी फ़ाम तूँ हाय हाय

करी काम अम्मा न पूरा करी
धतूरा दे मुजकूँ दीवाना करी

दीवानी हूँ मैं वो दीवाना कहाँ
वो दानिशवरी^१ का है दाना कहाँ

किधर गई वो रौशन ज़मीरी तेरी
यू किस धात की दस्तगीरी तेरी

अधर लग मेरे ल्याके अमृत कूँ
फिर आकर लेकर गई तूँ इस रीत कूँ

अगर होसे तो फिर तुजसे होना यू काम
नहीं तो मेरा काम है याँ तमाम”

जीउँ इस धात वो चुलबुली बोल उठी
च छुपे राज़ कूँ आपने खोल उठी

सो लक धात दिलगीर वो मावली
हुई वई पिछल नीर वो मावली

चली आपने पूत शहवाल कन
जकाजोत वो खुसरवी लाल कन

कही “ऐ मेरे मन के बन के निहाल
कि यू काम तुजसूँ है निश्चत अताल

एकाएक जो याँते हुवा गैब^१ वो
सो तुज शाह कूँ है वड़ा ऐब वो

तेरे मुल्क में ते है कुदरत किसे
जो यूँ काढ़ चोरी ले जावें उसे

हर एक धात सँ कर तू पैदा उसे
तफ़्दुस^२ सती हर सनद पा उसे

कि आशिक है उसकी बदीउल जमाल
मवादा होवे उसके तई पायमाल

मगर शाह दरियारे कुलजुम के लोग
अदावत सँ सो राखते हैं यू रंग

कि इसके जीवें मार कर भाई कूँ
सरांदील के राज बी जाई कूँ

एकेला अपे काढ़ लयाया अथा
सो माँ बाप सँ लया मिलाया अथा

उसे मक^१ सँ दन्द कर वो दन्दी
किया आज तुजते मुजे शर्मिन्दी

तूँ फ़रज़न्द है गर मेरे पेट का
तूँ यों नेट कर वक्त है नेट का^२

मेहरवान हो उस दरदमन्द पर
तूँ अपनाच कर जान फ़रज़न्द कर

कर इस वक्त पर उसकी हक़यावरी^३
दिखा आज जग में तेरी दावरी^४

मेरे मन कूँ सन्तोष सँ पूर कर
यू शर्मिन्दगी मुजते तूँ दूर कर

कि नादान वाली बदीउलज्माल
तेरा जीव है हार तेरा मुल्को माल

उन अपसं जो होना कती होएँगी
वहीं पीउ होना कती^५ होएँगी

जहाँ थें खड़या आज यू काम यूँ
तूँ कह ता तुजे होय आराम क्यूँ

लगा इश्क उस जान का फिर उसे
मुसल्लम दीवाना करे छुर्^६ उसे

अंगे सर पे जीव तोड़ ले आपना
वो कँवला^७ सीना फोड़ ले आपना

दुनियाँ बीच यूँ बोल रह जायेगा
खलक कूच का कूच कह जायेगा

१ धोखा २ तूँ यों नेट कर.....नेट का—यहाँ दोस्त का काम कर, क्यों कि दोस्ती का प्रकट करने का समय है ३ सच्ची मदद ४ आदशाहत ५ कहती ६ छल, धोखा देना ७ कोमल ।

कर इस ठार पर सई तूँ आपको
तुरुत उस बिचारे कूँ माँ बाप हो”

सो शहबाल शह फतह के खर्ग का^१
दिलावर निपट बाग के वर्ग का^२

फतह के दमामे पे लकड़ी कूँ टोंक
चल्या लाट का थाट संगीत लोक^३

गुसाला हो शमशीर कूँ हात ले
सरब दल कूँ सब अपने संगीत ले

सिलह^४ हौर संजोत सँ सरबसर
परयाँ हौर देवाँ कूँ मुस्तैद कर

एकाएक जागे पे ते^५ ज्यूँ हिल्या
ज्यूँ असमान बादल के दल सँ चल्या

मवादा नवी कर ज़मीं भार सँ
हवा पर रह्या अपने भार सँ

जो देखे दिल उस शाह के कोट के
सो बिचके^६ मलक^७ अर्श के गोट के

देखत सिलह संजोत का लकलकाट
गया सूर केरा सिना फाट-फाट

एकाएक नज़र ज्यूँ पड़ा यूँ हुज़ूम
हुए घावरे खलबला सब नुज़ूम

उठ्या गुल जहाँ का तहाँ बेक्रयास
गई यूँ ख़वर शाह कुलजूम के पास

१ विजयिनी तलवार रखनेवाला बादशाह २ बाव के समान बहदुर ३ चल्या.....लोक —
अपने साथ बहुत से लोगों को ले कर बड़े रोव-दाव से चला ४ हथियार ५ जगह पर से
६ डर गए ७ फ़रिश्ते ।

कि “शहनाल विन शाह रख बादशाह
दिलावर जहाँगीर अंजुम सिपाह^१

तेरी सब विलायत^२ कूँ पामाल कर
वो आता है तेरे उपर जाल कर”

सुन्या शाह कुलजुम जो इस बात कूँ
दिया भेज हाजिब^३ कूँ इस धात सूँ

कि “आना तुम्हारा हुआ क्या सब
मेरे मन कूँ लगता है बहुती च अजब

किसी कूँ न था आज लग यूँ मजाल
जो मुज मुल्क उपराल कर आये चाल

खुलासा जो कुच है सो कह खोल कर
शिताबी सेती भेज देव बोल कर

कि खूबी नहीं कुच तुम्हें आये सो
शत्रा शर्ब यूँ अलशार^४ कर धाये सो”

खबर इस वज्रा की ले हाजिब शिताब
जो हाजिब अथा लेवने कूँ जवाब

सो शहनाल शह खुसरवे बेनज़ीर
दिया ज्वाब हाजिब कूँ यूँ कर गंभीर

कि “तुम जो गुलिस्ताँ एरम से जिसे
पकड़ ल्याये हैं भेज देवो उसे

जो वो आदमी है मेरे प्यार का
नहीं कोई दुनियाँ में उस सार का

मुरौव्वत सूँ देवेंगे तो जाऊँगा
बगर नई तो तुपनाँ पे चल आऊँगा

१ जिसकी फौज की संख्या सितारों के समान अगणित हो २ शहर ३ दूत ४ रातों रात

५ अचानक हमला कर ।

वई एक धरते दरियाये कुलजुम कूँ जाल^१
करूँगा तुमन सब के तई पायमाल

दिये बाज उसे यां ते हलसूँ न मैं
कि गाढ़याँ हूँ रन थाँव^२ टलसूँ न मैं”

वो हाजिब जब इस धात पाया जवाब
कह्या आपने शह कूँ यूँ जा शिताब

“रख्या है जिस तूँ निपट बन्द सँ
उसी आदमी ज्ञात के दन्द सँ

अदिक गर्म हो तुजपे आया अहे
उसे भेज देव कर कवाया अहे

अगर नई तो मँगता है लड़ने तुसँ
सब दल सँ अपने भगड़ने तुसँ

बहुत लश्कर आया है उसके दुंचाल
एकाएक उसे यां ते जाना मुहाल”

सुन इस बात कूँ शाह कुलजुम वहीं
ना ल्या ताब फिर होके बरहम^३ वहीं

कह्या “जाके इतबार^४ यूँ बोल उसे
कि आया है तूँ हूँ लेता जिसे

सलामत सँ वो नई है इस ठार पर
कि लई दिन हुए उस जीव मार कर

तूँ अपने सब दल सँ जा याँ ते भाग
नहीं तो तुजे मैं करूँगा हलाक

न हो उसके पै छोड़ दे यूँ खियाल
ज्यूँ आया है त्यूँ जा तूँ यातें सँभाल

१ जला कर २ रण स्तम्भ; युद्ध के मैदान में गाड़े जानेवाले स्तम्भ ३ गुस्से में आना।

४ इस बार ।

न कर तेज़ अपस इस शिताबी सती
न हो तुंद जा एक रिकाबी^१ सती

छुराला न हो छोड़ दे शान्द तूँ
अदावत न ले मुंज ते बाद तूँ

नको खोल फ़ितने के मूँदे किवाड़^२
नको तूँ सितम मुंजकूँ भार^३ काड़

कि हूँ आफ़ते रोज़गार आज मैं
जो निकलूँ सरब दल मुँ भार आज मैं

तो एक धीर ते वई खराबी करूँ
दन्दे के उपर फ़तहयाबी करूँ”

गुसे सात इस धात कह भेज वई
हुआ मुस्तईद बेग लड़ने के तई

१ घोड़े पर चढ़ एकवारगी वापस जाना २ लड़ाई भगड़े के बन्द दरवाजे खोलना, लड़ाई शुरू करना ३ बाहर ।

सैफुल-मुलुक का कैद से छूटना

कहन हार यूँ किससये हरब^१ खोल
कहे उस वज़ा सूँ ज़बॉ चर्ब ग्योल

कि शहवाल बिन शाह रुख बेनज़ीर
जो हाजिब ते कड़ेवे सुन्या बोल फीर

निपट ज़हर सूँ तल्ख कर धात कूँ
लिया पंच ज्यू अज़दहा ज़ात कूँ^२

हुवा तुन्द हौर तेज़ अदिक आग ते
गुसाला होकर अज़दहा बाग ते

उचाया शतत का अलम^३ इस वज़ा
जो हैगो हुआ खल्क आया कर कज़ा

उचा दल पे दल खुश छुपा रास्ता
किया हर तरफ ते सफ़^४ आरास्ता

हुए जमा जंगी हज़ारों तमाम
कवीदस्त^५ खूबा शेरों तमाम

एक-एक जान एक कोट ले बुज़ ज्यूँ
लिए हात में फ़ितने के गुज़ ज्यूँ

किये रुख दन्दे पर जो हर टार ते
ज़मीं बस गई थी इसी भार ते

गज़ब नाक हो ज्यूँ अंगे दल हुए
कलेजे पहाड़ों के फट जल हुए

तुराटी नफ़ीरयाँ सूँ ज्यूँ बुरगमाँ^६
हुआ घावरा जो के पड़ आसमाँ

१ लड़ाई २ निपट ज़हर... .. जात कूँ—दूत की बातें उसे ज़हर की तरह कड़वी लगी
और वह अजगर साँप की तरह बल खाने लगा ३ झण्डा ४ कतार ५ नाकतवर ६ एक
खास तरह का बाजा जिसकी आवाज़ बड़ी तेज़ होती है ।

सिलह पोश पौलाद के कोट ज्यूँ^१
बड़ा शोर सन्दूर की लोट ज्यूँ

उताले हो आफत भरे अज्म^२ सूँ
खड़े आके मैदान में रज्म^३ सूँ

भया बाव ज्यूँ कहर का शोर सात
शतत की अग्नि सुलग उठी ज़ोर सात

उठ्या गुल जहाँ का तहाँ मार-मार
क्यामत ज़र्मी पर हुई आशकार

भलक देक बीजल्यौ सी तलवार के
उड़े फ़ाख़ते सख़्त संसार के^४

जो दो राज दो धरते बरहम हुए
गगन सातां हैबत ते दरहम हुए

गुसे का जो बारा उठ्या ज़ोर सां
पड़्या उसके लश्कर पे जा कह सां

सठ्या उसके लश्कर कूँ जाँ-ताँ बखेर
लग्या तोड़ने तोल सां घेर घेर

जो दौड़ उसके सफ़्र पर दिलेरों पड़े
तो वकर्यौं उपर जाके शेरों पड़े

सटे खास हैर आम कूँ काट-काट
जो किस कूँ न समझा अथा बाट-घाट

दिलेरों जो शहवाल के फा गल
सो फ़ौज़ों कूँ एक धरते उसके शुदल

१ सिलह..... पौलाद के कोट ज्यूँ—हथियार बन्द सिपाही फ़ौलाद के किलो के समान दिखलाई पड़ते थे २ इरादा ३ लड़ाई ४ उड़े.....संसार के—दुनियाँ के होश उड़ गए ।

सटे धड़पोते^१ थूँ मुड़याँ काट-काट
न थी बाट जाने किसे वाँते न्हाट^२

जो दरिया लहू हो उबलने लग्या
गगन उसपे किशती हो चलने लग्या

सराँ तैरते लहू के सन्दूर ते
जो दिसते अथे बुड़-बुड़े दूर ते

धड़ाँ सत्र निपट मौज के लोट मार
थे दुबते निकलते निहगाँ^३ के सार

बलायाँ के बानाँ कूँ ज्युँ आग लाई
जमीं हौर जमाने कूँ बैताग^४ लाई

शजब पर शजब का जो बारा हुआ
सो ऐसा बड़ा कुच धुलारा हुआ

दुनियाँ गैब हुई उस धुलारे मनें
गवाता गया दीस आँभारे मनें

लिया गर्द जा ढाँप असमान कूँ
धुवाँ साँप हो निग था भान कूँ

सो दरियाये कुलुजुम कूँ हैबत छुटी
जमीं के तले गाय अड़ड़ा उठी

बड़ा रंग पड़्या सख्त रगड़ा हुआ
कहें नई सो नादिर यू भगड़ा हुआ

हो देवाँ के हाताँ के बरहम तमाम
गया आँट दरियाय कुलुजुम तमाम

फ़तह पाय शहवाल के लोग सत्र
किये चूर शमशीर सँ ठोंक सत्र

चढ़े पीठ हौर जा खदेड़े वहीं
 सो हल्का^१ हो चौंघीर वेड़े^२ वहीं

जो कुदरत के बल सो अधिक फ़तह पाये
 पकड़ शाहे कुलजुम कूँ दरहाल त्याये

नज़र उसपे शहवाल की ज्यूँ पड़ी
 सो अरवाह^३ उस राज की ज्यूँ उड़ी

बुलाकर नज़िक उस उठ्या बोल यों
 कि “ऐ देकटर नाजवाँ मर्द क्यों

तू उस जान कूँ मार जाये किया
 सो देक-देक जीव उसका क्यों कर लिया

कि अवतार था जग में वो नेक नाम
 वफ़ादार अथा आदमियाँ में तमाम

तुजे छोड़ हरगिज़ न देसूँ अताल
 कलंगा मिला धूल में पायमाल

कि सँपड़्या है^४ तूँ आज गुज हात में
 तूँ सच बोल भूटा न हो बात में

उसे क्या किया मार कर कौँ सट्या
 एकाएक गुसा उसपे तुज क्यों छुट्या

रंजान्याँ अज़ावाँ देक इस धात से
 दिखाया तूँ किस धात के घात से

जो मुंजकूँ याद आता अहे
 तो सीना मेरा फ़ाट जाता अहे

गले पड़ लग्या यूँ मुसल्लम दुश्वाल
 सो वो राज है त्यूँ कहा खोल हाल

१ चारो ओर से बेरा डालना २ पकड़ लिए ३ रूह का बहुवचन, प्रायः ४ हाथ में पड़ा है ।

कि “वो जान तेरा जो मीता अहे
मुवा नई कि अजन्तू वो जीता अहे

इसी के बदल में मँगाया अथा
जो भाई को मेरे वो मारया अथा

गुसा था 'सो बन्द' में; रख्या में न मार
सलामत रूँ है वो जतन एक ठार

जो तुजते रज़ा दुक अगर पाऊँ मैं
तो ल्या उसकूँ दरहाल दिखलाऊँ मैं

वले तुज शह कूँ रवा^२ रूँ न था
एक आदम के तई मुज दुखाना न था

मेरे सब परी हौर देवाँ कूँ मार
किया नेस्त-नाबूद वई एक बार

हठीला^३ हो मेरे उपर हट पकड़
किया शहर हौर मुल्क मेरा उजड़^४”

जो यू बात खातिर में आया उसे
गले उज्र-खाही सों लाया उसे

कहा रूँ “कज़ा आ घिर्या नागहाँ^५
नहीं मारने दम सकत किस यहाँ

उबल कर गया दो तरफ़ ते उबाल
न कर फ़िक्र दिल तूँ हरगिज़ अताल

बुला भेज उस मेरे मन-मीत कूँ
मुहब्बत सों कर ताज़ा फिर रीत कूँ

जो तूँ हौर हमें सर ते फिर शाद होयँ
अज़ीज़ी में भायाँ केरे नाद होयँ

एकाएक खुले बख्त के जूँ किवाड़
सो ल्याए उसे बन्द मियाने ते काड़

देख्या जूँ वो दीदार शहनाल का
खिल्या सरते वई फूल जूँ डाल का

पड़्या आयके शाह के चरन पर
कह्या यूँ कि ऐ खुसरवे बहरोबर^१

बड़े बख्त मेरे देख्या आज तुज
फुगी^२ बाजुआँ लग खुशी आज मुज

गया सब मेरा ग़म तेरे धीर थे
कि जीव दे बचाय मुजे सीर थे

जो एखलास^३ मेरा दीस्या तुज कूँ खास
किया खुश मुजे बन्द में ते खलास^४

हुआ जौक़ इसी बात ते उस ज़ियाद
सो पाया उसे फ़रज़न्द के नाद^५

उचा लेके छाती कूँ लाया वहीं
कि अवतार कुच है कि पाया वहीं

फ़ज़ीलत में अज़मा के देखन लग्या
जो कुच पूछिया सो वो बोलन लग्या

हर एक बात पर उसकी हैराँ हुआ
खिला सिर ते ताज़ा गुलिस्ताँ हुआ

किते लक खुश्याँ दिल मने आन कर
कितेक दीस उस शह कूँ बहु मान कर

दे उसका मुल्क उस रवाना किया
अपें आपना मुल्क जाना किया

१ समुद्र और पृथ्वी २ फूलना, खुशी से फूलना, अत्यधिक प्रसन्न होना ३ (फारसी)
मुहब्बत ४ लड़के की तरह ।

उध्या फ़तह के ज्युँ दमामे कूँ ठोंक
हुए शह्र तिरलोक म्याने के लोक

फलक रूश^१ हो रान तल आइया
ज़माना ले गाशा^२ अंग धाइया^३

चल्या आपने शहर में नेट सां
ले सैकुल मुलुक लाल कूँ पेट सां

बलन्द अर्श^४ लग यू अवाज़ा हुआ
ज़मीं आसमाँ सिर ते ताज़ा हुआ

खलक सब गुलिस्ताँ एरम का तमाम
हं खुशहाल पाया अनन्द खास वो आम

बदीउल जमाल आपने मन मन
गिली ज्युँ कली फूल की बन मन

उतम शहर बानू गुनी ढक गुज़ार
रुमा-रूम^५ पाइ खुशी वेशुमार

कती लक वज़ा ज़ौक के हाल सँ
दुआ अपने फ़रज़न्द शहवाल कूँ

कही यूँ कि “ये शाहे आफ़क़गीर”^६
फ़िदा हर घड़ी तुझे मेरा सरीर

जो कँवली सहेली बदीउल जमाल
है पुतली तेरे नैन की जग उजाल”

फ़िते धात सँ येनिहायत सराई
सां वई खास्तगारी की धातों चलाई

१ (फ़ारसी) घोड़ा २ कालीन ३ फ़लक.....अंगे धाइया—आसमान घोड़ा बन कर उसकी रान के नीचे आ गया और ज़माना उसके सामने कालीन बिछाने लगा । यह विश्वास है कि मनुष्य का भाग्य आसमान की गर्दिश के अनुसार बनता है । भाग्य शहवाल के अधिकार में था और ज़माना उसके साथ था—यह तात्पर्य है ४ रोवों-रे.वों ५ आलमगीर ।

कही “ऐ तजल्ली मेरे नैन के
कि आराम मुज जीव माँ वैन के

जो बेटी है तेरी बदीउल जमाल
मो सैफुल मुलूक खूँ मिला तूँ अताल

वो सैफुल-मुलूक जान गैशन ज़मीर
समद शान का आशिके बेनज़ीर

वो एकस कूँ एक दोनों आशिक हैं पाक
सो बातिन^१ में हैं इश्क सो चक-चाक

उनां दोनों एक होवना साज है
दुनियाँ दीन^२ में यू बड़ा काज है”

सो शहबाल माँ ते सुन्या यू जो बात
कृबुल्या वहीं लाक ख़ुशियाँ संगत

बदीउलजमाल से शादी

मदद फ़ैज़ तूँ आसमानी हुआ
ज़मीं हौर ज़माना नूरानी हुआ

सआदत के ताज़ी मिले^१ एक ठार
सो परगट ज़ौक केरा बहार

खुशी के खिले फूल फाँटे तमाम
किये शुक्र जीवाँ हो काँटे तमाम

मलक^२ फ़ाल देख^३ अरश पर गुल उचाये
फ़रह पा वहीं मेज़बानी गिनाये

ख़बर यू तुरत जग में जाने लग्या
ज़मीं का निकल गंज आने लग्या

ख़बर पाये दरिया के मोती तमाम
रतन खान म्याने के ज्योती तमाम

तरी हौर खुशकी ते पड़ भार सब
सो शहबाल के आये दरबार सब

हर एक चर्ख तल सर्फ़ होने लगे
तजल्य़ाँ में धल-धल पिरने लगे

नगर सब गुलिस्ताँ एरम का तमाम
हुआ साफ़ जूँ जाम जम का तमाम

परे हौर पर्य़ाँ जग के सारे मिले
भराये मजालिस विले दर विले^४

पर्य़ाँ चुलबुल्य़ाँ कास मा साज़ सों
लग्य़ाँ नाचने मिल के तूँ नाज़ सों

१ भाग्य के घोड़े मिले, अच्छा समय आया २ फ़रिश्ते ३ आगे की अच्छी हालत देखना
४ प्रत्येक मकान में ।

पंखे पंख जड़त के सदर जगमगात
लग्या होवने चौकदन तमतमाः

पर्याँ वेवदल थ्याँ सो भ्याँ तमाम
जवाहिर के काम^१ भायाँ तमाम

दहन^२ तंग तर माँग बारीकतर
शवेकद्र^३ ते बाल तारीक तर^४

हुई मस्त मजलिस खुश आवाज़ सां
प्रिबानी कियाँ पातराँ नाज़^५ सां

हुमुकन्याँ मिल्याँ डोमिन्याँ लोलियाँ
शकर शहद शीरीं ते मिट बोलियाँ

एकस एक ते एक तरुन्याँ अहें
सो करतार क्या मोर शिरन्याँ अहें

सो पुरपेच जुल्फाँ कूँ देक गाल पर
कुंडल घाल बैठा भुजंग भाल पर^६

पड़े बाल काले मो जाँ-ताँ तले
सो ज्यूँ नाग लिड़ते हैं पावाँ तले

न जानूँ कहाँ कोड़ मंतर सिक्या
पदम पावँ नाकस के जंतर सिक्याँ^७

लग्याँ नाचने तई जो सदरे सदर^८
तिरकने^९ लग्याँ खुश जिधर का उधर

१ ढेर २ (फारसी) मुँह ३ रमजान की सत्ताईसवीं रात, जो बहुत ही अंधेरी होती है
४ दहन तंग.....बर्गक तर—रमजान की सत्ताईसवीं रात जितनी काली होती है, उससे
भी अधिक, उन परियों के बाल काले थे। उनके मुँह छोटे और माँग बहुत बारीक थी
५ बहुत ही अधिक नज़ाकत ६ सो पुरपेच.....माल पर—उनके गालों पर जुल्फ ऐसे
लटके हुए थे, जैसे खजाने पर साँप कुण्डल मार कर बैठा हो ७ पदम पाँव....
सिक्याँ—उनके कमल के समान सुन्दर पैर, दूसरों को वेबुध करनेवाले जंतर के समान हैं
८ जगह जगह ९ थिरकना।

जो गत ले उठे मंडले फिर तमाम
सटे होश जागे पोते घर तमाम

मंदिल^१ काड़ मंदिल बजाने लगे
कित्याँ गिर पड़े क्यौँ सो गाने लगे

जन्तर काड़ सोझाँ उचाये हलूँ
सों मजलिस कूँ मस्ती में ल्याये हलूँ

जो खोलन लगे नगमें हर ठार ते
हल्याँ सुन चतुर पुतल्याँ ठार ते

कित्याँ जो अथें तान पर तान क्यौँ
रहें डाल पंख सूर असमान क्यौँ^२

सज़ावार शाही कूँ थू साज़वार
हुनरमन्द जो सारे हौर राज़दार

देक उस बज्म खुश सुहावा वो नूर
लगे भेजने मरहवा चाँद सूर

जो मजलिस कूँ ग्याना खिलाने पे आये
सफ़ा खुश कंदोर्याँ^३ सो ल्या ल्या बिल्लाये

कंदोर्याँ शहाने सो लग जिन्स क्यौँ
रंगा रंग शीरिन्याँ^४ हर एक जिन्स क्यौँ

रखे शीरिन्याँ लाय कर ठार-ठार
गगन ऊँचे रासाँ^५ व कई उस शुमार

जो फूल नीर सँ हात सबके धुलाये
कंदोरे खिलाने ले जा बैसलाये

१ मंज़ार; बाजा विशेष, दूसरा मंदिल, मन्द गति, इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है . २ सो रहें डाल.....क्यौँ—उनके पंख सूरज की तरह चमकीले थे ३ दस्तर खान ४ मिठादवाँ ५ गशि, डेर ।

रंगारंग लक जिन्स क्य़ाँ न्यामतौं
जो हर एक न्यामत में कई लजतौं

सो असमान बादल कूँ संगत ले
चन्द्र सूर के जाम दो हात ले

कमर बाँद खुश हो अपें आबदार
नज़र सारी मजलिस पर रख ठार ठार

जल अमृत ल्या-ल्या पिलाने लग्या
पिला प्यास भर-भर चलाने लग्या^१

खलायक^२ विले दर विले स्वास वो आम
कंदोरी तें फ़ारिग़ हुए खुश तमाम

जड़त के तबक़ हर एक असमान थें
भर उस म्यान तगटे पथ्य़ाँ पान थें

अंबर हैर खुशबू कदम फूल माल
फिराने लगे जान साहब जमाल

जहाँ लग अथ्य़ाँ जग में फुन बाड़ियाँ
जहाँ लम जो गंभीर बनवाड़ियाँ^३

सो यूँ ख़च तल शह के आये वहीं
जो एक पान हैर फूल उबरथा नहीं

मुनैवर^४ किये अजुमन कूँ तमाम
ज़बरजद^५ के शीशे ज़मरूद के जाम

मदन मस्त साक़ी छबीली जवाँ
अदिक छन्द भरी खुश रंगीली जवाँ

१ सो आसमान... .. लग्या—आसमान पानी पिलानेवाले के रूप में सूरज और चंद्रमा के दो प्याले हाथ में ले कर, अमृत का पानी सबको पिलाने लगा २ लोग ३ पान पेटा होने की जगह ४ रौशन किये ५ जमरूद एक बेश कीमती पत्थर ।

मदन मद पियाले भरा साज़ सों
खड़े आके मजलिस मनें नाज़ सों

फिराने लगे दौर पर दौर खुश
किये सारी मजलिस के तौर खुश

अजब वो रंगी मद असर दार था
मता बास ते उसके संसार था

नुकूल^१ नाज़ का ल्या चकाने लगे
सो एक घर ते सबकु रिझाने लगे

फियाले जवाहिर के फिरने लगे
मती होके जानों सो गिरने लगे

सो पड़ते थे जो मद के बुन्द टूट कर
झमीं नाचती थी वहाँ ऊठ कर

हुए थे मती कोई न थे हुशियार
जो कोई पीवे वो क्यों रह हुशियार

किये बख़्श सारयाँ कुं एक धीर ते
हुए शाद सब इस जहाँगीर ते

इलाही जो माशूक आशिक़ उपर
करम कर मिलाता है एक तिल भितर

जलवा^१

तजल्ली सों जलवे की ज्यों रात आई
सो वई गैव तें पैज़^२ लक धात पाई

जो शक्कर कूं भी न था कैज़ इता
सरा ना सकूं मैं सगऊँ जिता

मुग़ दौं जो धरते थे जग दिल मन
सो पाए उसी रात एक तिल मन

नज़र हुई इनायत की सुवहान ते
उतरने लगी रहमत असमान ते

निछल रूप क्यों चुलबुलियाँ शह परयाँ
उतम ज्ञात उतम ज्ञान क्यों गुन भरयाँ

बडीउलजमाल अचपली^३ नार कूं
डुबायाँ ज़रीने में भलकार सूँ

जो जलवा दिलाने होयाँ मुस्तइद
महल जलवे कारन कियाँ मुस्तइद

जवाहिर के मंडवे सों छाया तमाम
मुरस्य^४ के परदे बैदायाँ तमाम

हर एक महल सूपयाँ मने रंग-रंग
जड़त के रखे ल्याके छपर पलंग

मिल्याँ खुश हो मायाँ वो बाया तमाम
शौ^५ आरुस^६ के पास आयाँ तमाम

दुनियाँ उस घड़ी जाँ हुए सीर ते
खुले बख्त गोत्याँ^७ के एक धीरे ते

१ शादी के समय का एक विशेष रस्म, जिसमें दूल्हा और दूल्हन एक दूसरे को देखने हैं २ फायदा हासिल करना ३ चुलबुली ४ हीरे जवाहिरात जड़ा हुआ ५ (फारसी) दूल्हा ६ (उरूस, अरबी) दूल्हन ७ (गोत, का बहुवचन) संबंधी और परिवार के लोग ।

उतम डोमन्याँ मिल पलाने लग्याँ^१
 सोहेले शहाने सों गाने लग्याँ

नवल जान मैन्द नूर ब्रह्मवर
 उमस सात आ बैठिया तख्त पर

बनी हौर बने^२ लोक पलाने लगे
 शौ-आरुस के तई सराने लगे

सआदत के साअत हुवैदा हुआ^३
 सो काज़ी मसीहा हो पैदा हुआ^३

लिया शौ केरा हात अपन हात में
 खुशी सों पड़या अकद^४ इस सात में

हुआ सर किया ज्यँ गुश आईन सँ
 मलायक किये खत्म आमीन सँ

मिले शह के चौधीर सब गोतियाँ
 लगे वारने शौ उपर मोतियाँ

चले जल्वे के महल में शौ को ले
 किवाड़ा सो इकबाल केरे खुले

खड़ी मुश्तरी^५ नाज़ का साज़ कर
 मुरज जगमगाता सो असमान पर

मुशाता^६ हो ज़ोहरा^७ उतर आई वेग
 चमक नूर का ल्याके भूमकाई वेग

निछल नूर का ल्याके परदा बँदाये
 शौ-आरुस दोनों को ल्या बैसलाये

१. गाने लगी २ दूल्हा और दूल्हन ३ सआदत.....पैदा हुआ—निकाह पढ़ने वाला काज़ी अच्छे समय पर मानो मसीहा के रूप में आया, जिसने सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल को जिन्दीगी दी। मसीहा के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि वे मुर्दों को जिलाया करते थे।

४ (अरबी) निकाह पढ़ना ५ एक तारा विशेष ६ दुल्हन को सँवरने वाली औरत ७ एक तारा विशेष, जो बड़ा चमकीला होता है।

जो परदे में ते हात हिलने लगे
सो लक धात फूला उछलने लगे

मगर गैब ते जुगने दो नूर के
मिल उड़ते अथे ग्वोल पंग्व सूर के

दे जलवा मुशाता जो निर्वाला^१ हुई
सो भोगी नवल शह की-वाँ चाल हुई

नबी पर हज़ागें दुरुद^२ भेज गईं^३
चल्या ले के आरूस कूँ संज गईं

देख्या नूर का उस निलुल नूर ते
ज़ियादा अथे नूर के पूर ते

जो जलवे ते फ़ारिसा हुई खल्क सब
चला शौ ले आरूस कूँ संज तब

देख्या मुग्व ज्यूँ शौ ने आरूस का
खिल्या सिर ते ज्यूँ फूल फिरदौस^४ का

चड़ी गूब महबूब देक हात में
रिफ्ताने लग्या बात कर बात में

सट्या हात ज्यूँ उसपे तन्नाज़ सँ
लगी शर्म कर लाजने नाज़ सँ

सो छाती कूँ छाती लगा हाल सात
हुआ लटपट उस नूर की डाल सात

रल्याँ में निपट छन्द सो लाइया
जो बन हुक्वे नूर दो पाइया

१ अलग होना २ एक अरबी का वाक्य विशेष, जिसमें पैगम्बर हज़रत मुहम्मद पर रहमत होने की दुआ की गई है ३ नबी पर.....भेज गईं—हज़रत मुहम्मद पर रहमत होने के लिए हजारों बार 'दुरुद' पढ़ कर ४ जन्नत ।

भटापट लगी होवने दूइ में
हुवे मीस ते पग तलक गूइ? में

इधर मद पिलाकर किया मस्त उसे
हुई मस्त देक वई किया दस्त उसे

जकाजोक मोती पड़्या देक धात
विन्द्या खुश उसी वक्त अलमाश सात

निछल गूव याकूत के वेशुमार
यू उस ढाल मोती ते निकल्या बहार

जो अलमाश था सो गह्या लाल हो
लग्या ढलने वो लाल तब ढाल हो

कि ज़ाहिर हुआ लाल की बेल गू
मित्याँ सब सहेल्याँ ह्या खुश जूँ

ज़ियादा गुशी हुई यूँ माई कूँ
अदिक भी गुशी हुई उस भाई कूँ

फिर आकर गिनाये गुशी, सीर ते
किये खिल्लअताँ सब कूँ एक धीर ते

हुए खल्क ताज़े सो ज्यूँ नोवहार
कि फूल दौर पाताँ कूँ आया हँ बार

कि ना दौर परी शहर के सब बुलाय
हर एक जिन्स के न्यामतौँ सब खिलाय

कि शौ ने गुशी सिर ते ताज़ी किया
कि उस बार सँ फिर के बाज़ी किया

लग्या दास नाजुक जो उस फूल का
खिल्या रंग उस गूव मक़बूल का

हलू भी उतरने लगी नाज़ में
सां छन्द-अन्द करने लगी न्याज़ में

रिझाने लगी शौ कूँ खुश नैन खोल
फुलाने लगी यां मिठे बोल बोल

कभी शौ को कर मस्त हमशान हो
कभी गोद में लेट अनजान हो

कभी लग सीने शह नवल जान के
अधर सां अपड़ दे वीझ्याँ पान के

कभी शह गले हात कंठमाल भाय
कभी शौक सँ गुदगुल्याँ कर हँसाय

कभी भोग-संग्राम खुश हाल होय
सो कुरवो कधी शह के उपशाल होय

दोनों में कुबल इश्क बाज़ी लगी
वो बाज़ी मिठी हक के ताज़ी लगी

हुआ जग में मशहूर हर टाप यू
बसे लग दुन्याँ में रखा नाव यू

शगुफ़ता हो शहवाल शह नेक नाम
उमस पा खुलाया खज़ाने तमाम

भवायाँ धगाँ जग के मुद जाय त्यूँ
लग्या वाँटने माल मन भाये त्यूँ

किसे नौरतन होर किसे मोतियाँ
किसे हतकड़क होर पदक जोतियाँ

किसी कूँ जड़त के उत्तम कण्ठ माल
किसी कूँ जड़त की पटी जग उजाल

किसे ज्ञात तेज़ी, किसे मस्त हस्त
किसे ख़ूब तोहफ़े, किसे ख़ूब बस्त

किया दान वेमिस्ल एक धीर ते
किया खिलअत्ता सबकुँ थूँ सीर ते

कि मेहमान सबकुँ किया सरफ़राज़
किया खुश किते लक वज़ाँ सो नवाज़^१

रज़ा ले जो मेहमान दागँ चले
दुआ शह कुँ कर हज़ाराँ चले

इता कृन्च शह ते सकल दान पाय
जो घर हौर इमारत सां नेकी उचाय

डुबी थी सोने में ज़मीं जाँ-तहाँ
कि ऐसा सखी बे-बदल है कहाँ

सिंगार उस फुकी बज्म कुँ देनहार
देवे ज़िनत इस धात सूँ टार-टार

जो गंभीर शहवाल दाना नरीक^२
कितेक दिन शौ आरुस कुँ रख नज़ीक

मँग्या भेजने उसके माँ-बाप पास
दिया खूब बस्ताँ,^३ जो थे अपने पास

चन्द्र सूर से दुरजकौ^४ कई हज़ार
जवाहिर भरे सन्दूका वेशुमार

कितेक जिन्स के खूब बाँदी गुलाम
कितेक पातुरा जिल्द^५ नादिर तमाम

मुकल्लल जड़त की अमारी गंभीर
कराया तुरत मुस्तइद वेनज़ीर

दुआ पर दुआ कर गले लाय कर
शौ आरुस कुँ उसमें बसलाय कर

१ देना २ लाजवा ३ वस्तु, चीजें ४ जवाहिर ५ बहुत कोमल शरीर रखने वाले ।

तज्जमुल^१ सती खुसरवी रीत के^२
चड़ा पीट उपराल इफरीद के

बड़े गुलगुले सँ खाना किया
अजब काम जग में यू दाना किया

नज़र में दिस्वा सारे आलम कूँ यू
मुलेमान^३ शौ; आरुस बिलक़ीस ज्यू

जो अँपड़े सरांदील के गज पास
महाराज गंभीर सरताज पास

सो आ सामने खुसरवी दाव में
मित्या ज्यूँ कि अफ़ताब महताब सँ

बड़ी शान सों लाइया शहर में
हुआ आशकारा^४ यूँ चौधीर में

मिला शाहज़ादी सँ आ भाई वो
देगत भाई कूँ खुश गले लाई वो

हरम में क़बीले कूँ शह के तमाम
सो कह भेजिया बन्दगी हौर सलाम

नेके यार साअद वफ़ादार सों
मित्या खुश सिने लाइया प्यार सों

खुश एक घर ते सारथों कूँ शादी हुई
वो शादी बड़ी कैकुवादी^५ हुई

कितेक दिन वहाँ मादगी दूर कर
सिना ज़ौक लई समद सों पूर कर

समज खूब साअद दुखियारे के धात
चलाया हलूँ खास्तगारी की बात^६

१ (अरबी). शान, शौकत २ बादशाही ढंग के ३ इस्लाम के पैगम्बर, उनकी धर्म पत्नी का नाम बिलक़ीस था ४ प्रकट होना ५ बरकत देनेवाली ६ शादी की बात चलाना ।

सो वो जगपती राजा राजी हुआ
जो कुच दगदगा था सो माजी हुआ^१

समज फाल ज्यूँ मैर के काम सँ
पड़या खूब साअद के आ नाम सँ

किया खुश हो शह मेज़वानी शुरू
बधावा बड़ा खुसखानी शुरू

जो धम-धम दमामे बजाने लगे
गामाँ सब निकल भार जाने लगे

नफ़ीरयाँ कीं आवाज़ सुन टार-टार
निकल दौलताँ शैब ते आये भार

सदर पर सदर^२ शाह के वस्त ते
उतर आये असमान के तस्त ते

जो जोहग भी हौर मुश्तरा^३ गान हार
किये गर्म मजलिस कूँ आ टार टार

जो जां लग गलावन्त थें वाँ भरे
तमाम आपने तायफ़ों^४ सों खड़े

उचाने लगे इस बज़ा तमतमाट
जो तिरलोक का वाँ भरया आके हाट

भनकने लगी ज़ाफ़रानी सुरा^५
खस ज़ाफ़राँ हौर सन्दूर आ

मलक खुश चन्द्र के वो गुलदान ते
लगे मैलने फूल असमान ते^६

जो फिरदौस का चाव अत्ताग था
महलाँ में शह के गमनहार था

१ सभी शक दूर हो गए २ बड़े-बड़े ३ संगीत की देवियाँ ४ गानेवालों का गिराह ५ शराब

६ मलक.....असमान ते—फ़रिश्ते चांद के गुलदस्ते से फूल अरसाने लगे ।

भरथा बास खुशबूई का ठार-ठार
सरांदील सारा हुआ नौबहार

सो खुश हो जमाना जो साअद हुआ
सराफराज उस शहते साअद हुआ

घड़ी देक खुशी का समाया वहीं
कजा' दौड़ काजी हो आया वहीं

सआदत की साअत में खुशहाल यूँ
पड़्या फूल का अरद^१ उस डाल सेँ

मिले ज्यूँ वो शाहजादी हौर यूँ जवान
हुआ शाद सैफुल मुल्क का प्रान

निहायत कूँ अँपड़े देक उनका जवाँ
कितेक दिन दोनों भाई कूँ राज वाँ

समेट माल धन वाँ ते ले बेहिसाब
चले मिस्त्र के मुल्क कूँ फिर शिताब

जो आसिम नवल शह दुःखी भूक-भूक
हुआ था जो काड़ी नमन सूक-सूक

एकाएक खुशी हौर आनन्द की
मुन्याँ ज्यूँ खबर अपने फ़रज़न्द की

फुग्या हौर आया रगे रग प्रान
बुटा टाँग था सो हुवा फिर जवान

वहीं ग़म के हुजरे ते निकल्या बहार
ले अरक़ाने दौलत^२ कूँ सब एक बार

गया सामने हौर मिल्या पूत कूँ
गले ला किया पूत कूँ गुल तिसूँ

१. हुक्म २ (अरबी) निकाह ३ राज्य के बड़े-बड़े आफ़िसर ।

खुश्याँ सों बुला शहर में लाइया
दे बहमान ईमान कर पाइया

दिया आपनी बादशाही उसे
सलामाँ किये सब सिपाही उसे

लग्या करने सैफुल-मुलूक राज खुश
हुए अर्श कुर्सी वा मेराज खुश

खुदा उसके मन की दिया ज्यूँ मुराद
देवे हर तलबगार का वो मुगद

कहाँ आसमाँ हैर कहाँ धरतरी
कहाँ आदमी हैर कहाँ शहपरी

कहाँ लाल सैफुल-मुलूक जग उजाल
कहाँ मोहिनी धन बदीउलजमाल

कहाँ जान साअद किते बेनज़ीर
कहाँ वो उत्तम शाहज़ादी गभीर

खुदा यूँ मिलाने जो आता अहे
सो इस धात सों ला मिलाता आहे

लिख इस धात सों दास्ताँ बेनज़ीर
रिसाला लताफ़त भरथा दिलपज़ीर^१

जो लिखने न सक दो रसन^२ का कलम
सो मादाँ हो पड़ता अथा दम बदम

निभाँ दिल के आख्याँ सों देख मन
तो हर एक बैत इस सफ़ीने मन

जगाजोत महबूब है कबदार
मेरे फ़िक्र परदे थें निकली बहार

१ दो रसना, जिह्वा रखनेवाला, कलम ।

देवे यूँ जो जलथा उरुसी^१ मनें
जो सिद तारे अबर के जोती मने

मलायक सो बालाये चखेंबरी
कहें इस सफ़ाने कूँ देक आफ़री

रतन पारके वेवदल मुश्तरी^२
मेरे जौहराँ का हुआ मुश्तरी

कि मेरे चतुर शह नवल लाल थें
वलन्द उसके गम्भीर इक़बाल थें

न कई ऐसे जौहर हैं भलकार के
न किस खान में होयें संसार के

कि निकले हैं नादिर हो जौहर मेरे
जिता मोल उसका सराऊ, सरे

दिखे यूँ जवाहिर जगाजोत ज्यूँ
मितारे फुगी हो गहे बहुत ज्यूँ

हर एकम कूँ है कुर्व^३ धन माल का
मुजे कुर्व इस जौहराँ लाल का

कि चोरा ते उस माल कूँ है दगा
बले इस जवाहिर कूँ नई दगदगा

कि हाली^४ वो खर्चें तो खाली होवे
बले यूँ कधी कूँ न खाली होवे

जो सुल्तान अब्दुल्ला इन्साफ़ कर
मेरे जौहराँ पोते दिल साफ़ कर

देवे दाद मेरा बहुत मान पाऊँ
उमस दूर थे ता गिरेबान पाऊँ

कि यू शाह मेरा खरीदार होय
तो ताज़ा मेरा तबये गुलज़ार होय

कि ग़मगीं हूँ मैं सख़्त संसार ते
धरूँ दग़दग़े लाक़ इस आज़ार ते

परेशानगी में ज़म्याँ ख़याल मैं
ले आया हूँ ऐसे रतन ढाल मैं

जो भोगी नवल शह सेती फ़रह पाऊँ
सो इस थे रतन खास ढूँढ़-ढूँढ़ ल्याऊँ

अगरचे हूँ शह के बन्द्याँ मैं हक़ीर
वले शेर के फ़न में हूँ वेनज़ीर

कि मुँह खोल यूँ मैं कहूँ क्या अपें
गवाही देवें शेर अपें ना छुपें

बहरहाल यू नज़्म इलहाम सूँ
किया मैं नवल शाह के नाम सूँ

बरस एक हज़ार पंज तीस में^१
किया ख़त्म यू नज़्म दिन तीस में

जो आरिफ़ हुजूदाँ नज़ाक़त शिनास
सफ़ा उस थे हासिल करें बेक्रयास

पढ़्याँ कूँ तो सब आवे यू काम कूँ
देवे ज़ौक़ अदिक़ खास हौर आम कूँ

लिखन हारा यू लाब पर लाब पाय
सदा सुर्ग़रूई केरा आब पाय

मुबारक अछो शाह कू यू मुदाम
बहक्रे मुहम्मह अलेहिस्सलाम

मुबारक घड़ी में किया मैं तमाम
मुहब्बत नबी पर हज़ारों सलाम

शब्द-सूची

अ

अकृताव=एक विशेष प्रकार के सन्त
 अकलीन=देश
 अकारिब=करीब के लोग, दोस्त-मित्र
 अकद में लाना=शादी करना
 अंगुशतरी=अँगूठी
 अंगोटी=अँगूठी
 अल्लु=रहो
 अजल=शुरू से
 अजायब लगना=अजीब लगना, आश्चर्य
 होना

अजावाँ=तकलीफ़
 अजुम सिपाह=जिसके सिपाहियों की संख्या
 तागों के समान अगणित हो
 अजुमन्द=लायक
 अज्म=अभिलषित
 अट लेना=छीन लेना
 अड़ड़ा के दौड़ना=जोरों के साथ दौड़ना
 अत=अति, बहुत
 अद्ल=इन्साफ़
 अन्द गन्द=नामो निशान
 अपसता=अपने से
 अपड़ना=(मराठी) मिलना
 अवावक=इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा
 अन्न करना=हुक़्म देना
 अम्मा=(फ़ारसी) लेकिन
 अन्द=सृष्टि का अन्तिम दिन, क़यामत
 का दिन
 अभरन=आभरण, आभूषण
 अभालाँ=अभाल का बहुवचन, बादल
 अरश=आठवाँ आसमान, खुदा का स्थान
 अरवाह=रूह का बहुवचन, प्राण

अलम=भंडा

अलग़ार=अचानक हमला करना
 अलमाश=एक विशेष प्रकार का बेश-
 क़ीमती पत्थर
 अलैकी देना=सलाम का जवाब देना
 अवदशा=अपदशा, बुरी दशा
 अवकल=अजीब
 असहाब=साहब का बहुवचन
 अहवल=(अरबी) जिस से एक ही चीज़
 दो नज़र आती हो

आ

आक्रिबत=नतीजा, परिणाम
 आज़ार अपड़ाना=मुसीबत में डालना
 आतिश=आग
 आतेबग़ै=आतं समय
 आफ़रीं=दुनिया को पैदा करनेवाला
 आरिफ़=समझदार
 आशकार होना=प्रकट होना
 आस=आशा
 आस्ता=ठिकाना
 आंगे=आंग, सामने
 आँभू=आँखू

इ

इतबार=इसबार
 इफ़रीत=जिन्न, एक योनि विशेष
 इरफ़ान=ज्ञान
 इलहान=आवाज़
 इशरत=आनन्द
 इशारत करना=इशारा करना, बतलाना
 इश्तियाक़ी=शौक़

उ

उचाना=उठाना

उमस पाना=उत्साहित होना
 उलंगना=लौघना, छलांग मारना
 उस्तवार=मजबूत

ए

एक घर=एक दम
 एकस=एक
 एक रुखन=एक ही तरफ़

ऐ

ऐलाड़=इस तरफ़, नज़दीक

क

कज़ारा=संयोग वश
 कज़ा होना=इत्तफ़ाक़ होना
 कड़ज=अधिक
 कलीम=मूसा पैग़म्बर का दूसरा नाम
 कस्ब=प्राप्त किया हुआ
 कबूदी=नीले रंग का
 कक्क=चकोर
 कदन=तरफ़
 कना=कहना
 कनीज़ा=सेविकाएँ
 कन्दराहट करना=नफ़रत करना
 करीमी=मेहरबानी
 कदीर=समर्थ, खुदा
 क्रमाश=एक बेश क़ीमती कपड़ा
 क़वीदस्त=ताक़त वर
 कंथा=कथा, आप बीती
 कँदोरे बार करना=दस्तरख़ान तैयार करना
 कँटाल=नफ़रत
 कामरानी=कामयाबी
 काल्वे=नहरें
 किल्क=क़लम
 किसवताँ=लिबास
 कुतुब=एकविशेष प्रकार के सन्त
 कुदूरत=तकलीफ़

कुबल=दुर्गम
 कुदूरत=ग़म और गुस्सा
 कूत=खुराक़
 कूच=कुछ

ख

खण्ड्याँ=खण्डी (मराठी) का बहुवचन,
 कोड़ियाँ

खर्ग=खड्ड, तलवार

खज़ीने=खज़ाना

खराबा मने=खराब या निर्जन स्थान में

खातियान रुई=एक बहुत ही अच्छे

क्रिस की रुई

खज़िल=(अरबी) शर्मिन्दा

ख़ाँदा=कंधा

खातिम=अंगूठी

खाशाक=तिनका

खारजाँ=अली के विरोधी

खास्तगार=मँगनी, शादी के लिए

लड़की माँगना

ख़िरदमन्द=(फ़ारसी) अक्लमन्द

खिलअत=बादशाह की ओर से इनाम में
 प्राप्त कपड़े

खिलवत=रंग महल

खिलवत के ठार=एकान्त स्थान

खीश=अपना

खुशारव=बादशाह

खुशामान=अच्छा मान, अच्छी इज़्ज़त

खुशाहंग=ख़ूब सूरत

खुसाट=ख़ूसट

ग

गगन=आसमान

गड़ौं=गढ़ाँ, क़िले

गड़वा=टूटीदार लोटा

गत=गति, दशा

शनी=जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता
न हो, खुदा

गमना=गुज़रना, बीतना, जाना

गवी=शेर की माँद

शब्बास=शोताखोर, कवि का नाम

गाल=गाला कर

शायत=गणना, हिसाब

गिरहवान=ऊपर के वस्त्र में सीने पर का
वह हिस्सा, जिसमें बटन लगती
है। 'गिरह' शब्द फ़ारसी के
'ग्रे' शब्द का अपभ्रंश है, जो
संस्कृत के 'ग्रीवा' शब्द से
मिलता है और उसी अर्थ में है

गुल गुला=शान, शौकत

गुलिस्ताने एरम=जन्नत का बागीचा। यहाँ
किसी विशेष स्थान के
लिए प्रयुक्त हुआ है

गुलरेज़ होना=फूल भड़ना

गुरबत=मुसाफ़िरी

गैब के गंज=छिपे हुए ख़जाने

शौगा=शोर गुल

शौस=एक विशेष प्रकार के सन्त

च

चमामें=जूते

चहल दिन=चालीस दिन

चंचल दहन=चंचलता को दूर करनेवाली

चौफीर=चौफेर; चारों तरफ़

ज

जका=जगा; जागृत कर

जम=हमेशा

जलालत=बुजुर्गी

जबत तल=ज़ाप्ते के नीचे; क़ानून या
शासन के अन्दर

जफ़ा=मुसीबत

जहाँ जानियाँ=संसार के जीवन का

स्वामी; खुदा

ज़र्द=मार

ज़फ़र=जीत

ज़रीना=सोने का

ज़रबफ़्त=ज़रीदार कपड़ा

ज़मीर=दिल

ज़ंगी-हब्शी

ज़ंगन=ज़ंगी (हब्शी) का स्त्रीलिंग

जिरो=दवाकर; यह शब्द फ़ारसी के ज़ेर
करदन' धातु से बना है।

जिउडा=जीव; जान

जिन्स=वजह; कारण

ज़ियाफ़्त उपर ज़ियाफ़्त करना=अत्यधिक
आतिथ्य करना

ज़िश्ताँ=(ज़िश्त का बहुवचन) बदसूरत

ज़ुफ़्त होना=मिलना

ज़ुल्मात=वह स्थान; जहाँ हमेशा अँधेरा
रहता है।

ज़ुहल=ग्रह विशेष; शनिश्चर

ज़ोहल=एक मनहूस समझा जानेवाला

सितारा

ज़ोहरा न होना=मजाल न होना

ज़ौलान देना=घोड़े को ँड़ लगाना

झ

भूक भूक कर=परेशान हो होकर

ट

टाक आना=मुक़ाबिले में ठहरना

ड

डोंगराँ=क़िला; घाटी

त

तक़सीर=ग़ल्ती

तक़वा=ताक़त

तक़ी=परहेज़गार

तख्त=तड़कना; फटना
 तशय्यीर होना=बदलना
 तगवगी=वेचैनी
 तगटे=शाल दुशाले
 तजल्ली=नूर; चमक
 तदाँते=तदा ते; उस समय से
 तफ़्हुस=(अरबी) खोज
 तवर=कुल्हाड़ी
 तरावत=तरावट
 तराट उठना=बज उठना
 तशरीफ़=बादशाह की ओर से इनाम
 के रूप में प्राप्त लिवास
 तलमल होना=घबराना
 तवक्कल=(अरबी) भरोसा
 तहय्यात=दुआ के शब्द
 तहसील करना=प्राप्त करना
 तालिअ=ढूँढ़नेवाले
 तालेक्की=बड़ी किस्मत
 तिर्जग=त्रिजग; तीनों लोक
 तुज=तुम; तुम्हारे
 तुन्द होना=(फ़ारसी) गुस्से में आना
 तुनक तार होना=तार जैसा दुबला
 पतला होना
 तूर=एक विशेष पहाड़; जिस पर खुदा ने
 अपना नूर गिराया; जिसे देख
 'मूसा' बेहोश हो गए
 थ
 थोबड़ा=जबड़ा
 द
 दन्दे=द्वन्द रखनेवाले; दुश्मन
 दबीर=मुन्शी; लेखक
 दम पकड़ना=सब्र करना
 दरहम होना=गुस्से में आना, तितर-
 बितर होना

दरेजे सूँ=रंज और ग़म से
 दरियाए कुलजुम=लाल समुद्र
 दर्मन=दवा
 दाट=(मराठी) अत्यन्त अधिकता से
 दाना पानी सटना=भूख-प्यास बन्द होना
 दानिशवरी=अकलमन्दी
 दार=द्वार
 दावरी=बादशाहत
 दिपाना=दीप्त करना; प्रकाशित करना
 दिलगीर=रंजीदा; दुखी
 बिल को जमा रखना=मन को चैन से रखना
 दिल को उताले के हात देना=उतावला
 होना; वेचैन होना
 दिवाल पाया=एक योनि विशेष; जिनके
 हाथ पैर में हड्डियाँ नहीं होतीं
 ये ज़मीन पर सरकते या लुढ़कते
 हुए चलते हैं।

दीस=दिवस; दिन
 दुबाल=पीछे; साथ
 दुराही=हुकूमत
 दुरूनी में=भीतर ही भीतर
 दुर्ज=रख रखने की डिबिया
 देवतियाँ=दीवट
 दोतारा=एक दो तारोंवाला बाजा विशेष
 दोस्त दारों-साथी मित्र

ध

धरतरी=धरित्री; पृथ्वी
 धाहया=दौड़ा
 धावें=धाम; घर
 धुन्दना=ढूँढ़ना
 धुलाराब=वंडर

न

नब्याँ=नबी का बहुवचन
 नवल आसिम=मिश्र के बादशाह का नाम

नवल लाल=सुन्दर; यहाँ पर इमाम हुसेन
के लिए प्रयुक्त है

न्हाटना=भागना

न्हासना=भागना

नामाँ=पत्र

निभाना=गौर से देखना

निढाल होना=शक्तिहीन होना

निदा=नाद; शब्द

निहंगाँ=मगर; पानी का एक जानवर

नीश=नशतर

नुकुल=शराब पीते समय खाने के लिए
इस्तेमाल की जानेवाली चीज़ें

जुजुम्याँ=ज्योतिषी

नुसरत=खुदा की मेहनती

नेकोकार=अच्छा काम करनेवाला

नेरवा नावँ=अच्छा नाम

नेट=दोस्त

नौ गढ़=इस्लाम के अनुसार आसमान के
६ खण्ड

नौबताँ=बारी बारी से

प

पछुन्या=पहचाना

पड़ लंका=लंका से भी और आगे

पतियाना=भरोसा करना, विश्वास करना

पनज=पैदाइश में

पन्त=पन्थ, रास्ता

पया पै=लगातार

परधान=प्रधान

परा=परी का पुरुषवाची शब्द

पशेमान होना=परेशान होना

पागाह=अस्तबल

पाड़ना=(मराठी) निकालना

पारचा=कपड़ा

पिनान=पिन्हाय, पहना कर

पिन्हा=अप्रत्यक्ष

पेच के मारकाँ=मुसीबतों की लड़ाई

पोथे=पर से

फ

फगफूर=चीन का बादशाह

फजीलत=बुजुर्गी, महत्व

फरह बरूश=खुशी देनेवाला

फरह के घराँ=खुशी के घर, अत्यन्त खुशी
देनेवाले

फरंग्याँ=तलवार

फरंगटाज़=सिपाही

फगमोश करना=भूल जाना

फराख=चौड़े

फरियाद रस=खुदा

फसाहत=शायरी

फाड़=पहाड़

फाल=जन्म पत्री

फामना=ज्ञात करना

फितने के मूँदे किवाड़ ग्योलता=लड़ाई

भगड़े के बन्द दरवाज़ ग्योलना,

लड़ाई शुरू करना

फिगसत=बुद्धिमान

फुरसत लेना=जाने की आज्ञा लेना

फैज़=कृपा

ब

बरूतवर=भाग्यवान

बज्रतर=विभिन्न प्रकार के बाजे

बज्राँ=बादशाज़ाँ (फारसी); उसके बाद

बज़्रिद=कौशिश के साथ

बज्म=सभा

बन्दा नवाज़=दक्षिण के एक बड़े फ़कीर;

जिनकी समाधि गुलबर्गा

में है

बन्दगी का खत देना=गुलामी करना

बरश गाल=वर्षा काल
 बर जमीं=जमीन पर
 बरहम होना=क्रोध में आना
 बलन्द धावें=ऊँचा धाम; ऊँची जगह; मन
 की ऊँची स्थिति

बशर=आदमी
 बस्त=वस्तु; चीज़
 बहरोबर=समुद्र व पृथ्वी
 बहुराना=लौटाना
 बाँ=बाण; तीर
 बाग=बाघ; शेर
 बाग के वर्ग का=बाघ के वर्ग का; शेर
 की तरह बहादुर

बाट सारू होना=रास्ता तय करना
 बादपा=तेज़ घोड़ा
 बाँदर के धात=बन्दरों की तरह
 बदिये=मशक; चमड़े का थैला; जिससे
 भिस्ती पानी भरते हैं

बारा=हवा
 बाव भया=वायु चली; हवा बही
 बुरगामौ=एक खास तरह का बाजा, जिसकी
 आवाज़ बड़ी तेज़ होती है

बेगीकर=वेग से; शीघ्रता से
 बेबदल=जिसकी बराबरी का कोई न हो
 बैताँ=शेर; कविता

भ

भड़ज=भाड़ में; दुःख की आग में
 जलनेवाला
 भरोसा सटना=आशा खतम होना
 भंगार=भीषण शब्द
 भँजन=भंजन; टूटना; यहाँ दुःख दूर
 होने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है
 भान=बहन
 भार=शक्ति; सेना

भार पड़=बाहर पड़; बाहर निकल
 भाये=रँभाये; गाय की तरह बोलना
 भाँच=कलश
 भोगुनी=बहुगुणी; अधिक गुणवाला
 भोत=बहुत

म

मक्रबूल=प्राप्ति; बहुत ही प्रसिद्ध
 मक्र=मकर; घोखा
 मक्की=मक्का का रहनेवाला
 मक्रसुद=उद्देश्य; इवाहिश
 मक्रबूल=सुन्दर
 मखा=मक्का
 मग़ज़=बादाम के भीतर का बीज
 मज़कूर होना=कहा जाना
 मजलिस भरना=दरबार या सभा में बैठना
 मजाज़ी=भूठा
 मता हो=मस्त हो
 मद्ह=तारीफ़
 मंदीर=मन्दिर; महल
 मनै=में
 मनक़ेबत=फ़कीर और महात्माओं की
 तारीफ़

मनौवर=रौशान
 म्याने म्यान=बीचो बीच
 मरग़ोलना=चहचहाना; पक्षियों का बोलना
 मलायक=फ़रिश्ते
 मरातिब=मर्तवा; शान
 मर्गज़ार=चरागाह
 मलूक=दुःखी
 मवादा=कहीं ऐसा न हो
 मसीहा=ईसा मसीह; इनके सम्बन्ध में
 विश्वास है कि ये मुद्दों को जीवित
 कर देते थे
 मामूर=आबाद; भरा हुआ

मावली=बूढ़ी औरत
 माह=चाँद
 माहूरयाँ=चन्द्रमा के समान सुन्दर स्त्रियाँ
 माहियाँ=माही (फ़ारसी); मछली
 माँदा करना=थका देना
 माँदगी=थकावट
 मिनकार=(फ़ारसी); चोंच
 मुकल्लल ज़रीनाँ=ज़री का काम किया हुआ कपड़ा
 मुक़बिलाँ=भक्त
 मुजरद=अकेला हो जाना
 मुंडी=सर
 मुरस्सा=हीरे जवाहिरात जुड़े हुए
 मुतरिबाना=मुतरिब का बहुवचन; गानेवाले
 मुदाम=सर्वदा
 मुद्दुआ=अभिलाषा
 मुनाजात=प्रार्थना
 मुन्तदी=जिसने किसी काम को सीखना प्रारंभ किया हो
 मुन्तही=पारंगत; जिसने किसी काम को अच्छी तरह सीख लिया हो
 मुरसिल=रसूल; खुदा का संदेश पहुँचानेवाला
 मुवल्लक=लटका हुआ
 मुश्तरी=एक तारा विशेष; जो बहुत ही चमकदार
 मुही उद्दीनियाँ=मुहीउद्दीन के अनुगामी
 मेराज=यह विश्वास है कि मुहम्मद साहब खुदा के पास गए और सातों आसमान की सैर करके वापिस आ गए। मुहम्मद साहब का यह पूरा काम 'मेराज' कहलाता है
 मेहतरी=बड़े लोग
 मेह्र=सूर्य; प्रेम

मोअम्मा=समस्या; कठिनाई
 मोअत दिल=सम शीतोष्ण जलवायु
 मौज=लहर
 मौजज्याँ=करामात
 य
 याकूत=लाल रंग का हीरा
 र
 रज्म=लड़ाई
 रयन=रैन; रात
 रया=उचित
 रावं=रव करें; बोलें
 रीश=जश्म
 रुखसार=गाल
 रुच साजना=रुचि के साथ सजाना
 रेवाज=इज्जत
 रोशन ज़मीर=दिल की बातों को जाननेवाले
 रौज़न=सुराख
 रौशन सिफ़ात=विशेषताएँ रखनेवाला
 ल
 लसड़ी=रस्सी
 लौह=स्लेट
 च
 वजाहत=ऊपर देखने से
 वालग=वहाँ तक
 विते=उतने ही
 विर्द=विरुद, यश
 वैताग मेस=ऐसा वेश या ढङ्ग जो मुसीबतों से भरा हुआ है।
 श
 शगुफ़ता किया=खुश किया
 शहाद=एक बादशाह का नाम, जिसने दुनियाँ में जन्नत बनाई थी।
 शफ़क़=प्रातः एवं सायंकालीन आकाश की लालिमा

शफककृत=मेहरबानी
 शहपाल=एक बादशाह का नाम
 शहरेयार=बादशाह
 शादमानी=खुशी
 शादमानी सटना=खुशी समाप्त होना
 शाहिद=गवाह
 शिगाल=(फारसी) भेड़िया
 शिताब=जल्दी
 शिहत=मुसीबत
 शुजाअत=बहादुरी

स

सकसार=आदमी का हाथ पैर रखनेवाली
 और कुत्तों का मुँह रखनेवाली
 योनि विशेष

सके=मिस्त्री
 सगल=(मराठी) सब
 सड़ी बोई=बदबू
 सट्टे=फैंक दें
 सना=तारीफ़
 सफ़ा दरसफ़ा=क़तार की क़तार
 सफ़ादार=साफ़ सुथरा
 समर=नतीजा
 समदूर=समुद्र
 सरगुरू=बड़ा दर्जा रखनेवाले
 सरांदील=सिंहल, लंका
 सरे=मुनासिब, उचित
 सर्वे आज़ाद=(फारसी) आशिक़
 सहरगाह=सुबह का समय
 संगतन=सखी
 सँपड़ना=(मराठी) प्राप्त होना
 सात=साअत (अरबी) समय
 सारकी=सरीखी, समान
 साहब ज़मील=बहुत ही खूब सूरत
 सिद्क़ सातै=सच्चे दिल से

सिर ते साफ़ी देना=नए सिर से साफ़
 करना

सिलहदार=सन्तरी, पहरेदार
 सिरते=नए सिर से
 सुगड़=सुन्दर
 सुते=सोये
 सुबुल्लाँ=एक विशेष प्रकार की घास, जो
 धुँधुराले बालों के समान
 होती है।

सुरय्या=एक तारे का नाम
 सुलक्खन=सुलक्षण, अच्छे लक्षणोंवाली
 सुलेमान=इस्लाम के एक पैग़म्बर,
 जिनका ताख़्त बड़ा मशहूर
 है। कहा जाता है कि हज़रत
 सुलेमान जहाँ जाते थे, जिन
 और परी उसे ले जाते थे
 क्योंकि वे उनकी रियाया थे।

सूर=चमक; खुशी
 सूरये यासीन=क़ुरान का एक अध्याय
 सूरत=वाक्य
 सूसना=सहना; बरदाश्त करना
 सेह=जादू
 मो रात करना=लालच में आना
 सौरात=ख़्वाहिश

ह

हक़यावरी=सच्ची मदद
 हत्ती=हाथी
 हठीला=हठीला
 हम्द=ईश्वर की स्तुति
 हमायल नमन=हार के जैसा
 हर तरीफ़=हर तरह
 हयान=जीवन
 हल्का होना=चारों तरफ़ से घेरा डालना
 हशम=शान और क़त वाले

हाजिब=दूत

हात पाँव कलाना=हाथ पाँव चलाना;
कोशिश करना

हाथ दौड़ाना=हाथ चलाना

हाँड़ी पकाना=ख़याली पुलाव पकाना;
अत्यधिक कल्पनाएँ करना

हिजाबत=मंदेश

हुचकरना=हेच करना; नीचा दिखाना

हुवेदा=प्रकट होना

हेजदा हज़ार=अठारह हज़ार

हैबक ज़दा होना=बहुत अधिक डरना

होड़ी=नाव

हौलनाक तफ़रका=दुःखदायी अलगाव

